ये आदमी ये चूहे

(उपन्यास)

अनुवादक

उपेन्द्रनाथ अश्क

नीलाभ प्रकाशन गृह

धरती विहीन किसान मज़दूरों के नाम
जो जड़ से कटी पपोली की भांति इधर
उधर भटकते फिरते हैं और एक बार
उखड़ कर फिर जम नहीं पाते।

उपन्यास के सम्बंध में

स्टीन बैक का उपन्यास मैं इस समय तक पांच-छै बार तक पढ़ चुका हूँ। दो बार अपनी इच्छा से और शेष तीन-चार बार परिस्थिति वश और मुझे यह कहने में संकोच नहीं कि छोटा होने पर भी यह एक महान् उपन्यास है। पहली बार को छोड़ कर मैंने जब जब इसे पढ़ा, मुझे इसमें नये अर्थ और इसीलिए नया रस मिला।

बम्बई के फ़िल्मी जीवन में जब पैसे की तंगी न रही, बल्कि आवश्यकता से कुछ अधिक ही आने लगा तो मैंने चार-पांच सौ रुपये की पुस्तकें एक साथ ख़रीद कर रख लीं। उस समय तो अवकाश न था, पर सोचा कि हो सकता है जब अवकाश हो तो पैसे न हों और मेरा विचार ठीक निकला। फ़िल्मी जीवन छोड़ते ही मैं बीमार पड़ गया और डेढ़ साल पंचगनी में बन्दी-सा पड़ा रहा। बीमारी के कारण

दिन-प्रति-दिन पैसे की तंगी होती गयी और अवकाश बढ़ता गया। तभी मैंने स्टीन बैक के अन्य उपन्यासों के साथ यह उपन्यास भी पढ़ा। मुझे याद है, पढ़ कर कुछ असंतोष से मैंने इसे एक ओर फेंक दिया।

इस उपन्यास की मैंने बड़ी प्रशंसा सुनी थी। इसका फ़िल्म भी बना है और बहुत लोक-प्रिय हुआ है। स्टीन बैक के उपन्यासों में इसे एक विशिष्ठ स्थान प्राप्त है। यही वह उपन्यास है, जिसने उन्हें पहले पहल न केवल अमरीका, वरन् संसार के सर्व-श्रेष्ठ उपन्यासकारों की पंक्ति में ला खड़ा किया। किन्तु पहली बार सरसरी दृष्टि से पढ़ने पर मुझे निराशा हुई। अथवा यों कहा जाय कि मैंने इससे जो आशा बांध रखी थी, वह पूरी न हुई।

लेकिन इसमें कुछ ऐसी बात थी जो बाद के दिनों में बार-बार मुझे इस उपन्यास की याद दिलाती रही। लैनी की मन्दबुद्धि और उसका दुष्परिणाम अथवा जार्ज का नपुंसक क्रोध; कर्ली का हीनभाव अथवा उसकी पत्नी की उच्छृंखलता; या फिर एक मंद-बुद्धि नीम पागल का अपूर्व चरित्र चित्रण—न जाने क्या बात थी जो बार-बार मुझे इस उपन्यास के विचित्र; पर सहसा झटके से टूट जाने वाली माला के से, कथानक की याद दिलती रही।

इसे फिर उस समय तक नहीं पढ़ सका जब तक इलाहाबाद में पांच छः महीने दर-ब-दर ठोकरें खाने के बाद, मुझे अपना मकान नहीं मिल गया और मेरी पुस्तकें ठीक तरह (जितना कि इस ख़ानाबदोशी के जीवन में सम्भव था) क़रीने से नहीं लग गयीं।

एक दिन लिखते-लिखते न जाने मुझे किस पुस्तक की आवश्यकता पड़ी, मैं रैक में उसे ढूँढने चला गया। उस पुस्तक को ढूँढते ढूँढते

मेरे हाथ में स्टीन बैक का यही उपन्यास पड़ गया। योंही उठा कर मैंने इसे बीच से देखा और इसे ही लिए हुए लौट आया और खत्म करके ही मैंने इसे छोड़ा।

इस बार मुझे यह पहले से अच्छा लगा। कुछ इस लिए कि अमरीकी देहाती भाषा, जो पहली बार, सरसरी दृष्टि से पढ़ने में, मेरी समझ में उतनी न आयी थी, दूसरी बार पढ़ने पर कुछ अधिक समझ में आयी, इस लिए अधिक रस मिला। इसके संक्षिप्त सम्वादों में जो गहरे मनोभाव छिपे हैं, वे भी एक ही दृष्टि में पूरे समझ में नहीं आते। फिर मुझे यह भी लगा कि यह ट्रेजेडी यदि उस जड़मति और मन्द बुद्धि वाले नीम-पागल लैनी की है तो उसे गोली का निशाना बनाने वाले उसके परम मित्र जार्ज की भी कम नहीं, जिसका सुन्दर स्वप्न सहसा उस आकस्मिक घटना से छिन्न भिन्न हो गया। अपने बच्चे का गला अपने हाथों घोंटने में जितना दुख मां को हो सकता है, उतना ही दुख लैनी को गोली का निशाना बनाते समय जार्ज को हुआ होगा।

तभी मेरी इच्छा हुई कि यदि यह उपन्यास हिन्दी में हो जाय तो कितना अच्छा हो। यह इच्छा किन उलझनों से गुजर कर पूरी हुई है, यह विषय कष्टकर भी है और दुखद भी, पर मुझे प्रसन्नता यही है कि आज यह पाठकों के सम्मुख उपस्थित है।

उपन्यास के अनुवाद और छपायी के दौरान में मुझे इसे तीन-चार बार और पढ़ने का अवसर मिला और मैं सच कहता हूँ कि मेरा मन इतनी बार पढ़ने पर भी नहीं ऊबा और हर बार मुझे इसमें नया रस और नये अर्थ मिले।

पहले मैंने इसे भाग्यवादी टाइप का उपन्यास समझा था। भाई

शमशेर बहादुर सिंह ने भी इसका सुन्दर आवरण-चित्र बनाते हुए उस अनजानी शक्ति का आभास दिलाया है, जो हमारे जीवन की अनबूझी उलझनों की प्रतीक हैं। जिसे हम संयोग, नियति, अथवा भाग्य के नाम से पुकारते हैं। उपन्यास पढ़ते-पढ़ते (और पढ़ने के दाद भी) बार-बार यह ख्याल आता है कि यदि कर्ली की बीवी वहाँ न आ जाती तो लैनी अपने मित्र ही के हाथों यों चूहे की मौत न मरता; कि यदि वह वहाँ न होती तो तीनों पर्याप्त धन इकट्ठा कर लेते और अपने सपनों को सत्य बनाकर छोटी सी जमीन खरीद लेते और जार्ज, कैंडी, क्रुक्स और लैनी —सभी धरती-हीन बेचारे—वहाँ सुख और स्वाभिमान का जीवन बिताते। किन्तु क्रूर नियति ने कर्ली की बीवी को उनके मार्ग में ला फेंका और उनके वे सुख-स्वप्न छिन्न-भिन्न हो गये। सोचते-सोचते हृदय से एक दीर्घ-विश्वास निकल आता है और उस नियति के सामने हम अपने को बड़ा ही विवश और लाचार पाते हैं।

किन्तु अनुवाद करते और प्रूफ पढ़ते समय बार-बार जब मैंने इसे पढ़ा तो, उपन्यास की यह भावना मुझे गौण दिखायी दी। लगा कि उपन्यासकार ने नियति के सामने मानव की विवशता दिखाने को यह उपन्यास नहीं लिखा, बल्कि पूँजी वादी समाज में (जहाँ चन्द लोगों ने उपज के साधनों पर अधिकार जमा रखा है) धरती-विहीन श्रमिकों की दुर्दशा, हवा के रुख पर इधर-उधर भटकती, जड़ से उखड़ी हुई पपोली के से उनके जीवन और उस जीवन की विच्छिप्ति (*Frustration*) दर्शाने के लिए ही इसका सृजन किया है। यही इसका आधार-भूत विचार है। जार्ज, लैनी, कैंडी क्रुक्स और उन जैसे हज़ारों धरती से उखड़े हुए श्रमिक किस तरह एक से दूसरे बाड़े में भटकते हैं

पर कहीं जम नहीं पाते; किस तरह अपनी विच्छित्ति और ऊबाहट के हाथों तंग आकर अपने खून-पसीने की कमाई जुए-घरों और चकलों में गँवाते हैं और जब बूढ़े हो जाते हैं तो किस प्रकार उनके भाग्य में खुजली मारे बुड्ढे अपाहिज कुत्ते की तरह मरना रह जाता है—यह सब उपन्यासकार ने अपने इस उपन्यास में इस तरह चित्रित किया है कि मन पर अमिट असर छोड़ जाता है। और फिर उनकी साध—कितनी छोटी सी उनकी साध है! एक छोटा सा जमीन का टुकड़ा जिसे वे अपना कह सकें; जिस पर से उन्हें कोई न निकाल सके; जिसकी हरी भरी फसल उनकी अपनी कोठी में जाय— इस धरती के टुकड़े पर एक नन्हीं सी झोंपड़ी; एक आध गाय बकरी, चंद मुर्गियाँ और दो चार सुअर.....! किन्तु जीवन भर दूसरों के लिए फसलें उगाने, काटने, कूटने और ढोने के बावजूद वे अपनी यह नन्हीं सी साध पूरी नहीं कर पाते और तभी उस समाज के प्रति, जो हजारों लाखों किसान-मजदूरों को इस बुरी दशा में रखता है, एक दुर्द्धर्ष क्रोध मन में उमड़ आता है और यहीं उपन्यासकार की सफलता और महानता है।

रूस के प्रसिद्ध उपन्यासकार इल्या अहरेन-बर्ग ने "मासेज़ एंड मेन स्ट्रीम" के जून अंक में इसकी 'गहराई' की प्रशंसा की है जो इस बात का प्रमाण है कि यह नियति की क्रूरता को नहीं, वरन् पूंजीवादी व्यवस्था की क्रूरता को लेकर लिखा गया है।

अमरीका में अमीरों की बात तो दूर, साधारण नौकरों के पास भी कारें हैं, सुन्दर हवादार घर तथा सुख-सुविधा के सभी साधन हैं, इस मतलब के वक्तव्य आये दिन हमारे पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते हैं।

स्टीन बैक का यह उपन्यास ऐसे वक्तव्य देने वाले नेताओं और पत्रकारों के मुँह पर एक करारी चपत है।

हमारे धरती-विहीन किसान मज़दूरों की समस्याएँ और साधें अपने अमरीकी भाइयों से अधिक भिन्न नहीं। इसलिए मुझे यह आशा है कि हिन्दी में यह उपन्यास उतनी ही दिलचस्पी से पढ़ा जायगा जिस दिलचस्पी से अमरीका में पढ़ा गया है।

अमरीकी देहाती शब्दों के अनुवाद में बड़ी दिक़्क़त हुई। भाई नेमिचन्द्र जैन और दूसरे मित्रों का मैं आभारी हूँ, जिन्होंने अनुवाद में मेरी बड़ी सहायता की। भाई भैरव प्रसाद गुप्त और नेमि चन्द्र जैन मेरे आभार के और भी अधिकारी हैं। उनका सक्रिय सहयोग यदि मुझे प्राप्त न होता, तो मैं स्वयं कभी उपन्यास को हाथ न लगा पाता। आशा है हिन्दी-भाषा-भाषी इसे पढ़ने में वह कठिनाई महसूस न करेंगे, जो भारतीय पाठकों को अंग्रेजी उपन्यास पढ़ने में होती है और वे पूरी तरह इसका रसास्वादन कर पायेंगे। आवश्यकता पड़ने पर मैंने भावार्थ देने और बात को समझाने के लिए दो-चार वाक्य बढ़ाने से संकोच नहीं किया, ताकि हिन्दी भाषियों के लिए उपन्यास की संक्षिप्त शैली दुरूह हो कर न रह जाय।

भाई शमशेर बहादुर सिंह कुशल लेखक और आलोचक ही नहीं, बड़े अनुभूतिशील कवि और कुशल चित्रकार भी हैं—यह बात पुस्तक के आवरण-चित्र से स्पष्ट है। उपन्यास की आधार भूत भावनाओं को रेखाओं द्वारा व्यक्त करने में उन्हों ने जो सहायता की है उसके लिए मैं उनका अनुगृहीत हूँ।

२२-६-५०

उपेन्द्रनाथ अश्क

ये आदमी ये चूहे

एक

सोलेदाद के दक्खिन में कुछ मील दूर, सैलीनास नदी पहाड़ी के पास आकर बहने लगती है और उसका पानी एक संकरे गड़े के कारण और भी हरा हो जाता है। इस पानी में कुछ गर्मी भी होती है, क्योंकि इस गहराई तक पहुँचने से पहले वह पीली बालू के ऊपर, धूप में चमचमाता हुआ, बह कर आता है। नदी के एक ओर सुनहले निचले ढाल चक्कर खाते हुए, विराट पथरीले 'गैबीलन' पहाड़ों में खो जाते हैं, पर घाटी की ओर नदी के किनारे-किनारे पेड़ों की पंक्तियाँ दूर तक चली गयी हैं। उन में, हर बसंत के मौसम में हरे भरे और ताज़ा हो उठने वाले, सरई के पेड़ हैं जो अपनी पत्तियों के निचले सिरों के पीछे शीत-काल की बाढ़ का कूड़ा-करकट छिपाये रहते हैं। उनमें झुके हुए

चितकबरे, सफ़ेद तने वाले मिस्री अंजीरों के पेड़ भी हैं जिनकी डालियों से नदी की धारा के ऊपर महराब-सी बन गयी है। रेतीले किनारे पर पेड़ों के नीचे गिरी सूखी पत्तियों की मोटी तह बिछी रहती है जो इतनी करारी होती हैं कि गिरगिट तक के दौड़ने से बड़े ज़ोर से सरसरा उठती हैं। शाम के वक्त बालू पर बैठने के लिए खरगोश झाड़ियों में से निकल आते हैं और भीगी समतल रेतीली ज़मीन रात को रेंगने वाले कीड़ों, बाड़ों पर रहने वाले कुत्तों के गद्देदार पंजों और अँधेरे में पानी पीने के लिए आने वाले हिरनों के फटे हुए खुरों के निशानों से भरी रहती है।

सरई और मिस्री अंजीर के पेड़ों के बीच से एक रास्ता है, जिसे निकट के बाड़े से इस गहरे पानी में तैरने को आने वाले लड़कों ने बना डाला है। बहुत-से इधर-उधर भटकने वाले बेघरबार लोग शाम को, पास की बड़ी सड़क से टहलते-टहलते, आकर पानी के पास इकट्ठे हो जाते हैं। उनके पैरों से भी यह रास्ता बन गया है। एक दैत्याकार अंजीर के पेड़ के नीचे बहुत बार जलायी गयी आग की राख का ढेर लग गया है। पेड़ का तना लगातार लोगों के बैठने के कारण चिकना हो गया है।

गर्मी के दिनों में एक साँझ को धीमी-सी हवा पत्तियों के बीच सरसरा उठी। छाया पहाड़ियों की चोटी पर चढ़ी जा रही थी। बालू के किनारों पर खरगोश ऐसे शाँत बैठे थे मानो भूरे पत्थर से खुदे हुए हों। तभी बड़ी सड़क की ओर से अंजीर की करारी पत्तियों पर किसी के चलने की आवाज़ आयी। चुपचाप ख़रगोश छिपने के लिए भागे। अपनी लंबी टाँगों पर खड़ा बगुला ज़ोर से हवा में उड़ा और फिर नदी

में कूद पड़ा। क्षण भर के लिए वह जगह निर्जीव-सी हो गयी और तब दो आदमी रास्ते से निकले और हरे पानी के गड़े के पास की खुली जगह में आ गये।

वे रास्ते पर एक दूसरे के पीछे-पीछे चले आ रहे थे और अब खुले में आकर भी एक दूसरे के पीछे पीछे चल रहे थे। दोनों रंगीन ट्विल के कोट-पतलून पहने थे। उनके कोट के बटन पीतल के थे। दोनों काले रंग के मुड़े पिचके टोप लगाये थे और दोनों के कंधों पर कस-कर लपेटे हुए कम्बल लटक रहे थे। पहला आदमी क़द से छोटा और तेज़ था। उसका चेहरा काला, नुकीला और मज़बूत था; आँखें चंचल थीं और उसका प्रत्येक अंग सांचे में ढला हुआ सा था! छोटे-छोटे मज़बूत हाथ, पतली बाहें, पतली और हड्डीदार नाक। उसके पीछे आने वाला व्यक्ति उसका ठीक उलटा था—बड़ा भारी डील-डौल, ऊबड़-खाबड़ चेहरा, बड़ी-बड़ी फीकी-सी आँखें और चौड़े ढालू कंधे। वह भारी क़दम रखता चलता था—पैरों को थोड़ा घसीटता हुआ-सा, जैसे रीछ अपने पंजों को घसीटता है। उसकी बाहें उसके चलने के साथ-साथ आगे-पीछे नहीं होती थी, बल्कि बेजान-सी लटक रही थीं।

पहला आदमी खुले में आकर एकाएक रुक गया और उसके पीछे आने वाला उससे टकराते टकराते बचा। उसने अपना टोप उतारा, तर्जनी से पसीना पोंछा और झटक कर बूँदों को गिरा दिया। उसके भारी-भरकम साथी ने अपने कंधे से लटकते बंडल को गिरा दिया और औंधा लेट, हरे पानी की सतह से मुँह लगाकर पानी पीने लगा। वह लंबे-लंबे घूँट ले रहा था, घोड़े की भाँति पानी में नाक से आवाज़ करते हुए। छोटा आदमी परेशान-सा उसकी ओर बढ़ा।

"लैनी !" उसने तेज़ी से कहा, "लैनी, ईश्वर के लिए इतना पानी मत पियो।" लैनी पानी में हिनहिनाता रहा। छोटे आदमी ने झुककर उसे कंधा पकड़ कर झकझोरा। "लैनी, तुम कल रात की तरह फिर बीमार पड़ोगे !"

लैनी अपना समूचा सिर, टोप समेत, एक बार पानी में डुबा कर किनारे पर बैठ गया। पानी उसके टोप से नीले कोट पर और पीछे पीठपर टपकता रहा। "कैसा अच्छा है !" वह बोला, "थोड़ा-सा तुम भी पीलो जार्ज, अच्छी तरह से पीलो !" वह आनन्द से मुस्करा उठा।

जार्ज ने भी अपनी गठरी कंधे से उतारी और धीरे से किनारे पर रख दी। "जाने कैसा पानी है ?" वह बोला, "बड़ा गंदा-सा लगता है !"

लैनी ने अपना बड़ा-सा पंजा पानी में डुबोया और उँगलियों को नचाने लगा जिससे पानी के छींटे उड़ने लगे। पानी में गोल लहरें बड़ी होती-होती दूसरे किनारे तक जातीं और फिर वापस लौट आतीं। लैनी उन लहरों को देख रहा था, "देखो, जार्ज देखो, अरे ज़रा इधर इन लहरों को देखो !"

जार्ज किनारे पर बैठ गया और झुक कर अपने हाथों से जल्दी-जल्दी पानी पीने लगा। "स्वाद तो अच्छा है," वह बोला, "पर बहता हुआ तो मालूम नहीं पड़ता। बहता न हो, तो पानी कभी न पीना चाहिए, लैनी," उसने निराश भाव से कहा। "तुम्हें पयास लगे तो तुम नाली से भी पीलोगे।" वह तनिक उपेक्षा से बोला, एक चुल्लू पानी के छींटे उसने अपने मुँह पर मारे और चेहरे को,तथा ठोढ़ी के निचले और गर्दन के पिछले भाग को थाहों

से मला। तब उसने टोप ठीक से लगाया, नदी के किनारे से पीछे को और हटा और घुटनों को मोड़ कर उन्हें दोनों बाहों से दबा लिया।

लैनी जार्ज को बड़े ध्यान से देख रहा था, उसने ठीक जार्ज की नकल करने की कोशिश की। वह भी पीछे हटा और घुटनों को मोड़ कर उन्हें दोनों बाहों से दबा लिया और फिर उसने जार्ज की ओर देखा कि ठीक हुआ या नहीं। उसने अपना टोप भी जार्ज की नकल में अपनी आँखों के ऊपर ज़रा ज़्यादा खींच लिया।

जार्ज अनमना सा निर्निमेष पानी की ओर देख रहा था। उसकी आँखों के कोये सूरज की चकाचौंध के कारण लाल हो रहे थे। उसने क्रोध के स्वर में कहा, "अगर वह हरामज़ादा बस ड्राइवर बदमाशी न करता तो हम लोग बाड़े के पास तक पहुँच सकते थे। 'बस ज़रा सी दूर होगा,' कहता था। ज़रा-सी दूर! कम से कम चार मील रहा होगा, चार मील! वह उस बाड़े के पास रुकना न चाहता था और क्या। साला आलसी कहीं का। सोलेदाद के पास ठहर कर ही उसने बड़ा अहसान किया हम पर! बस में से हमें निकाल कर कहता है, 'बस ज़रा सी दूर'—हरामज़ादा! मैं शर्त बद सकता हूँ, चार मील से भी ज़्यादा होगा। ओह कितनी गर्मी है।"

लैनी सहमा-सा उसकी ओर देखकर बोला, "जार्ज?"

"हां, क्या है?"

"हम कहां जा रहे हैं, जार्ज?"

छोटे आदमी ने एक झटके के साथ अपने टोप का किनारा नीचा किया और लैनी पर बरस पड़ा। "अच्छा, तुम भूल भी गये?

बताना पड़ेगा मुझे? कसम परमात्मा की, तुम भी एक ही हरामी चुग़द हो!"

"भूल गया मैं," "लैनी ने धीमे से कहा। मैंने बड़ी कोशिश की कि न भूलूं। भगवान कसम जार्ज मैंने बड़ी कोशिश की, सच!

"अच्छा, अच्छा। मैं फिर बता दूँगा। मुझे कुछ काम थोड़े ही है। बस तुम भूलते रहो और मैं बताता रहूँ, इसी में दिन ख़त्म हो और इसी से पेट भरे।

"मैंने बहुत-बहुत कोशिश की," लैनी अपराधियों के से स्वर में बोला, "पर कुछ लाभ न हुआ। खरगोशों के बारे में तो मुझे याद रहती है, जार्ज।"

"भाड़ में जायें तुम्हारे खरगोश। यदि तुम्हें कुछ याद रहता है तो बस यही खरगोश। अच्छा! अब तुम ध्यान से सुनो। और अब की बार याद रखना जिससे हमें मुसीबत में न फँसना पड़े। तुम्हें हावर्ड स्ट्रीट में, नाले में उतर कर उस ब्लैकबोर्ड के देखने की याद है?"

लैनी का मुख उल्लास से चमक उठा "हाँ-हाँ जार्ज। मुझे याद .पर...उसके बाद हमने क्या किया था? मुझे याद आता है कि कुछ लड़कियाँ उधर से निकलीं और तुमने कहा...तुमने कहा....."

"मैंने कहा ख़ाक...मेरा कहना! तुम्हें याद है हम 'मरे और रैडी' दफ्तर में गये थे और उन्होंने हमें बस के टिकट और काम के कार्ड

"ज़रूर ज़रूर। मुझे याद आ गया।" उसके हाथ जल्दी से कोट की बग़ल वाली जेबों में चले गये। उसने धीरे से कहा

"जार्ज...मेरा कार्ड तो नहीं है। ज़रूर खो गया होगा।" वह बड़ा निराश हो कर ज़मीन की ओर तकने लगा।

"तुम्हारे पास था ही कब, उल्लू कहीं के! ये रहे मेरे पास दोनों। तुम्हें दे देता मैं तुम्हारा काम का कार्ड!"

लैनी ने संतोष की साँस ली। वह मुस्कराया। मैंने...मैंने सोचा कि मैंने उसे अपनी बग़लवाली जेब में रख लिया था!" उसका हाथ फिर जेब में चला गया।

जार्ज ने तीक्ष्ण दृष्टि से उस ओर देखा "क्या है उस जेब में?"

"कुछ भी नहीं," लैनी ने चतुराई से कहा।

"मैं खूब जानता हूँ, जेब में कुछ नहीं। तुम्हारे हाथ में क्या है? तुम्हारे हाथ में? छिपा क्यों रहे हो?"

"कुछ भी नहीं है जार्ज, सच।"

"मुझ से नहीं उड़ो, लाओ इधर!"

लैनी ने अपनी बँधी मुट्ठीवाला हाथ पीछे हटा लिया "चूहा है जार्ज।"

"चूहा? जिवित?"

"नहीं मरा हुआ। मैंने इसे नहीं मारा कसम खाता हूँ। मुझे पड़ा मिल गया था। मरा पड़ा था।"

"लाओ, दो इधर!" जार्ज बोला।

इसे मेरे पास रहने दो जार्ज!"

"ला-ओ इधर!"

लैनी की बंधी हुई मुट्ठी धीरे-धीरे आगे बढ़ी। जार्ज ने चूहा लेकर

नदी से उस पार, झाड़ियों में फेंक दिया और बोला। "मरे हुए चूहे का क्या करोगे ?"

"रास्ते में चलते-चलते मैं उसे अपने अँगूठे से सहलाता !" लैनी ने उत्तर दिया।

"मेरे साथ रास्ता चलते तुम किसी चूहे को नहीं सहला सकते। याद है तुम्हें, हम लोग अब कहां जा रहे हैं ?"

लैनी घबरा गया और फिर परेशान होकर उसने अपना चेहरा घुटनों में छिपा लिया। "मैं तो फिर भूल गया।"

"हे भगवान !" जार्ज ने जैसे हार मानते हुए कहा। "अच्छा—देखो, हम लोग एक बाड़े में काम करने जा रहे हैं, जैसे बाड़े में हम उत्तर में काम करते थे।"

"उत्तर में ?"

"हां, वीड में।"

"ठीक ठीक। मुझे याद आ गया। वीड में।"

"जिस बाड़े में हम अब काम करने जा रहे हैं, वह बस दो फर्लांग दूर है। हमें अभी जाकर मालिक से मिलना है। अपने काम के कार्ड उसे मैं दूँगा, तुम कुछ न बोलना। समझे ! एक शब्द भी नहीं। तुम बस वहां खड़े रहना, चुपचाप ! नहीं यदि उसे पता चल गया कि तुम कितने खब्ती हो, नीम पागल ! तो काम-फाम हमें फिर नहीं मिलने का। पर यदि तुम्हारी बात सुनने से पहले उसने तुम्हारा काम देख लिया तो फिर मामला जम जायगा। समझ गये ?"

"समझ गया जार्ज। बिल्कुल समझ गया।"

"ठीक। अच्छा तो जब हम मालिक से मिलने जायेंगे तो तुम क्या करोगे ?"

"मैं...मैं..." लैनी सोच में पड़ गया। चिन्ता के कारण उसका माथा सिकुड़ गया। "मैं......कुछ कहूँगा नहीं। बस वहाँ खड़ा रहूँगा।"

"शाबाश ! बहुत अच्छे ! इस बात को मन-ही-मन दो तीन बार कह लो, जिससे भूल न जाओ।"

लैनी धीरे धीरे गुन-गुन करने लगा,—"मैं कुछ न कहूँगा, बस वहाँ खड़ा रहूँगा......मैं कुछ न कहूँगा, बस वहाँ खड़ा रहूँगा......मैं कुछ न कहूँगा.....।"

"ठीक," जार्ज ने कहा। "और तुम वीड की-सी कोई हरकत न करोगे ?"

"वीड की सी ?" लैनी कुछ चक्कर में पड़ गया।

"अच्छा, तो तुम वह भी भूल गये, क्यों ? अच्छी बात है, मैं अब तुम्हें उसकी याद नहीं दिलाऊँगा। कहीं तुम फिर वही कर बैठो।"

लैनी के मुख पर एकाएक ज्ञान की किरण-सी दौड़ गयी। "उन लोगों ने वीड से हमें निकाल दिया," उसने बड़ी भारी विजय के-से भाव से कहा।

"खदेड़ दिया हमें।" जार्ज ने झल्ला कर कहा। "हम भागे। वे हमारी तलाश में थे, पर हमें पकड़ न पाये।"

खुशी से लैनी की हँसी फूट पड़ी। "यह तो मैं नहीं भूला न ?"

जार्ज बालू पर चित्त लेट गया, अपने हाथ मोड़ कर उसने सिरहाने लगा लिये। लैनी ने भी उसकी नक़ल की। वह बीच-बीच में सिर उठा कर देख लेता कि कहीं वह कोई भूल तो नहीं कर रहा है।

"कितनी मुसीबत है तुम्हारे मारे," जार्ज ने कहा, "तुम्हारा पुछल्ला अगर मेरे साथ न बँधा होता तो मेरा काम कितनी आसानी से और कितनी अच्छी तरह चल जाता। मैं आराम से रहता और शायद कोई लड़की भी मिल जाती।"

क्षण भर के लिए लैनी शांत पड़ा रहा। फिर वह बड़े उत्सह से बोला, "हम लोग बाड़े में काम करेंगे न जार्ज!"

"बिल्कुल ठीक। यह तो तुम समझ गये। पर हम लोग यहीं सोयेंगे। एक कारण है।"

दिन अब जल्दी-जल्दी डूब रहा था। सूरज घाटी से जा चुका था और सिर्फ गैबीलन पहाड़ों की चोटियों पर रोशनी की लपट-सी दिखायी पड़ती थी। एक पनियल साँप पानी पर फिसलता निकल गया। उसका फन छोटे-से पैरिस्कोप* की तरह उठा हुआ था। सरकंडे धार के कारण थोड़े-थोड़े झुक जाते थे। सड़क की ओर, दूर पर एक आदमी कुछ चिल्ला उठा, और दूसरे ने उत्तर में चिल्ला कर कुछ कहा। अंजीर के पेड़ की डालियों में सरसराती हुई हलकी सी हवा उठी और ख़त्म हो गयी।

"जार्ज, हम लोग बाड़े में चल कर कुछ खा-पी क्यों न लें? वहां तो खाना मिलता है।"

---

*पैरिस्कोप=शीशे का यंत्र-विशेष जिसके द्वारा जल के भीतर से बाहर की चीजें दिखायी पड़ती हैं।

जार्ज ने करवट ली। मिलता है, पर हम नहीं जा रहे। तुम्हारे कारण नहीं। यों ही मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है। कल हम लोग काम पर चलेंगे। मैं ने रास्ते में अनाज कूटने की मशीनें देखी थीं। इसका मतलब है कि हमें अनाज झड़ाझड़ बोरी में भरना पड़ेगा। कमर टूट जायगी। आज रात को तो मैं यहाँ ऐसे ही पड़े पड़े नीले नीले आसमान को ताकता रहना चाहता हूँ। मुझे अच्छा लगता है।"

लैनी उठकर घुटनों पर बैठ गया और जार्ज की ओर देखने लगा। "खायेंगे नहीं आज कुछ ?"

"ज़रूर। यदि तुम उठकर कुछ सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कर लो! मेरी गठरी में तीन डिब्बे लोबिया के हैं। तुम आग तैयार करो। जब तुम लकड़ियां इकट्ठी कर लोगे तो मैं तुम्हें माचिस दे दूँगा। तब हम लोग लोबिया गर्म करके खा लेंगे।"

"मुझे लोबिया के साथ टमाटर की चटनी बड़ी अच्छी लगती है।" लैनी ने कहा।

"तुम्हें अच्छी लगती है, पर हमारे पास है नहीं। अब उठो और जाकर लकड़ियां बीन लाओ। देखो बेकार इधर उधर मटरगश्ती मत करना। अँधेरा होने में देर नहीं है।"

लैनी उठकर झाड़ियों में ग़ायब हो गया। जार्ज जहाँ था, वहीं पड़ा रहा और हलके-हलके सीटी बजाने लगा। जिधर लैनी गया था, उधर से नदी के ऊपर 'छप' 'छप' की आवाज़ आयी। जार्ज ने सीटी बजाना बंद कर दिया और कान लगाकर सुनने की कोशिश की। "बेचारा," उसने धीमे से कहा और फिर सीटी बजाने लगा।

थोड़ी ही देर में लैनी झाड़ी को खोदता कुचलता वापस आगया। उसके हाथ में एक पतली सी सरई की लकड़ी थी। जार्ज उठ कर बैठ गया। "ठीक है," उसने रुखाई से कहा, "लाओ, वह चूहा मुझे दो!"

लैनी ने भोलेपन का नाटक करते हुए आँखे फाड़ दीं—"कैसा चूहा जार्ज? मेरे पास तो कोई चूहा नहीं है।"

जार्ज ने अपना हाथ बढ़ाया। "लाओ, लाओ, दो मुझे! छिपाओ मत मुझसे।"

लैनी हिचकिचाया, पीछे हटा और उसने विद्रोह के-से भाव से झाड़ियों की ओर ताका, मानो वह इस बंधन से मुक्त हो कर भाग जाने का विचार कर रहा हो। जार्ज ने कर्कश रूखे स्वर में कहा, "दे रहे हो मुझे चूहा, या फिर तुम्हारी मुरम्मत करूँ मैं!"

"क्या दूँ मैं तुम्हें जार्ज!" लैनी की मासूमियत जैसे हारने का नाम ही न लेती थी।

दो बुरे का सिर। तुम अच्छी तरह जानते हो मैं क्या मांग रहा हूँ। लाओ मुझे वह चूहा दो!"

बड़ी अनिच्छापूर्वक लैनी ने अपना हाथ जेब में डाला। उसका गला थोड़ा सा भर आया। "मालूम नहीं तुम मुझे क्यों इसे नहीं रखने देते। यह तो किसी और का चूहा नहीं है। मैंने इसे चुराया नहीं है। मुझे यह सड़क के किनारे पड़ा मिला था"।

जार्ज का हाथ उसी आदेश-पूर्ण ढंग से आगे बढ़ा रहा। धीरे-धीरे उस टैरियर कुत्ते की भाँति जो लाया हुआ गेंद अपने स्वामी को नहीं देना चाहता, लैनी आगे बढ़ा, पीछे हटा, और फिर आगे बढ़ा। जार्ज

ने अपनी उँगलियाँ झटके के साथ चटखायीं, और उसकी आवाज़ सुन कर लैनी ने चूहा उसके हाथों में रख दिया।

"मैं इसको लेकर कोई ऐसा बुरा काम तो न कर रहा था जार्ज। बस सहला रहा था।"

जार्ज उठा। उसने पूरे ज़ोर से चूहे को क्षण-क्षण अँधेरे में लुप्त होने वाली झाड़ियों में फेंक दिया और तब उसने झुक कर पानी में अपने हाथ धो डाले। "बौड़म कहीं के, तुम्हें यह भी अक्ल नहीं है, मैं तुम्हारे भीगे हुए पैर देख कर पहचान गया कि तुम नदी के पार उसे लाने गये थे?" और वह कहते हुए उसने गीले हाथ मुँह पर फेर लिये।

तभी उसने लैनी के सिसकने की आवाज़ सुनी और घूमकर बोला "दूध पीते बच्चे की तरह सिसक रहे हो! इतने बड़े होकर!"

लैनी के ओठ काँप रहे थे और उसकी आँखों में आँसू छलक आये थे। "लैनी!" जार्ज ने अपना हाथ लैनी के कंधे पर रख दिया। "लैनी" उस ने उसके कंधे को ज़रा सा थपथपाया, "मुझे तुम से कोई बैर नहीं, वह चूहा सड़ गया था। सहलाते-सहलाते तुमने उसका कचूमर निकाल दिया था। तुम कोई ताज़ा मरा ले आओ, उसे तुम थोड़ी देर तक रख लेना अपने पास।"

लैनी ज़मीन पर बैठ गया और उसने बड़े हताश भाव से अपना सिर लटका लिया। "क्या जाने दूसरा चूहा कहाँ मिलेगा। मुझे

है एक महिला मुझे चूहे दिया करती थी। जब वह कोई पाती थी, मुझे दे देती थी पर वह महिला तो यहां है नहीं।"

"महिला, हुं!" जार्ज ने तिरस्कार के स्वर में कहा। "यह भी याद नहीं तुम्हें कि वह महिला थी कौन? वह तो स्वयं तुम्हारी चाची थी, क्लारा चची। और उसने फिर तुम्हें चूहे देना बंद कर दिया। तुम हमेशा उन्हें मार डालते थे।"

उदास होकर लैनी ने सिर उठाया "वे इतने ज़रा-जरा से तो होते थे," उसने सफाई देते हुए कहा, "मैं उन्हें सहलाता और वे मेरी उँगलियों में काट लेते और मैं ज़रा-सा उनकी गर्दन दबाता और वे मर जाते—इतने छोटे-से जो होते थे जार्ज।"

"जल्दी ही खरगोश मिल जायँ तो बड़ा अच्छा हो" लैनी ने क्षण भर बाद कहा "क्यों जार्ज? ख़रगोश इतने छोटे नहीं होते।"

"जहन्नुम में जायँ ख़रगोश। ज़िंदा चूहा तो कभी तुम्हारे हाथ में दिया नहीं जा सकता। तुम्हारी चाची क्लारा ने तुम्हें एक बार रबूर का चूहा दिया था। पर तुम उसे हाथ तक न लगाते थे।"

"उसे सहलाने में अच्छा नहीं लगता था।" लैनी बोला।

डूबते हुए सूरज की लपट पहाड़ों की चोटियों पर बुझ गयी और घाटी में झुटपुटा-सा छा गया था। सरई और अंजीर के पेड़ों के बीच अंधकार-सा घिर आया। एक बड़ी-सी मछली ने पानी की सतह के ऊपर सिर उठा कर बहुत-सी हवा अपने गलफड़ों में भर ली और फिर चुपचाप काले पानी में डूब गयी। पानी के ऊपर

लहरों में एक से एक बड़े घेरे बनने लगे। ऊपर पत्तियाँ फिर से खड़-खड़ायीं और सरई की रूई के छोटे-छोटे गाले उड़ कर नीचे गिरे और पानी की सतह पर छा गये।

"वह लकड़ियाँ ला रहे हो कि नहीं?" जार्ज ने आदेश भरे स्वर पूछा, "उस अंजीर के ठीक पीछे की ओर बहुत सी पड़ी हैं। बाढ़ के पानी के साथ आकर वहाँ जमा हो गयी हैं। जाओ, ले आओ!"

लैनी पेड़ के पीछे गया और सूखी पत्तियों और डंठलों का एक गट्ठर ले आया। उसने उन्हें पुराने राख के ढेर के ऊपर डाल दिया और फिर कुछ और लाने चला गया। अब रात हो आयी थी। पानी के ऊपर किसी जंगली फ़ाख़्ता ने पंख फड़फड़ाये। जार्ज उठा, पत्तों और झाड़ियों के उस ढेर के पास पहुँचा और उसने सूखी पत्तियों को सुलगा दिया। आग की लपट डंठलों में चटख़ी और फिर सुलगने लगी। जार्ज ने अपना बंडल खोलकर लोबिया के तीन डिब्बे निकाले। उसने उन्हें आग के पास रख दिया, लपट के बहुत पास, पर ऐसे कि उसे छुएँ नहीं।

"यह तो चार आदमियों के लिए भी काफ़ी है," वह जैसे अपने आप से बोला।

लैनी आग के ऊपर झुका हुआ उसे देखता रहा। उसने शाँति के साथ कहा, "लोबिया मुझे टमाटर की चटनी के साथ पसंद है।"

"नहीं है हमारे पास टमाटर की चटनी!" जार्ज बरस पड़ा। "जो कुछ हमारे पास नहीं है, वही चाहिए तुम्हें। परमात्मा जानता है, यदि मैं अकेला होता, तो आराम से रहता। कहीं भी जाकर नौकरी कर

लेता और न कोई कष्ट होता न कोई झमेला! और महीने के आख़ीर में अपने पचास डालर लेकर ठाठ से शहर जाता और जो दिल में आता ख़रीदता। चाहता तो मैं सारी रात किसी लौंडिया के पास बिता सकता। चाहे जहाँ खाता, होटल में या कहीं और! जो चीज़ मन में आती, मैं मँगाता। और यह सब काम मैं हर महीने कर सकता था। एक गैलन व्हिस्की लाता, या किसी अड्डे में जाकर ताश खेलता य बिलियर्ड!"

लैनी ने सिर झुका लिया और उसने आग की लपटों के पार क्रुद्ध जार्ज की ओर देखा और वह संत्रस्त हो उठा।

जार्ज क्रोध में कहता जा रहा था, "और मिला क्या मुझे? मिले तुम! स्वयं किसी नौकरी पर टिक नहीं सकते और मैं जो नौकरी खोजता हूँ, उसे भी छुड़वा देते हो। हमेशा दुनियां भर में इधर से उधर भटकने के सिवा इमें और कोई काम नहीं। और फिर इतने ही पर बस नहीं। चाहे जब तुम बखेड़ा खड़ा कर देते हो। मुसीबत मोल लेते हो तुम, और उसमें से निकालने दौड़ना पड़ता है मुझे।" जार्ज का स्वर चीख़ की हद तक पहुँच गया। "सुअर के बच्चे, ख़ब्ती, तुम मुझे मिनट भर चैन की साँस नहीं लेने देते।"

उन छोटी-छोटी लड़कियों की तरह जो एक दूसरे की नक़ल उतारती हैं, जार्ज ने मुँह बिचका कर कहना आरम्भ किया—लैनी की नक़ल में—"बस उस लड़की के कपड़ों को ही छूकर देखना चाहता था—बस ऐसे सहलाना चाहता था कि वह भी कोई चूहा हो।—उसे साला कैसे पता चलता कि तुम सिर्फ़ उसके कपड़ों को छूकर देखना चाहते हो? वह तुम्हें झटक कर हटाने लगी, तुमने और भी कस कर

पकड़ लिया, जैसे वह भी चूहा हो। वह चिल्लाने-चीखने लगी और हमें भाग कर नहर की खाई में छिपना पड़ा। पुलिस के कुत्ते पीछे पड़ गये। फिर चुपचाप अँधेरे में छिप कर निकले और उस इलाके को छोड़ कर आना पड़ा। हर बार कुछ न कुछ इसी तरह का—हर बार! कभी-कभी इच्छा होती है कि तुम्हें एक पिंजरे में बंद करके दस लाख चूहे तुम्हारे ऊपर छोड़ दूँ और फिर देखूँ तमाशा।"

एकाएक उसका गुस्सा ग़ायब हो गया। उसने आग के पार लैनी के दुख-कातर मुख की ओर देखा और वह कुछ लज्जित सा होकर लपटों को घूरने लगा।

अँधेरा घना हो आया था, पर आग की रोशनी में पेड़ों के तने और आग के ऊपर झुकी हुई डालियाँ दिखायी पड़ती थीं। लैनी धीरे-धीरे बड़ी सावधानी से खिसकता हुआ आग का चक्कर दे कर, जार्ज के पास आ गया और अपनी एड़ियों के बल बैठ गया। जार्ज ने लोबिया के डिब्बों को घुमा कर आग के पास रख दिया ताकि दूसरी ओर से भी वे गर्म हो जायें। भाव उसका ऐसा था मानो लैनी की सन्निकटता का उसे कोई आभास नहीं।

"जार्ज"! बहुत धीमे से लैनी ने कहा।

जार्ज चुप।

"जार्ज!" लैनी फिर मिनमिनाया।

"क्या है?"

"मैं तो सिर्फ़ हँसी कर रहा था, जार्ज। मुझे टमाटर की चटनी बिल्कुल नहीं चाहिए। चटनी यदि यहाँ मौजूद होती, तो भी मैं न खाता।"

"होती तो तुम्हें ज़रूर मिलती।"

"पर मैं खाता ही नहीं जार्ज। मैं सब तुम्हारे लिए छोड़ देता। तुम अपने लोबिया पर उसकी तह जमा लेते। मैं कदापि न छूता।"

जार्ज अब भी उदास भाव से आग की ओर मुटर-मुटर तक रहा था, "जब भी मैं सोचता हूँ कि तुम्हारे बिना मैं कैसे मज़े में रहता, तो मैं पागल हो उठता हूँ। मुझे पल भर चैन नहीं मिलता।"

लैनी उसी प्रकार बैठा था। वह नदी के पार अँधेरे में ताकने लगा। "जार्ज क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें छोड़ कर चला जाऊँ?"

"कहाँ जाओगे तुम? जहन्नुम में!"

"चाहे जहाँ चला जाऊँगा। मैं उन पहाड़ियों में चला जाऊँगा कहीं कोई गुफा-उफ़ा मिल जायगी।"

"हूँ? और खाओगे क्या? तुम में तो इतनी अकल भी नहीं है कि कुछ खाने को जुटा सको।"

"मैं सब जुटा लूँगा, जार्ज। मुझे टमाटर की चटनी और अच्छे-अच्छे पकवान थोड़ी चाहिएँ। मैं धूप में पड़ा रहा करूँगा और कोई मेरा कुछ न बिगाड़ सकेगा। और यदि मुझे कोई चूहा मिल गया तो उसे मैं रख लूँगा। उसे कोई मुझसे न छीनेगा।"

जार्ज ने उसे एक तीक्ष्ण गहरी दृष्टि से देखा। वह दृष्टि मानो कुछ टटोल रही हो। "मैं तुमसे जलता हूँ न?"

"यदि तुम्हें मेरा साथ पंसद नहीं है तो मैं पहाड़ियों में चला जाऊँगा और कोई गुफ़ा ढूँढ़ लूँगा। मैं चाहे जब जा सकता हूँ।"

"नहीं—देखो! मैं तो सिर्फ़ योंही कह रहा था, लैनी। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो। चूहों के बारे में मुसीबत यही है, तुम उन्हें मार

डालते हो।" वह कुछ देर रुक कर बोला, "मैं बताता हूँ तुम्हें, मैं क्या करूँगा। मौका मिलते ही मैं तुम्हारे लिए एक पिल्ला ला दूंगा। शायद उसे तुम न मारो। वह चूहे से अच्छा होगा। और उसे तुम ज़ोर से सहला भी सकोगे।"

लैनी ने इस लालच पर ध्यान नहीं दिया। वह जैसे अपना महत्व पहचान चुका था। "यदि तुम्हें मेरा साथ पंसद नहीं तो तुम्हें बस कहने भर भी की देर है। मैं तुरंत उन पहाड़ियों में चला जाऊंगा, ठीक उन सामने वाली पहाड़ियों में, और अकेला रहूँगा। फिर कोई मेरा चूहा न चुरायेग।"

"तुम मेरे ही साथ रहो, लैनी।" जार्ज सहानुभूति से बोला, "ईश्वर की कसम, तुम अकेले रहे तो तुम्हें कोई भेड़िया समझ कर गोली मार देगा। तुम्हारी चाची कभी इस बात को पसंद न करेगी कि तुम अकेले भाग जाओ, वह मर गयी हो तो भी।"

लैनी बड़ी चतुराई से बात कर रहा था। "अच्छा तो बताओ मुझे—पहले की तरह।"

"क्या बताऊँ ?"

"ख़रगोशों के बारे में।"

"मुझ पर ऐसे हुकम मत चलाओ," जार्ज ने झल्ला कर कहा।

"बता भी दो, जार्ज भाई! जैसे पहले बताया था," लैनी के स्वर में अपूर्व विनय थी।

"तुम्हें बड़ा मज़ा आता है न उसमें! आता है न ? अच्छी बात है, बताये देता हूँ मैं! और तब हम लोग खाना खायेंगे....."

जार्ज की अवाज़ गम्भीर हो गयी। वह अपने शब्दों को एक लय के साथ दोहराने लगा, मानो उन्हें पहले भी बहुत बार कह चुका हो।

"हमारे जैसे लोग, जिनके पास खेती करने को अपनी ज़मीन नहीं और जो वाड़ों में बड़े ज़मींदारों के मज़दूर बने काम करते हैं, दुनिया में बिल्कुल अकेले होते हैं। उनका घर-बार नहीं होता। उनका कोई वतन नहीं होता। वे एक बाड़े में आकर कुछ दिन काम करते हैं और फिर कुछ दिन में पता चलता है कि किसी दूसरे बाड़े में पड़े एड़ियाँ घिस रहे हैं। उनका न आगे नाथ पीछे पगहा।"

लैनी खुश हो गया। "हाँ, यही, यही। अब बताओ हम कैसे हैं?. कैसी स्थिति है हमारी?"

"हमारी बात दूसरी है," जार्ज बोला, "हमारे सामने भविष्य है। हम एक दूसरे के साथी हैं। इसी से हमारा महत्व है। हमें ताड़ी वाड़ी या शराब-उराब में बेकार पैसा फूँकने की ज़रूरत नहीं। हम एक दूसरे से बात कर अपना दुख बँटा सकते हैं। उन लोगों में से यदि कोई गिरफ़्तार हो जाता है तो उसके लिए जेल में सड़ते रहने के सिवा कोई चारा नहीं, क्योंकि किसी को उसकी चिन्ता नहीं। हमारे साथ यह बात नहीं।"

लैनी बीच ही में बोल उठा, "हमारे साथ यह बात नहीं! क्यों? क्योंकि...क्योंकि मेरी देखभाल करने के लिए तुम हो और तुम्हारी देखभाल करने के लिए मैं हूँ, इसलिए!" वह खुशी से हँस पड़ा और बोला, "फिर आगे जार्ज?"

"तुम्हें तो सब ज़बानी याद है। तुम आपही कह लो!"

नहीं नहीं, तुम्हीं बताओ। मैं कुछ बातें भूल जाता हूँ। अब बताओ कि आगे क्या होगा।

"एक न एक दिन हम काफ़ी पैसा इकट्ठा कर लेंगे। और हमारा एक छोटा-सा घर, दो-चार एकड़ ज़मीन, एक गाय, कुछ सुअर और..."

"और...और हम मज़दूरी छोड़कर मौज उड़ायेंगे," लैनी खुशी से चीख़ पड़ा। "और खरगोश पालेंगे। कहे चलो, जार्ज! कहे चलो कि हम लोग बग़ीचे में क्या लगायेंगे, और पिंजरे में बंद ख़रगोशों के बारे में, जाड़ों के मेंह और गर्म धधकते चूल्हे के बारे में, |...कैसे दूध के ऊपर इतनी मोटी मलाई हुआ करेगी कि काटना कठिन हो जायगा। सब के बारे में बताओ न जार्ज।"

"तुम आप ही क्यों नहीं कह लेते? तुम्हें तो सब मालूम ही है।"

"नहीं...तुम बताओ। मेरे कहने से वह बात नहीं बनती। बताओ, ...जार्ज, कैसे मैं ख़रगोशों की देखभाल करूँगा।"

"अच्छा सुनो!" जार्ज ने कहा, "हमारा एक बड़ा सातरकारियों का खेत होगा, एक छोटी सी ख़रगोशों की झोंपड़ी होगी और हम मुर्ग़ियाँ पालेंगे। और जब जाड़ों में बरखा होगी तो हम कहा करेंगे कि काम जाय जहन्नुम में और हम लोग चूल्हे में आग जला कर उसके दोनों ओर बैठ जाया करेंगे और छत पर बरसती बूंदों की आवाज़ सुना करेंगे।" अचानक वह रुका......"हटाओ जी यह बकवास!" उस ने सहसा झल्लाकर कहा "तुम मुझे भी अपने जैसा पागल बना दोगे!" उसने अपनी जेब से चाकू निकाला। बहुत देर हो गयी।" उसने चाकू से लोबिया के एक डिब्बे का ढकना काट डाला और डिब्बा लैनी की ओर बढ़ा दिया।

तब उसने दूसरा डिब्बा खोला। अपनी जेब में से उसने दो चम्मच निकाले और एक लैनी को दे दिया।

आग के पास बैठ कर वे लोबिया अपने मुँह में भर कर ज़ोरों से चबाने लगे। लैनी ने अपना मुँह इतना भर लिया कि लोबिया के कुछ दाने उसके एक किनारे से निकल पड़े।

जार्ज ने अपना चम्मच हवा में हिलाया। "कल जब मालिक सवाल पूछेगा तो तुम क्या कहोगे?"

लैनी ने लोबिया चबाना बंद करके मुँह का कौर बे चबाये निगल लिया। उसका चेहरा तन गया। "मैं.....मैं एक अच्छर ......भी नहीं कहूँगा।"

"शाबाश! बहुत अच्छे लैनी! अब तुम शायद ठीक होते जा रहे हो। अपनी दो-चार एकड़ ज़मीन ख़रीदने पर मैं तुम्हें ज़रूर खरगोश ले दूँगा, पालने और प्यार करने के लिए! विशेष-कर यदि तुम इतनी अच्छी तरह सब बातें याद रक्खेगे।"

गर्व से लैनी का मानो दम घुटने लगा, "मैं सब याद रख सकता हूँ"! वह बोला।

जार्ज ने फिर वैसे ही चम्मच हिलाते हुए कहा, "देखो लैनी, मैं चाहता हूँ कि तुम इस जगह को अच्छी तरह देख लो। यह जगह तुम्हें याद रहेगी? रहेगी न? बाड़ा उस ओर को है, दो फ़र्लांग पर। बस इस नदी के किनारे-किनारे।"

"ज़रूर," लैनी ने कहा, "मुझे इस की याद रहेगी। मुझे याद है कि नहीं कि मैं एक अच्छर भी नहीं कहूँगा?"

"हाँ ज़रूर है। अच्छी बात है। देखो लैनी—यदि तुम पहले की तरह किसी बखेड़े में पड़ जाओ, तो तुम यहीं आकर, इस झाड़ी में छिप जाना।"

"झाड़ी में छिप जाना," लैनी ने धीरे-धीरे दोहराया।

"हाँ, झाड़ी में छिपे रहना, जब तक मैं न आऊँ। याद रहेगी न यह बात ?"

"ज़रूर रहेगी, जार्ज। जब तक तुम न आओ, तब तक मैं झाड़ी में छिपा रहूँगा।"

"वैसे तुम किसी बखेड़े में पड़ना मत। यदि तुम इस बार कोई झंझट मोल लोगे तो मैं तुम्हें कभी ख़रगोश लेकर न दूंगा।" उसने अपना ख़ाली डिब्बा झाड़ी में फेंक दिया।

"मैं कोई बखेड़ा मोल न लूँगा जार्ज। मैं एक अच्छर भी नहीं कहूँगा वहाँ।"

"ठीक है। अपना सामान यहाँ आग के पास ले आओ। यहाँ सोने में बड़ा मज़ा आयगा। ऊपर तकते-तकते, पत्तियों के आर-पार। अब और आग जलाने की ज़रूरत नहीं। इसे रहने दो। हम यहाँ सो जायँगे और यह अपने आप ठंडी हो जायगी।"

उन्होंने बालू के ऊपर अपने बिस्तर लगा लिये। जैसे-जैसे आग की लपटें कम होने लगीं, वैसे-वैसे रोशनी का घेरा छोटा पड़ने लगा। टेढ़ी-मेढ़ी डालियाँ ग़ायब हो गयीं। जहां पेड़ का तना था, वहां बस एक हलकी-सी चमक दिखायी पड़ रही थी। अँधेरे में से लैनी ने पुकारा, "जार्ज— सो गये ?"

"नहीं। क्या चाहिए ?"

"हम लोग अलग-अलग रंगों के ख़रगोश मँगायेंगे।"

"ज़रूर,-ज़रूर," जार्ज ने ऊँघते हुए कहा। "लाल और नीले और हरे ख़रगोश लैनी, लाखों!"

"और नर्म-नर्म बालों वाले जार्ज, जैसे मैंने सैक्रामेंटो के मेले में देखे थे।"

"ज़रूर, ज़रूर, वे भी।"

"क्योंकि नहीं तो मैं चला जाऊँगा और गुफ़ा में जाकर रहूँगा।"

"तुम जहन्नुम में जाओ", जार्ज ने कहा, "अब चुप हो जाओ।"

कोयलों के ऊपर लाल रोशनी मंद पड़ने लगी। दूर नदी के पार पहाड़ी के ऊपर कोई भेड़िया चीख़ उठा और नदी के इस ओर किसी कुत्ते ने उसके जवाब में रोना शुरू कर दिया। अंजीर के पेड़ों की पत्तियाँ रात की हल्की हवा में कुछ फुसफुसा उठीं।

दो

बाड़े में मज़दूरों के रहने और सोने के लिए जो दालान था, उसकी दीवारों पर यद्यपि सफ़ेदी पुती हुई थी, पर फर्श अनलीपा था। तीन दीवारों में छोटी-छोटी चौकोर खिड़कियाँ थीं और चौथी में एक अनगढ़ सा ठोस दरवाज़ा था, जिसमें काठ की अर्गल थी। दीवार के सहारे आठ तख़्ते पड़े थे, उनमें से पांच के गद्दों पर तो कंबल बिछे थे, शेष तीनों के गद्दे खाली थे। जो बताते थे कि वे गद्दे नये मज़दूरों की बाट देख रहे हैं। हर तख़्ते के ऊपर कीलों के सहारे लकड़ी की एक छोटी-सी आलमारी टँगी थी जिसके पट आगे को खुलते थे। उसमें, तख़्ते पर सोने वाले की निजी चीज़ें रखने के लिए दो ख़ाने बने थे। ये खाने विभिन्न छोटी-मोटी चीज़ों—साबुन, पाउडर, उस्तरे आदि से अटे पड़े थे। उन ख़ानों में वे पश्चिमी पत्र-पत्रिकाएँ भी भरी पड़ी थीं, जिन्हें बाड़ों में काम करने वाले बेहद पसंद

करते हैं औ: बातों पर व ऊपर से हँसते हैं, पर मन
ही मन विश्‍ त ख़ानों में दवा की छोटी-छोटी शीशियाँ
और कंघे थे यों के साथ दीवार में ठुँकी कीलों पर
कुछ टाइयां । एक दीवार के पास ढले हुए लोहे का
एक काला चिमनी सीधी छत के पार तक चली
गयी थी । क एक बड़ी-सी चौकोर मेज़ थी, जिस पर
ताश के पत्ते ौर जिसके चारों ओर खेलने वालों के
बैठने के लिए त रक्खे हुए थे ।

सुबह ज होते, एक खिड़की में से सूरज की एक
चमकीली, धू रे के अँधेरे को चीरती-सी चली आती
थी और मवि सितारों की भाँति निरन्तर इस किरण में
से गुज़रती र

काठ की रवाज़ा खुला और एक लंबा, ढालू कंधों
वाला बूढ़ा ा । वह नीली ज़ीन के कपड़े पहने हुए
था और उसके क बड़ा सा झाड़ू था । उसके पीछे पीछे
जार्ज और ला प्रवेश किया ।

"मालिक ... तुम्हारी बाट-देख रहा था", बूढ़े ने कहा । "आज सुबह जब तुम काम पर जाने के समय न आये तो वह बड़ा झल्लाया" ।

यह कहते हुए उसने अपने दाहिने हाथ से चूल्हे के पास बिछे दो तख़्तों की ओर संकेत किया और उस की कमीज़ की बांह में से एक लाठी जैसी कलाई निकल आयी, जिसमें कोई पंजा न था । "वे दो तख़्ते तुम लोग ले सकते हो !" उसने कहा ।

जार्ज ने आगे बढ़ कर, अपने कंबल भुस भरे गद्दे पर डाल दिये। तब उसने अपनी अलमारी के ख़ानों को देखा और फिर एक पीला-सा छोटा डिब्बा उठाते हुए पूछा, "अरे यह क्या बला है?"

"मालूम नहीं," बूढ़ा बोला।

"इस पर लिखा है कि यह जुओं, मच्छरों, खटमलों और दूसरे कीड़े मकौड़ों को मारने के लिए अक्सीर है। यह कैसा बिस्तर तुम हमें दे रहे हो? हमें ये सब बलाएँ नहीं चाहिए।"

बूढ़े ने अपना झाड़ू बदल कर अपनी लुंजी कुहनी के सहारे बग़ल में दबा लिया और झाड़ू वाला हाथ डिब्बे के लिए बढ़ाया। उसने लेबिल को अच्छी तरह से पढ़ा और फिर बोला, "मैं बताता हूँ तुम्हें... इस तख़्ते पर तुम से पहले जो आदमी रहता था, वह एक लुहार था—बहुत ही भला आदमी और बहुत ही साफ़। वह खाने के बाद भी हाथ धोया करता था।"

"तो फिर उसके जूँएँ कहाँ से आयीं?" जार्ज का क्रोध धीरे-धीरे बढ़ रहा था।

लैनी ने अपना बंडल पास के तख़्ते पर रख दिया और फिर वहीं बैठ कर वह मुँह बाये जार्ज को देखने लगा।

"सुनो", बूढ़ा बोला, "यह लुहार—जिसका नाम ह्वाइटी था, ऐसा सनकी था कि खटमल न हों तो भी वह यह दवा अपने पास रखता था। केवल अपने संतोष के लिए, समझे? जानते हो वह क्या करता था? खाने के समय वह अपने उबले हुए आलुओं को छीलता और खाने से पहले उनमें से एक-एक दाग़ को—चाहे जैसा दाग़ हो—निकाल फेंकता। यदि किसी अंडे पर लाल धब्बा-सा होता तो वह उसे फेंक

देता। आख़िर वह अपनी इसी सनक के कारण यहाँ से चला गया। ऐसा आदमी था वह—बिल्कुल साफ़! इतवार के दिन अच्छे कपड़े पहनता, टाई तक लगाता और फिर कई बार यहीं बैठा रहता। कोई पूछे कि अरे भई यदि तुम्हें कहीं बाहर जाना ही नहीं तो नये कपड़े पहनने की क्या ज़रूरत है?" बूढ़ा हँसा, "पर वह ऐसा ही सनकी था।"

"मुझे तो यकीन नहीं होता," जार्ज ने अविश्वास के भाव से कहा, "क्या कहा तुमने, क्यों चला गया?"

बूढ़े ने पीला डिब्बा अपनी जेब में रख लिया और उस ने अपनी अपनी उँगलियों के गुट्टों से अपनी सफ़ेद दाढ़ी को खुजाया। "अरे... ...वह......बस चला गया जैसे लोग चले जाते हैं। कहता था खाने के कारण जा रहा हूँ। पर जाना चाहता होगा। उसने खाने के अतिरिक्त और कोई कारण नहीं बताया। एक दिन बस बोला 'मुझे छुट्टी दे दो,' जैसे सब लोग कहते हैं।"

जार्ज ने अपने गद्दे को उठा कर उसके नीचे देखा। उसने झुककर बोरे की अच्छी तरह पड़ताल की। तुरंत ही लैनी ने भी उठ कर अपने बिस्तर के साथ वही सुलूक किया। आख़िर लगा कि जार्ज संतुष्ट हो गया। उसने अपना बिस्तर खोला और चीज़ें निकाल कर अपनी अल-मारी के ख़ानों में रख दीं—अपना उस्तरा, साबुन की टिकिया, कंघा, गोलियों की शीशी, बदन पर मलने का तेल, और कलाई पर बाँधने की चमड़े की पट्टी। फिर उसने कंबलों से अपना बिस्तर ठीक से लगा दिया।

बूढ़े ने कहा, "मेरा ख़्याल है, मालिक यहाँ आता ही होगा। वह सचमुच बड़ा चिढ़ गया था तुम्हारे सुबह न पहुँचने से। हम कलेऊ कर रहे

थे, तभी आया और बोला, 'नये आदमी कहां गये ?' और उसने अस्तबल वाले की खूब ख़बर ली।"

जार्ज ने अपने बिस्तर में पड़ी एक सिलवट को ठीक किया और बैठ गया। "अस्तबल वाले की ख़बर ली ?" उसने पूछा।

"हाँ। वह अस्तबल वाला नीग्रो है न।"

"नीग्रो, हुँ ?"

"हां। वह भी अच्छा आदमी है। एक घोड़े ने लात मार दी थी, उससे पीठ टेढ़ी हो गयी है। जब मालिक नाराज़ होता है तो उसकी बड़ी ख़बर लेता है। पर वह अस्तबल वाला इसकी रत्ती भर परवाह नहीं करता। पढ़ता बहुत है। उसके कमरे में कई किताबें हैं।"

"यह मालिक कैसा आदमी है ?" जार्ज ने पूछा।

"आदमी तो खूब अच्छा है, पर कभी-कभी उसका दिमाग़ गर्म हो जाता है......पर अच्छा आदमी है! हां......हां...... जानते हो बड़े दिन पर उसने क्या किया ? एक गैलन ह्विस्की ठीक यहीं पर ले आया और बोला, 'दिल खोल कर पिओ। बड़ा दिन साल भर में एक ही बार आता है.....'"

"सचमुच ! पूरा गैलन ?"

"हां जी ! भगवान कसम, बड़ी मौज रही। उस दिन लोगों ने उस नीग्रो को भी बुला लिया। पर वह छोटे कद का स्किनर* स्मिटी उस नीग्रो से लड़ बैठा। बड़ा तमाशा रहा। लोगों ने स्मिटी को पैर न चलाने दिया, इसलिए वह नीग्रो जीत गया। स्मिटी कहता

*स्किनर = धानि आदि से वल्कल अथवा छिलका उतारने में निपुण कारीगर।

था कि यदि वह लात चला पाता तो उस नीग्रो को ज़रूर मार डालता। लोगों का ख़्याल था कि नीग्रो की पीठ पर कुबड़ है इसलिए स्मिटी का लात चलाना ठीक नहीं।" वह उस घटना की स्मृति का आनन्द लेने के लिए पल भर को रुका। फिर बोला, "उसके बाद लोग सोलेदाद गये और बड़ा ऊधम मचाया। मैं न गया। अब सकत नहीं रही।"

लैनी ने अपना बिस्तर ठीक किया ही था, कि इतने में लकड़ी की अर्गल फिर उठी। दरवाज़ा खुला। एक छोटा-सा गठे हुए बदन का आदमी खुले दरवाज़े में खड़ा था। वह नीली ज़ीन की पतलून, फ़लालैन की कमीज़, एक काली बिना बटन की बंडी और एक काला कोट पहने हुए था। उसके दोनों हाथों के अँगूठे उसकी पेटी में घुसे हुए थे, लोहे के चौकोबर बकुओं की दोनों ओर। उसके सिर पर एक मैला-सा भूरे रंग का टोप था, और वह ऊँची ऐड़ी के जूते पहने हुए था, यह साबित करने के लिए कि वह मज़दूर नहीं है।

बूढ़े झाड़ू वाले ने जल्दी से उसकी ओर देखा और फिर अपनी दाढ़ी खुजाता और दरवाज़े की ओर बढ़ता हुआ बोला,—"ये दोनों अभी आये हैं" और मालिक के पास से होकर वह दरवाज़े के बाहर निकल गया।

मालिक ने दो एक छोटे-छोटे लेकिन तेज़ डग भरे और अंदर कमरे में चला आया। "मैंने 'मेरे एंड रेडी' को लिखा था कि मुझे दो आदमी आज सवेरे चाहिएँ। तुम लोगों के पास तुम्हारे काम के कार्ड हैं?"

जार्ज ने जेब में हाथ डाला और कार्ड निकाल कर मालिक को दे दिया।

"इस में 'मरे एंड रेडी' की कोई गलती नहीं। इस कार्ड में लिखा है कि तुम लोग आज सवेरे यहां काम के लिए पहुँच जाओगे।" मालिक बोला

जार्ज ने अपने पैरों की ओर देखा। "बस वाले ने हमें चकमा दे दिया," उसने कहा, "हमें दस मील पैदल चलना पड़ा। उस ने कह दिया कि तुम पहुँच गये हो। हालांकि यह झूठ था। फिर सवेरे कोई सवारी नहीं मिली।"

मालिक ने अपनी आंख दबायी और बोला। "काम पर जाने वाले मज़दूरों की टोली में अनाज भरने वाले दो आदमी कम गये। अब खाने के बाद जाने के सिवा कोई चारा नहीं।"

उस ने अपनी टाइम-बुक जेब से निकाली और जहाँ पन्नों के बीच एक पेंसिल रक्खी थी, वहां से उसे खोला। जार्ज ने त्योरी चढ़ा कर अर्थपूर्ण दृष्टि से लैनी की ओर देखा, और लैनी ने सिर हिला कर जताया कि वह समझ गया है।

मालिक ने पेंसिल को जीभ से लगा कर ज़रा सा गीला किया, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"जार्ज मिल्टन!"

"और तुम्हारा?"

उत्तर जार्ज ने दिया:

"इसका नाम है लैनी स्माल।"

नाम कापी में दर्ज हो गये ! "अच्छा तो आज बीस तारीख़ है, बीस तारीख को दोपहर से !" मालिक ने कापी बंद कर दी ! "तुम लोग कहाँ काम कर रहे थे ?"

"उधर वीड के पास !" जार्ज ने कहा ।

"तुम भी ?"

"हाँ, वह भी !"

मालिक ने कुछ मुस्कराहट के साथ उँगली से लैनी की ओर संकेत करते हुए कहा, "उसे बहुत बात करना नहीं आता, नहीं न ?"

"नहीं, बातें उसे नहीं आतीं । पर काम करने में क़यामत है । सांड है सांड !"

लैनी मन ही मन मुस्कराया । "सांड है सांड" उसने धीमे से दोहरा दिया ।

जार्ज ने पैनी दृष्टि से उसकी ओर देखा । अपनी भूल पर लज्जित होकर लैनी ने सिर झुका लिया ।

मालिक एकाएक बोला, "सुनो स्मॉल !"

लैनी ने अपना सिर उठाया ।

"तुम क्या काम कर सकते हो ?"

लैनी ने घबरा कर जार्ज की ओर देखा ।

"वह सब कुछ कर सकता है," जार्ज बोला, "अनाज कूट सकता है, भर सकता है, ज़मीन जोत सकता है, बो सकता है । वह हर काम कर सकता है । बस उसे अवसर दीजिए !"

मालिक ने घूम कर जार्ज को देखा । "तुम उसे स्वयं क्यों नहीं जवाब देने देते ? बात क्या है जो तुम छिपाना चाहते हो ?"

जार्ज ज़रा सा हँसा। "मैं छिपा कुछ नहीं रहा," वह बोला, "यह लैनी बातें करने में तेज़ नहीं। मूर्ख है। पर काम में शेर है। चार सौ पौंड की गाँठ अकेला उठा सकता है। जी!"

मालिक ने अपनी छोटी-सी कापी धीरे-धीरे जेब में रख ली। अपने अगूठे उसने फिर पेटी में खोंस लिए। और एक आंख को लगभग मूँद कर बोला, "अच्छा, तुम इतनी वकालत क्यों कर रहे हो इसकी ?"

"जी ?"

"मैंने कहा कि इस आदमी में तुम्हारी इतनी दिलचस्पी क्यों है ? क्या तुम उसकी पगार लेते हो।"

"नहीं जी, यह बात नहीं है। आप यह क्यों समझते हैं कि मैं इसकी सिफ़ारिश कर रहा हूँ ?"

"मैंने आज तक किसी को दूसरे आदमी के लिए इतना परेशान होते नहीं देखा। मैं जानना चाहता हूँ तुम्हारा मतलब क्या है।"

"यह मेरा......चचेरा भाई है।" जार्ज बोला, "मैंने इसकी बूढ़ी माँ से कहा है कि मैं इसकी देख भाल करूँगा। जब यह छोटा था तो इसके सिर में घोड़े ने लात मार दी थी। वैसे यह ठीक है, बस ज़रा ठस है। पर आप इससे जो कहें, वही कर सकता है।"

मालिक आधा घूम गया। "ख़ैर जौ के बोरे भरने के लिए दिमाग़ की ज़रूरत नहीं, पर एक बात समझ लो मिल्टन, मुझसे तुम कोई बात छिपा नहीं सकते। मेरी दृष्टि सदा तुम पर रहेगी। वीड से तुम क्यों चले आये ?"

"काम ख़त्म हो गया था," जार्ज ने मुस्तैदी से उत्तर दिया।"

"क्या काम था?"

"हम......हम लोग एक गड्ढा खोद रहे थे।"

"ठीक है। पर याद रखो कोई चाल मत चलना। तुम्हारी कोई तिकड़म यहाँ नहीं चल सकती। मैंने बड़े-बड़े चालाक देख रखे हैं। खाने के बाद अनाज वाली टोली के साथ चले जाना। वे लोग कूटने वाली मशीन से जौ इकट्ठा कर रहे हैं। स्लिम की टोली के साथ जाना।"

"स्लिम?"

"हाँ। लंबा चौड़ा आदमी है। खाने के समय तुम्हें मिलेगा।"

एकाएक वह घूम पड़ा और दरवाज़े की ओर चल दिया। पर बाहर जाने के पहले खूब नज़र भरकर उसने दोनों को देखा। फिर वह निकल गया।

जब उसके पैरों की चाप दूर चली गयी, तो जार्ज लैनी की ओर मुड़ा। "तुम तो एक अच्छर भी नहीं बोलने वाले थे।" उसने मुंह बिचकाते हुए कहा, "तुमसे कहा था कि यह अपना बड़ा-सा तोबड़ा बंद रखना और मुझे बात करने देना। नौकरी जाते-जाते बाल-बाल बची।"

लैनी निराश-भाव से अपने हाथों को देखता रहा। "मैं भूल गया था जार्ज।"

"हाँ तुम भूल गये। तुम हमेशा भूल जाते हो और बचाना मुझे पड़ता है।" वह तख़्ते पर धप से बैठ गया। "अब उसकी दृष्टि हम पर रहेगी। हमें हर घड़ी होशियार रहना पड़ेगा कि कोई ग़लती न हो जाय। भगवान के लिए अब तुम यह अपना बड़ा-सा तोबड़ा बंद रखना। समझे!" और चिढ़कर वह चुप बैठ गया और सामने शून्य में देखने लगा।

कुछ क्षण निस्तब्धता छायी रही। फिर लैनी हिचकिचाते हुए बोला।

"जार्ज।"

"क्या है?"

"मेरे सिर में तो किसी घोड़े ने लात नहीं मारी थी, जार्ज!"

"मारी होती तो बहुत अच्छा होता", जार्ज ने चिढ़ कर कहा। "सब मुसीबत ख़त्म हो गयी होती।"

"तुमने कहा कि मैं तुम्हारा चचेरा भाई हूँ।"

"हाँ वह झूठ था। और मुझे खुशी है कि यह झूठ है। यदि मैं तुम्हारा संबंधी होता तो अपने आप को गोली मार लेता।" वह एका-एक चुप हो गया और बढ़कर उसने खुले दरवाज़े से बाहर झाँका। "क्यों जी, यह तुम क्या चुपचाप सुन रहे हो?"

सफाई करने वाला बूढ़ा धीरे-धीरे चौखट में आ खड़ा हुआ। उसकी झाड़ू उसके हाथ में थी। उसके पीछे पीछे एक खुजली का मारा कुत्ता था जिसका मुँह भूरे रंग का था और बूढ़ी अंधी आखें पीली-पीली-सी थीं। कुत्ता लँगड़ाता सा कमरे में एक ओर जाकर पड़ रहा और धीमे-धीमे गुर्राता हुआ अपने कीड़ों-खायी भूरे रंग की पीठ को चाटने लगा। बूढ़ा कुत्ते की ओर ही देख रहा था। जार्ज के उत्तर में बोला, "मैं कुछ नहीं सुन रहा था। मैं तो क्षण भर के लिए छाया में खड़े होकर अपने कुत्ते को खुजा रहा था। अभी-अभी मैंने गुसल खाने को साफ़ किया है।"

"तुमने अपने बड़े-बड़े कान हमारी बातें सुनने को खड़े कर रक्खे थे", जार्ज चिढ़ कर बोला। "मुझे किसी का दूसरों के फटे में पैर

अड़ाना पसंद नहीं। न मैं स्वयं किसी के मामले में दखल देता हूँ न दूसरों को देने देता हूँ !"

बूढ़े ने कुछ घबरा कर जार्ज से लैनी की ओर और फिर लैनी से जार्ज की ओर देखा। "मैं तो अभी वहाँ आके खड़ा ही हुआ था" उसने कहा। "मैंने कुछ नहीं सुना, तुम किस बात पर झगड़ रहे थे, मुझे इस में कोई दिलचस्पी नहीं। यहाँ काम करने वाले न तो किसी की बात सुनने के लिए कान लगाते हैं न बेकार के सवाल पूछते हैं।"

"ख़ैरियत है कि नहीं पूछते", जार्ज ने कुछ नरम पड़ कर कहा "उनका भला भी उसी में है।" पर वह बूढ़े की बात से निश्चिंत हो गया था। "अंदर आ जाओ, बैठो ज़रा देर", उसने कहा, "यह कुत्ता वो तुम्हारा बहुत बूढ़ा हो गया है।"

"हाँ ! जब वह जरा-सा पिल्ला था, तभी से मेरे पास है ! छोटा था तो बहुत अच्छा था।" उसने अपनी झाड़ू दीवार के सहारे टिका दी और अपनी ख़रख़री श्वेत दाढ़ी को खुजाते हुए बोला, "मालिक तुम्हें कैसा लगा ?"

"अच्छा आदमी है।"

"हाँ अच्छा आदमी है," बूढ़े ने हामी भरी। "बस उसे...अ... ज़रा समझना ज़रूरी है।"

उसी समय एक युवक अंदर आया। वह दुबला-पतला आदमी था। भूरा-सा चेहरा, भूरी आँखें और अति घुँघराले बाल ! उसकी बायीं कलाई में मज़दूरों ऐसी पट्टी थी, पर पैरों में मालिक के से जूते थे।

"बापू तो इधर नहीं आये ?" उसने पूछा।

"वे अभी यहां थे कर्ली" बूढ़ा बोला, । "मैं समझता हूँ, रसोई-घर की ओर गये हैं।"

"मैं वहीं उन्हें जा पकड़ता हूँ ?" कर्ली बोला। तभी उसकी दृष्टि नये आदमियों पर पड़ी और वह रुक गया। उसने एक गहरी तेज़ निगाह पहले जार्ज और फिर लैनी पर डाली। उसकी बाहें धीरे-धीरे कुहनियों के पास मुड़ गयीं और मुट्ठियाँ बँध गयीं। वह तन गया और उसी प्रकार तने तने ज़रा झुक गया। उसकी निगाहों से लगता था कि वह झगड़ा करने पर उतारू है, पर मानों अपने बल को तौल रहा है। लैनी उसकी उस तीक्ष्ण-दृष्टि से घबरा-सा गया। उसने एक पैर दूसरे पर और फिर दूसरा पहले पर रखा। कर्ली उसके पास बढ़ आया। और कर्कश आदेश पूर्ण स्वर में उसने पूछा, "तुम्हीं नये आदमी हो, बापू जिनका इंतज़ार कर रहे थे ?"

"हम अभी आये हैं !" जार्ज ने कहा।

"इसको बोलने दो।"

लैनी घबराहट और परेशानी-से ऐंठ सा गया। "और यदि वह न बोलना चाहे तो ?" जार्ज ने उत्तर दिया।

कर्ली झटके के साथ घूमा। "भगवान कसम इसे बोलना होगा। तुम क्यों बीच में टाँग अड़ा रहे हो ?"

"हम लोग साथ-साथ रहते हैं," जार्ज ने रुखाई के साथ कहा।

"अच्छा यह बात है ?"

जार्ज भी तन गया पर स्थिर बैठा रहा। "हाँ यही बात है !"

लैनी बड़ी बेबसी से जार्ज की ओर आदेश के लिए तक रहा था।

"और तुम उस आदमी को बात नहीं करने दोगे, है न ?"

"वह बात कर सकता है, यदि कुछ कहना चाहे तो" उसने अपने र से लैनी की ओर संकेत किया।

"हम लोग अभी आये है," लैनी नम्रता से बोला। कर्ली उसे घा घूरता रहा। "याद रखो यदि तुमसे बात पूछी जाय तो तुम्हीं ाब दो। समझे!" वह दरवाज़े की ओर मुड़ा और बाहर निकल गया की कुहनियाँ अब भी थोड़ी सी मुड़ी हुई थीं।

जार्ज उसको बाहर जाते देखता रहा और फिर झाड़ू देने वाले े की ओर घूम कर बोला, "बात क्या है? वह चाहता क्या है? लैनी उसका क्या विगाड़ा है?"

बूढ़े ने सावधानी के साथ दरवाज़े की ओर देखा कि कहीं कोई सुन नहीं रहा है। "वह मालिक का लड़का है। कर्ली उसका नाम है।" ने धीमे से कहा। "बड़ा लड़ाका है। बाक्सिंग के अखाड़े में उसने ी नाम कमाया है। फुर्तीला, तेज़ और तगड़ा है।

"तगड़ा है तो क्या?" जार्ज बोला, "लैनी के पीछे क्यों पड़ना हता है? लैनी ने उसका क्या बिगाड़ा है? लैनी से उसकी क्या ी है?"

बूढ़ा दाढ़ी खुजाने लगा। फिर सोच कर बोला......"बात यह ...कि कर्ली का स्वाभाव सभी ठिगने आदमियों की तरह है। उसे डील-डौल वाले आदमियों से चिढ़ है। लंबे तगड़े हृष्ठ पुष्ठ ों से वह जलता है, क्योंकि वह स्वयं पिद्दी सा है। तुमने ऐसे ठिगने आदमी देखे होंगे? देखे हैं न? अपने आपको तगड़ा के लिए सदा लड़ने मरने को तैयार!" और बुड्ढा ज़रा सा

"हां हां" जार्ज बोला, "मैंने ऐसे बहुत सों को देखा है। पर यह कर्ली लैनी के बारे में धोखे में न रहे तो अच्छा है। लैनी फ़ुर्तीला नहीं है, पर यदि यह कर्ली का बच्चा लैनी से उलझा तो उसकी ख़ैर नहीं है।"

"कर्ली बड़ा चालाक है," बूढ़े ने कुछ अविश्वास के साथ कहा, वह जान बूझ कर अपने से वज़बूत और तगड़े आदमियों से उलझता है। यदि वह उन्हें पछाड़ देता है तो लोग उसको वाह वाही देते हैं कि कैसा जवान है। पर यदि वह किसी से हार जाता है तो सब लोग कहने लगते हैं कि इतने बड़े डील-डौल के आदमी को अपनी बराबरी का जोड़ ढूँढ़ना चाहिए था। और यह भी हो सकता है कि वे सब लोग मिल कर उस लम्बे-तगड़े आदमी के पीछे पड़ जायें। मुझे कभी यह बात ठीक नहीं जँचती। कर्ली के हर तरह पौ-बारह हैं।"

जार्ज की निगाह दरवाज़े पर थी। उसने कुछ आतंकपूर्ण ढंग से कहा। "लैनी से वह दूर ही रहे तो अच्छा है। लैनी पहलवान नहीं, पर लैनी तगड़ा और तेज़ है और लैनी क़ायदा क़ानून नहीं जानता।" वह चौकोर मेज़ के पास आकर एक बक्से पर बैठ गया। अन्यमनस्कता से वह कुछ ताश के पत्ते इकट्ठे करके फेंटने लगा।

बूढ़ा एक दूसरे बक्से पर बैठ गया। "कर्ली को मत बताना कि मैंने ये बातें कही हैं।" उसने संत्रस्त होकर कहा, "वह मुझे मार देगा। उसे किसी का लिहाज़ नहीं। कौन उससे कहे? उसका बाप बाड़े का मालिक है।"

जार्ज ने पत्ते काटे और उन्हें बांटने लगा। वह हर पत्ते को उलट कर देखता और उसे एक ढेर पर डालता जाता था।

"हां, खूबसूरत है......पर..."

जार्ज अपने पत्तों में डूबा हुआ था। "पर क्या?"

"वह...उसकी नज़र बहुत चलती है।"

"ऐं? दो हफ़्ते व्याह को नहीं बीते और नज़रें भी चलाने लगी? शायद इसीलिए कर्ली को इतनी झिनझिनी छूटती रहती है।"

"मैंने उसे स्लिम से नज़रें लड़ाते देखा है। स्लिम स्किनर है। बहुत बढ़िया आदमी है। अनाज वाली टोली में उसे ऊँची एड़ी वाले जूते पहनने की ज़रूरत नहीं। उनके बिना भी सब उसका अधिकार मानते हैं। कर्ली नहीं जानता—मैंने उसे कार्लसन से भी नज़रें लड़ाते देखा है।"

जार्ज ने ऐसे कहा मानो उसे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं है, "लगता है बड़ा मज़ा आयगा।"

बूढ़ा अपने बक्स से उठकर खड़ा हो गया। "जानते हो मैं क्या सोचता हूँ?"

जार्ज ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"मैं सोचता हूँ कर्ली ने वेश्या से शादी की है।"

"वही पहला आदमी नहीं है," जार्ज ने कहा, "बहुत लोग ऐसा कर चुके हैं।"

बूढ़ा दरवाज़े की ओर बढ़ा। तब उसके उस परागैतिहासिक दिखायी देने वाले कुत्ते ने भी सिर उठाया, इधर-उधर ताका फिर और भी कष्ट के साथ उठ कर उसके पीछे-पीछे चल दिया। "मुझे लोगों के लिए नहाने का पानी भरने जाना है।" "बूढ़ा चलते-चलते बोला "जल्दी ही टोलियां आती होंगी। तुम लोग जौ भरने जाओगे न!"

"हां।"

"मैंने जो बातें कहीं, वह कर्ली से न कहना।"

"अरे नहीं।"

"तुम स्वयं उस औरत को देख लेना और देखना कि यह वेश्या है कि नहीं।" और वह दरवाज़े के बाहर चमकीली धूप में कदम बढ़ाता चला गया।

जार्ज ने विचारों में डूबे-डूबे तीन हिस्सों में ताश के पत्ते रख दिये। फिर उसने तीनों गडिडयों को उलट दिया। फर्श पर अब धूप का चतुर्भुज बन गया था और मक्खियां उसके आरपार चिंगारियों सी झपट रही थीं। बाहर से घोड़ों के जुओं की घंटियों का स्वर आने लगा। और भारी पहियों की चूँ-चूँ की आवाज़ आयी। दूर से किसी ने पुकारा। "ओ अस्तबल वाले—अस्तबल वाले ओऽऽ!" और फिर—"वह साला नीग्रो कहां मर गया?"

जार्ज ताश के उन पत्तों की गड्डियों की ओर ताकता रहा। फिर सब पत्तों को एक साथ फेंक कर वह लैनी की ओर घूमा। लैनी तख़्ते पर लेटा हुआ उसी की ओर देख रहा था।

"देखो लैनी! यहां सब मामला गड़बड़ है," उसने कहा, "मुझे डर है, तुम्हारा जरूर उस कर्ली के बच्चे से झगड़ा हो जायगा। ऐसे कमीने मैंने पहले भी देखे हैं। वह जैसे तुम्हें टटोल रहा था। वह सोचता है कि उसने तुम्हें डरा दिया है और मौका मिलते ही वह तुमसे उलझेगा।"

लैनी की आंखों में डर झलक उठा। "मैं किसी से नहीं उलझना चाहता!" उसने रिरियाते से हुए कहा, "कहीं वह मुझे पीटे न जार्ज।"

जार्ज उठा और जाकर लैनी के तखते पर बैठ गया "ऐसे हरामियों से मुझे चिढ़ है," वह बोला, "मैंने ऐसे बहुतेरे देखे हैं। जैसा बुड्ढे ने कहा था, कर्ली कच्ची गोली नहीं खेलता। जीत हमेशा उसी की होती है।" फिर पल भर सोच कर वह बोला, "यदि वह तुमसे उलझा लैनी, तो हमें यहाँ से जाना पड़ेगा, यह बात निश्चित है। भूलना नहीं।— वह है मालिक का लड़का। देखो लैनी! तुम उससे दूर ही रहने की कोशिश करो। करोगे न? उससे कभी मत बोलो। यदि वह यहाँ भीतर आये तो तुम कमरे के दूसरी ओर चले जाओ। बोलो, करोगे न ऐसे?"

"मैं कोई झगड़ा नहीं चाहता," लैनी दुख से बोला। "मैंने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा।"

"पर इससे क्या होता है। वह साला अपनी पहलवानी दिखाने पर तुला है। बस तुम उससे कोई सरोकार ही मत रखो। नहीं रखोगे न?"

"हाँ जार्ज। मैं चुप रहूँगा। एक अच्छर भी मुँह से न बोलूँगा।"

पास आती हुई अनाज की टोलियों की आवाज़ और भी ज़ोर से सुनायी पड़ रही थी। सख्त ज़मीन पर बड़े-बड़े खुरों की भारी आवाज़ जंजीरों की टनटनाहट, ब्रेकों की खरखराहट और भी निकट सुनायी पड़ रही थी। टोलियों में से आदमी एक दूसरे को पुकार रहे थे। लैनी के पास तखते पर बैठे हुए जार्ज की भौंहें सोचने की क्रिया में तन गयीं।

लैनी ने डरते-डरते पूछा, "नाराज़ तो नहीं हो, जार्ज?"

"मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँ। मैं इस हरामी कर्ली से नाराज़ हूँ" जार्ज उसी तरह भ्रू-भंग किये बोला "मैं सोचता था, हम-तुम मिलकर

कुछ पैसा इकट्ठा कर लेंगे—हो सका तो सौ डालर भर ?"......सहसा उसने मुड़ कर कहा "तुम कर्ली से बच कर रहना, लैनी !"

"ज़रूर रहूँगा, जार्ज। मैं एक अच्छुर भी नहीं कहूँगा।"

"उसके उकसावे में मत आ जाना। पर यदि वह सुअर का बचा तुमसे उलझे तो फिर देना उसे अच्छी तरह से।"

"क्या देना उसे, जार्ज ?"

"अच्छा, अच्छा। मैं तुम्हें सब बता दूंगा। ऐसे आदमी से मुझे चिढ़ है। देखो, लैनी, यदि तुम किसी बखेड़े में पड़ जाओ तो जो मैंने बताया था, वह याद है न तुम्हें ?"

लैनी कुहनियों के बल उठा। उसकी आकृति सोचने की क्रिया में विकृत हो गयी। फिर उसकी आँखें उदासी के साथ जार्ज की ओर घूम गयीं। "यदि मैं बखेड़े में पड़ गया तो तुम मुझे ख़रगोशों की देख भाल नहीं करने दोगे।"

"यह मेरा मतलब नहीं था। तुम्हें याद है हम लोग कल रात को कहाँ सोये थे ? नदी के पास ?"

"हाँ, हाँ,। याद है।, हां बिल्कुल याद है। मैं वहां जाकर झाड़ी में छिप जाऊँगा।"

"मैं आऊँ तब तक छिपे रहना। किसी को पता न लगे। नदी के पास झाड़ी में छिपे रहना। दुहरा लो इस बात को।"

"नदी के पास झाड़ी में छिपे रहना, नदी के पास झाड़ी में...।"

"बखेड़े में पड़ जाओ तो," जार्ज ने लुकमा दिया।

"बखेड़े में पड़ जाऊँ तो," लैनी ने दोहराया।

बाहर किसी ब्रेक के लगने का कर्कश सा स्वर हुआ फिर एक आवाज आयी, "अस्तबल वाले ! ओऽऽ अ-स्त-बल-वा-ले !'

जार्ज बोला, "इस बात को मन ही मन वार बार कह लो लैनी, जिससे तुम भूल न जाओ ।

दरवाजे में धूप का चौकोर सा धब्बा कट गया । दोनों ने एक साथ ऊपर नज़र उठायी । चौखट में एक लड़की खड़ी अंदर झांक रही थी । उसके भरे हुए ओठों पर खूब सुर्खी लगी हुई थी और बड़ी-बड़ी आंखें बनी सँवरी थीं । उसकी उंगलियों के नाखून लाल थे । उसके बाल छोटे-छोटे छल्लों की तरह लटक रहे थे । उसने घर में पहनने की सूती पोशाक पहन रखी थी । जिस पर लाल शुतुर्मुग के पैरों से छोटे-छोटे गुलदस्ते से बने हुए थे ।

"मैं कर्ली को खोज रही हूँ," उसने कहा । उसकी आवाज़ में लोच नहीं था और नाक से निकलती जान पड़ती थी ।

जार्ज ने पहले दूसरी ओर आंखें फिरायीं, फिर उसकी ओर देखते हुए कहा, "वे मिनिट भर पहले तो यहीं थे, पर फिर चले गये ।"

"ओह !" उसने अपने हाथ अपनी कमर पर रख लिये और दरवाजे की चौखट से इस तरह सट गयी कि उसका बदन आगे को उभर आया । "तुम्हीं लोग हो जो अभी अभी नये आये हो ?"

"हां !"

लैनी की आंखें उसके शरीर पर ऊपर से नीचे तक दौड़ गयीं । यद्यपि वह लैनी की ओर देखती न जान पड़ती थी, वह थोड़ी सी सिमट गयी और हल्के से सकपकाकर उसने अपने नाखूनों को देखा ।

"कभी कभी कर्ली यहाँ आ जाते हैं !" उसने सफ़ाई दी !

"अब तो यहाँ नहीं हैं !" जार्ज ने रुखाई से उत्तर दिया ।

"अगर यहाँ नहीं हैं, तो शायद मुझे किसी और जगह ढूँढ़ना पड़ेगा ।" उसने कुछ शरारत के साथ कहा ।

लैनी मुग्ध-सा उसकी ओर देख रहा था । जार्ज ने कहा, "मुझे दिखायी पड़े तो मैं कह दूँगा कि आप खोज रही थीं ।"

लड़की ने शोखी से मुस्करा कर अपने बदन को झटका दिया । ढूंढ़ने के लिए तो कोई किसी को दोष नहीं दे सकता," उसने कहा । उसके पीछे से किसी से जाने की आवाज़ आयी । उसने अपना सिर घुमाया । "हैलो, स्लिम," वह बोली ।

स्लिम की आवाज़ दरवाज़े में से सुनायी दी, "ओ हो ! बड़ी अच्छी दिखायी पड़ रही हो ।"

"मैं कर्ली को ढूंढने की कोशिश कर रही हूँ, स्लिम ।"

"कोई बहुत ख़ास कोशिश तो कर नहीं रही हो । मैंने उसे अभी तुम्हारे ही घर में जाते देखा है ।"

सहसा वह आशंका से मुड़ी

"अच्छा, बाइ बाइ*," उसने जार्ज और लैनी से कहा और जल्दी-जल्दी चली गयी ।

जार्ज ने घूम कर लैनी की ओर देखा ।

"हे भगवान कैसी आवारा है !" वह बोला और फिर क्षण भर बाद उसने जैसे अपने आप से कहा, " तो यह है कर्ली की बीवी !"

---

*बाइ बाइ = चलते समय विदा लेने का ढंग !

"ख़ूब शोख़ है," लैनी ने जैसे सफ़ाई में कहा।

"हां! और वह अपनी शोख़ी छिपाये भी नहीं फिरती। कर्ली को जब इस से निपटना पड़ेगा तो उसे पता चलेगा। बीस टकों के लिए वह उसे छोड़ कर चल देगी।"

लैनी अभी तक वहीं मुटर मुटर तके जा रहा था जहां वह आकर खड़ी हुई थी "कितनी शोख़ है" वह प्रशंसा के भाव में मुस्कराया।

जार्ज तेज़ी से उसकी ओर मुड़ा। उसने लैनी का कान पकड़ा और उसे झँझोड़ा देते हुए बोला।

"सुन ओ पागल हरामी! उस कुतिया की ओर यदि तू ने एक बार भी देखा तो तू जानेगा। वह क्या कहती है और क्या करती है, इस से मुझे मतलब नहीं। मैं ने ऐसी बहुतेरी देखी हैं जो अच्छे भलों के दिमाग़ ख़राब कर देती हैं। इस शहद के नीचे ज़हर है। समझा! इसे अपने से दूर ही रहने दे!"

लैनी ने अपना कान छुड़ाने की कोशिश की, "मैंने तो कुछ नहीं किया जार्ज।"

"हां तुमने कुछ नहीं किया," जार्ज ने मुँह बिचका कर कहा; "जब वह यहां खड़ी अपनी नंगी टांगें दिखा रही थी, तो किधर देख रहे थे तुम? क्यों?

"पर मेरा मतलब कुछ बुरा न था जार्ज! भगवान जानता है मेरा मतलब........"

"अच्छा, अच्छा!" जार्ज ने चिढ़ कर उसकी बात काटते हुए कहा, तुम बस उस से दूर रहो। वह स्त्री चूहे दानी है, इतना समझ लो। तुम कर्ली को ही उसके जाल में फँसने दो! "वैसलीन से भरा दस्ताना!"

"कभी कभी कर्ली यहाँ आ जाते हैं !" उसने सफ़ाई दी !

"अब तो यहाँ नहीं हैं !" जार्ज ने रुखाई से उत्तर दिया ।

"अगर यहाँ नहीं हैं, तो शायद मुझे किसी और जगह ढूँढ़ना पड़ेगा ।" उसने कुछ शरारत के साथ कहा ।

लैनी मुग्ध-सा उसकी ओर देख रहा था । जार्ज ने कहा, "मुझे दिखायी पड़े तो मैं कह दूँगा कि आप खोज रही थीं ।"

लड़की ने शोखी से मुस्करा कर अपने बदन को झटका दिया । ढूंढ़नेके लिए तो कोई किसी को दोष नहीं दे सकता," उसने कहा । उसके पीछे से किसी से जाने की आवाज़ आयी । उसने अपना सिर घुमाया । "हैलो, स्लिम," वह बोली ।

स्लिम की आवाज़ दरवाज़े में से सुनायी दी, "ओ हो ! बड़ी अच्छी दिखायी पड़ रही हो ।"

"मैं कर्ली को ढूंढने की कोशिश कर रही हूँ, स्लिम ।"

"कोई बहुत ख़ास कोशिश तो कर नहीं रही हो । मैंने उसे अभी तुम्हारे ही घर में जाते देखा है ।"

सहसा वह आशंका से मुड़ी

"अच्छा, बाइ बाइ*," उसने जार्ज और लैनी से कहा और जल्दी-जल्दी चली गयी ।

जार्ज ने घूम कर लैनी की ओर देखा ।

"हे भगवान कैसी आवारा है !" वह बोला और फिर क्षण भर बाद उसने जैसे अपने आप से कहा, " तो यह है कर्ली की बीवी !"

---

*बाइ बाइ = चलते समय विदा लेने का ढंग !

"ख़ूब शोख़ है," लैनी ने जैसे सफ़ाई में कहा।

"हाँ! और वह अपनी शोख़ी छिपाये भी नहीं फिरती। कर्ली को जब इस से निपटना पड़ेगा तो उसे पता चलेगा। बीस टकों के लिए वह उसे छोड़ कर चल देगी।"

लैनी अभी तक वहीं मुटर मुटर तके जा रहा था जहां वह आकर खड़ी हुई थी "कितनी शोख़ है" वह प्रशंसा के भाव में मुस्कराया।

जार्ज तेज़ी से उसकी ओर मुड़ा। उसने लैनी का कान पकड़ा और उसे झँझोड़ा देते हुए बोला।

"सुन ओ पागल हरामी! उस कुतिया की ओर यदि तू ने एक बार भी देखा तो तू जानेगा। वह क्या कहती है और क्या करती है, इस से मुझे मतलब नहीं। मैं ने ऐसी बहुतेरी देखी हैं जो अच्छे भलों के दिमाग़ ख़राब कर देती हैं। इस शहद के नीचे ज़हर है। समझा! इसे अपने से दूर ही रहने दे!"

लैनी ने अपना कान छुड़ाने की कोशिश की, "मैंने तो कुछ नहीं किया जार्ज।"

"हां तुमने कुछ नहीं किया," जार्ज ने मुँह बिचका कर कहा; "जब वह यहां खड़ी अपनी नंगी टांगें दिखा रही थी, तो किधर देख रहे थे तुम? क्यों?

"पर मेरा मतलब कुछ बुरा न था जार्ज! भगवान जानता है मेरा मतलब........"

"अच्छा, अच्छा!" जार्ज ने चिढ़ कर उसकी बात काटते हुए कहा, तुम बस उस से दूर रहो। वह स्त्री चूहे दानी है, इतना समझ लो। तुम कर्ली को ही उसके जाल में फँसने दो! "वैसलीन से भरा दस्ताना!"

वह अतीव उपेक्षा से हँसा, "मैं शर्त बदता हूँ वह साला आजकल कच्चे अंडे खाता होगा और इश्तिहारी दवाइयों के चक्कर में फँसा होगा।"

सहसा लैनी चिल्ला उठा, "मुझे यह जगह पसंद नहीं जार्ज। यह अच्छी जगह नहीं। मुझे यहां से ले चलो !"

"हमें यहां झख मार कर रहना पड़ेगा", जार्ज झल्ला उठा। उस वक्त तक रहना पड़ेगा जब तक कि हमारे पास कुछ पैसा नहीं हो जाता। दूसरा कोई चारा नहीं लैनी," उसने विवशता से कहा, "ज्यों ही सुविधा हुई हम यहां से चल देंगे। मुझे भी यह जगह तुम से अधिक पसंद नहीं।"

वह वापस मेज पर गया और फिर पहले की तरह अन्यमनस्कता से अकेला ताश खेलने लगा। "नहीं, मुझे यह स्वयं ज़रा पसंद नहीं," वह सहसा बोला, "मैं इस जगह को एक दम छोड़ने को तैयार हूँ। यदि हम कुछ भी डालर बचा पाये तो हम इसे तत्काल छोड़ देंगे। हम अमरीकी नदी के इलाके में चले जायेंगे और वहां पानी के साथ बह कर आने वाले सोने को रेत से अलग करने का काम करेंगे। हो सकता है हमें इस काम में दो चार डालर रोज़ मिल जायँ। कौन जाने हम कहीं सोने की डली अथवा छोटी मोटी खान ही पा जायँ !"

लैनी उत्सुकता से उसकी ओर झुक आया, "चलो जार्ज," उसने अरमान भरे स्वर में कहा, "चलो छोड़ो इस जगह को, बड़ी घटिया जगह है।"

"हमें झख मार कर अभी यहीं रहना है," जार्ज ने तुनक कर कहा "अब यह बकवास बंद करो ! अभी सब लोग आ रहे होंगे।"

साथ के स्नानागृह से पानी के निरंतर बहने और मज़दूरों के हाथ मुँह धोने की आवाज़ आ रही थी। जार्ज ने एक नज़र मेज़ पर फैले ताश के पत्तों को देखा। "चलो हम भी हाथ मुँह धो डालें," उसने कहा। फिर तनिक रुक कर बोला, "पर गंदे होने लायक अभी हमने किया ही क्या है?"

तभी एक लम्बा तगड़ा आदमी दरवाज़े की चौखट में आ खड़ा हुआ। उसकी बग़ल में उस का स्टेटसने हैट पिचका हुआ दबा था और वह अपने लम्बे भीगे काले बाल कंघी से पीछे को सँवार रहा था। उसकी वेश-भूषा भी दूसरों की सी ही थी। आसमानी रंग की पेंट और छोटी डेनिम जैकेट उस ने भी पहन रखी थी। जब वह अपने बाल बना चुका तो वह दरवाज़े से हिला और धीरे धीरे अंदर आया। उसकी चाल में कुछ ऐसा राजसी ठाठ था जो केवल शाहों और निपुण कारीगरों ही का हिस्सा है। वह बाड़े का निपुण-तम स्किनर था। बाड़े का शहज़ादा पन्द्रह बीस खच्चर वह एक साथ एक कतार में हांक सकता था। जुए के सिरे पर बैठी मक्खी को इस प्रकार अपने चाबुक से मार सकता था कि खच्चरों को तनिक भी आंच न आये। उसके स्वभाव में कुछ ऐसा गाम्भीर्य्य और सौम्यता थी कि जब वह आता था तो कमरे में एक दम मौन छा जाता था। बाड़े में काम करने वालों पर उसका कुछ ऐसा अधिकार था कि प्रेम हो अथवा राजनीति सभी विषयों पर उसकी बात आख़िरी होती।

यही था स्लिम! बाड़े का निपुण-तम स्किनर! उसका लम्बा बेडौल मुँह वयसहीन था। वह पैंतीस का भी हो सकता था और पचास का भी। उससे जितना कहा जाता था, उसके कान उससे अधिक सुनते

थे और उसकी धीर वाणी में कुछ ऐसा गहर-गम्भीर भाव रहता था जो उसके चिन्तन की गहनता का ही नहीं, बल्कि उस ज्ञान का भी पता देता था जो चिन्तन से परे की चीज़ है। उसके लम्बे पतले हाथ नृत्य-निपुण देवदासी के हाथों को भांति नरम और लचकीले थे।

उसने अपनी दबी पिचकी हैट बीच से ठीक की और उसे सिर पर रख लिया। फिर उसने सहानुभूति पूर्ण दृष्टि से उन दोनों की ओर देखा। "बाहर यहां से कुछ अधिक रोशनी है।" उसने धीरे से कहा। "यहां तो कुछ दिखायी ही नहीं देता। क्या तुम्हीं दोनों नये आदमी हो?"

"हम अभी आये हैं!" जार्ज ने उत्तर दिया।

"जौ भरने का काम करोगे?"

"मालिक ने यही करने को कहा है।"

स्लिम मेज़ के उस पार जार्ज के सामने एक बक्स पर बैठ गया। उस ने मौनरूप से ताश के उन पत्तों को देखा जो जार्ज ने अपने एकांत-खेल में फैला रखे थे। "तुम मेरी ही टोली में काम करो तो अच्छा है!" उस ने कहा। उसका स्वर बड़ा ही भला था। कुछ क्षण रुककर वह बोला, "मेरी टोली में दो ऐसे आदमी हैं जिन्हों ने जीवन में कभी जौ नहीं भरे। तुम दोनों ने कभी यह काम किया है?"

"अरे भई, खूब किया है," जार्ज बोला। "मैं तो ख़ैर अपने बारे में गर्व से कुछ नहीं कह सकता, पर यह कम्बख़्त तो अकेला इतना अनाज भर सकता है जितना दो जवान मिल कर नहीं भर सकते।

लैनी कभी स्लिम की ओर देखता था और कभी जार्ज की ओर। वह जैसे अपनी आंखों से बात चीत के रुख़ को समझ रहा था। अपनी प्रशंसा

पर वह आत्मतुष्टि से मुस्कराया। स्लिम ने आंखों ही आंखों में इस प्रशंसा के लिए जार्ज को दाद दी। वह मेज़ पर झुक गया और उस ने एक खुले पत्ते को तर्जनी से उड़ा दिया। "तुम दोनों इकट्ठे रहते हो?" उस ने पूछा। जार्ज को उसके स्वर में कुछ ऐसे मित्र-भाव का आभास मिला जो अपने आप मन में ऐसा विश्वास उत्पन्न कर देता है कि आदमी अपने गूढ़-तम भेद अनायास कह डालता है।

"हां," उस ने कहा "हम एक तरह एक दूसरे का ख़्याल रखते हैं।" उस ने उल्टे अंगूठे से लैनी की ओर संकेत किया, "यह उतना चालाक नहीं, लेकिन काम करने वाला गजब का है। अव्वल दर्जे का भला आदमी है। बस जरा ठस है। मैं अर्से से इसे जानता हूँ।

स्लिम ने जैसे जार्ज के आर पार देखा, "साथ-साथ इकट्ठे काम ढूंढने, करने और साथ साथ रहने वाले लोग अब नहीं मिलते।" उसने जैसे अपने आप से कहा, "न जाने क्यों? शायद इस साली दुनियां में सभी एक दूसरे से डरते हैं।"

"किसी जाने माने साथी के संग इकट्ठे काम ढूंढना और करना अकेले झख मारने से कहीं अच्छा है," जार्ज ने कहा।

तभी एक बड़े से पेट वाला हृष्ठ पुष्ठ आदमी अंदर आया। उसके सिर से अभी तक पानी निचुड़ रहा था। कदाचित वह भी सीधा स्नान-गृह से चला आ रहा था।

'हैलो स्लिम,' उस ने कहा और फिर रुक कर उन दोनों की ओर तकने लगा।

"ये दोनों अभी आये हैं," स्लिम ने परिचय के रूप में कहा।

"तुम लोगों से मिल कर बड़ी खुशी हुई" हृष्ठ पुष्ठ आदमी ने कहा, "मेरा नाम कार्लसन है।"

"और मेरा जार्ज मिल्टन," जार्ज बोला। "और यह है लैनी स्माल।"

"स्माल*" कार्लसन हँसा। "नन्हा मुन्ना तो यह नहीं। ज़रा भी नन्हा मुन्ना नहीं।" उस ने अपना मज़ाक दोहराया और फिर ज़रा सा हँस दिया। फिर वह स्लिम की ओर मुड़ा, "तुम्हारी कुतिया कैसी है स्लिम?" उस ने पूछा, "वह आज तुम्हारी घोड़ा-गाड़ी के नीचे दिखायी नहीं दी।"

"रात उसने झोल दिया है।"

"कितने बच्चे दिये?" कार्लसन ने पूछा।

"एक दम नौ!" चार "मैं ने उसी क्षण डुबा दिये।" स्लिम बोला, इतनों को वह कहां से दूध पिलाती!

"पांच रह गये बाकी?" कार्लसन बोला।

"हां, मैंने चुन कर बड़े बड़े रख लिये।"

"कैसे निकलेंगे वे बड़े होकर?"

"कह नहीं सकता," स्लिम बोला, "गड़रिया कुत्ते होंगे शायद। जिन दिनों वह बहार पै आयी थी, मैंने गड़रिया कुत्ते ही अधिकतर उस के पीछे देखे थे।

"हूँ! तो पांच पिल्ले हैं तुम्हारे पास?" कार्लसन बोला, "क्या सभी तुम रखोगे?"

"कह नहीं सकता। कुछ दिन तो रखना ही पड़ेगा, जब तक लूलू के थनों† में दूध है।"

---

*स्माल = नन्हा मुन्ना; †थनों = स्तनों

सोचते हुए कार्लसन बोला, "देखो स्लिम, मैं सोच रहा हूँ कि वह कैंडी का कुत्ता कम्बख्त इतना बुड्ढा हो गया है। कि मुश्किल से चल फिर सकता है। बुरी तरह गँधाता है। जब भी वह यहां आता है, दो तीन दिन बाद तक मुझे उस की दुर्गंध आती रहती है। तुम कैंडी से क्यों नहीं कहते कि वह अपने उस खुजली मारे कुत्ते को गोली मारे और तुम्हारे इन पिल्लों में से एक को पाल ले? मुझे एक मील से उस कम्बख्त की बदबू आने लगती है। दांत उसके नहीं, आंखें उसके नहीं। न वह खा सकता है, न देख सकता है। कैंडी उसे दूध पिलाता है तो वह जीता है। कुछ भी तो चबा नहीं सकता वह!"

जार्ज बड़े ध्यान से स्लिम की ओर तक रहा था। तभी सहसा बाहर बर्तनों की खनखनाहट का संगीत आरम्भ हो गया जो बड़ी त्वरित गति से उनकी ओर आता सुनायी दिया फिर जितनी अचानक वह शुरू हुआ था, उसी तरह समाप्त हो गया।

"खाना आ गया है" कार्लसन ने कहा।

बाहर एक टोली दरवाज़े के सामने से गुज़र गयी और कई तरह की आवाज़ें एक साथ अंदर आयीं।

स्लिम धीर-गम्भीर गति से उठा, "तुम लोग चल कर खाना खा लो, नहीं चन्द मिन्टों में रोटी का एक टुकड़ा भी वहां न बचेगा।"

कार्लसन ने एक ओर हटकर स्लिम के लिए रास्ता छोड़ दिया और फिर उस के पीछे दरवाज़े से निकला।

लैनी बड़ी उत्सुकता से जार्ज की ओर देख रहा था। बिखरे पत्तों को समेट कर एक जगह रखते हुए जार्ज ने कहा, "हां हां, मैंने सुन

"भूरा और स्फेद !" लैनी जोश से बोला।

"आओ चल कर खाना खायें !" जार्ज उठा "जाने उसके पास कोई भूरा सफ़ेद पिल्ला है भी कि नहीं।"

लैनी अपने तख्ते से नहीं हिला, "तुम उस से अभी पूछो जार्ज, कहीं वह और किसी को न मार दे।"

"हां हां, अब उठो चलो !"

लैनी ने अपना बिस्तर गोल किया और उठा। दोनों दरवाज़े की ओर मुड़े। अभी वे दरवाज़े तक पहुँचे भी न थे कि कर्ली अंदर घुसा।

"तुम ने किसी लड़की को यहां देखा है ?" उसने सक्रोध पूछा।

अन्यमनस्कता से जार्ज ने उत्तर दिया "शायद आध घंटा पहले।"

"क्या कर रही थी वह यहां ?"

जार्ज चुपचाप खड़ा उस छोटे से क्रुद्ध व्यक्ति को देखता रहा। फिर उसने अपमान जनक स्वर में कहा, "कहती थी कि वह तुम्हें ढूँढने की 'कोशिश' कर रही है।"

जार्ज के स्वर में कुछ ऐसा अपमान भरा था कि कर्ली की आंखों में खून उतर आया। उस ने जैसे पहली बार जार्ज को देखा। क्षण भर खड़ा वह उसकी लम्बाई-चौड़ाई, उसके सीने की मज़बूती और उस की कमर का कसाव देखता रहा। "किधर गयी वह यहां से ?" आख़िर उस ने पूछा।

"क्या मालूम !" जार्ज बोला, "मैं औरतों के चक्कर में नहीं पड़ता !"

कर्ली ने एक बार क्रोध से उसकी ओर देखा और मुड़ कर जल्दी से बाहर निकल गया।

"मुझे डर है कहीं मैं स्वयं ही इस हरामी से न उलझ पड़ूं !" जार्ज

ने कहा। "मुझे इस साले की अकड़ से चिढ़ है। भगवान के लिए चलो। जाने वहां खाने को कुछ बचा भी होगा कि नहीं।"

दोनों बाहर निकल गये। सूरज का प्रकाश एक क्षीण रेखा के रूप में खिड़की के नीचे सिमट गया था। दूर प्लेटों और चमचों की खनखनाहट सुनायी दे रही थी।

क्षण भर बाद कैंडी का वही प्रागैतिहासिक कुत्ता लँगड़ाता सा अंदर आया। नीम-अंधी आंखों से निमिष भर वह कमरे में देखता रहा। फिर उसने एक दो बार सूँघा, फिर वहीं लेट गया और उसने अपना सिर अपने पंजों में रख लिया। तभी कर्ली ने एक वार फिर अंदर झांका और क्षण भर वहीं चौखट में खड़ा देखता रहा। कुत्ते ने सिर उटाया, लेकिन जव कर्ली कंधे झटकाता निकल गया तो उस ने अपना खुजली मारा सिर फिर पंजों में रख लिया।

तीन

यद्यपि मजदूरों के उस तख्तों वाले दालान की खिड़कियों में से बाहर शाम की चमकीली धूप दिखायी पड़ रही थी, पर अंदर कमरे में गोधूलि का अँधेरा था। खुले हुए दरवाजे में से जुए के ज़ोर शोर से चलने का स्वर और कभी कभी गाली गलौज़ की आवाज़ें सुनायी पड़ जाती थीं।

स्लिम और जार्ज दोनों साथ-साथ धीरे-धीरे तिमिर की गोद में जाते हुए उस दालान में दाखिल हुए। स्लिम ने मेज़ के ऊपर एक टीन के शेड वाले बिजली के लैम्प को जला दिया। मेज़ रोशनी से जगमगा उठी। शेड के कारण रोशनी एकदम सीधी मेज़ पर पड़ रही थी और कमरे के कोनों में अँधेरा ही बना हुआ था। स्लिम एक बक्से पर बैठ गया और जार्ज उसके सामने बैठा।

"उसमें कोई बात नहीं," स्लिम ने कहा। "मुझे तो हर हालत में उन्हें डुबाकर मारना पड़ता। उस सम्बंध में मुझे धन्यवाद देने की ज़रूरत नहीं।"

जार्ज ने कहा, "तुम्हारे लिए शायद यह कोई बात नहीं, पर उसके लिए यह बहुत बड़ी बात है। परमात्मा की कसम, मालूम नहीं हम कैसे उसे यहां सुला सकेंगे। वह तो उनके साथ बखारे में सोने को तैयार होगा। उन पिल्लों के साथ बक्स में बंद हो जाने में भी उसे कोई आपत्ति न होगी, बल्कि उसे रोकना शायद मुश्किल होगा।"

"अरे कोई बात नहीं," स्लिम ने दोहराया "हां, उसके बारे में तुम्हारी बात सच्ची थी। कुछ ठस ज़रूर है, पर ऐसा काम करने वाला मैंने नहीं देखा। उसका जोड़ीदार मर गया होता। उसके साथ काम करते करते ऐसा हांफने लगा था वह। उसकी बराबरी का कोई नहीं है। भगवान कसम मैंने इतना दमदार आदमी पहले कभी नहीं देखा।"

जार्ज ने गर्व से कहा, "लैनी को बस बता दो, और यदि काम में सोचने-विचारने की ज़रूरत नहीं तो वह सफ़ा कर देगा। वह अपने आप सोचकर कोई काम नहीं कर सकता। पर बता देने के बाद काम करने में उसका कोई जोड़ नहीं।"

बाहर लोग खुशी मना रहे थे। ठहाकों का एक खनखनाता सा स्वर अन्दर आया।

स्लिम थोड़ा पीछे को हट गया, ताकि रोशनी उसके चेहरे पर न पड़े। "कैसी अजब बात है, तुम और वह दोनों हर जगह साथ-साथ

स्लिम का यह प्यारा ढंग था। वह बात ऐसे शुरू करता कि दूसरा व्यक्ति अपना दिल खोलकर उसके सामने रख देता था।

"इसमें अजब क्या है?" जार्ज ने कुछ झिझकते हुए पूछा।

"कह नहीं सकता। पर आजकल शायद ही कोई दो आदमी साथ-साथ आते-जाते हों। तुम तो जानते हो, मज़दूर लोग कैसे हैं। आये, अपना तख्ता सम्हाला, महीने भर काम किया और फिर काम छोड़ कर चल दिये। एकदम अकेले। कोई किसी के लिए रत्ती भर परवा नहीं करता। यह बड़ा अजब सा लगता है कि उस जैसा बूदम और तुम्हारा जैसा होशियार आदमी एक साथ रहें।"

"वह बूदम नहीं है," जार्ज बोला। "बस चुप रहता है। पर पागल नहीं है। और मैं भी कोई ऐसा होशियार नहीं हूँ, नहीं तो मैं पचास टकों और खाने रहने पर जौ न ढो रहा होता। यदि मैं तेज़ होता, ज़रा भी होशियार होता, तो मेरा भी अपना छोटा-सा घर होता, मेरी अपनी खेती होती। सब काम करने के बाद धरती जो देती है वह किसी और के बदले मुझे मिला करता।" जार्ज चुप हो गया। वह और बातचीत करना चाहता था। पर स्लिम न उसे प्रोत्साहित कर रहा था न निरुत्साहित। वह बस सुनने को तैयार, शांत बैठा था।

आखिर जार्ज बोला, "मेरा उसका साथ-साथ रहना कुछ ऐसा अजब नहीं है। वह और मैं दोनों आबर्न में पैदा हुए थे। मैं उसकी क्लारा चाची को जानता था। जब वह बच्चा था तभी से उसने उसे पाला था। जब उसकी चाची मर गयी तो लैनी आकर मेरे साथ काम करने लगा। थोड़े दिनों में एक दूसरे के साथ रहने की आदत पड़ गयी।"

"हूँ!" स्लिम ने केवल हुंकारा भरा।

जार्ज ने नज़र उठा कर स्लिम को देखा। उसकी देवताओं जैसी, शांत आंखें उसी के ऊपर गड़ी हुई थीं। "कैसा अजब है," जार्ज बोला, "मैं उसका बहुत मज़ाक उड़ाया करता था। वह ऐसा ठस है कि अपनी देखभाल भी न कर पाता। मैं इसी लिए उसकी हँसी उड़ाया करता, पर वह इतना सीधा था, उसे यह भी मालूम न पड़ता कि उसका मज़ाक़ बनाया जा रहा है। मैं ख़ूब मज़ा लेता। उसके सामने मैं बड़ा होशियार लगता। मेरे आदेश पर वह कुछ भी कर सकता था। यदि मैं उसे किसी पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाने को कहता तो वह तत्काल चल देता। बाद में वह सब कुछ उतना अच्छा न लगता। वह भी कभी उस सम्बंध में नाराज़ न होता। मैंने कई बार उसे बहुत पीटा है। वह यदि चाहता तो बायें हाथ से मेरी हड्डी-पसली बराबर कर देता, पर उसने कभी मेरी ओर उँगली तक नहीं उठायी।" जार्ज के स्वर में कुछ ऐसा भाव आ गया मानो वह अपनी भूलों को स्वीकार कर रहा हो। "जानते हो क्यों मैंने वह सब बंद कर दिया?" उसने कुछ रुक कर कहा, "एक दिन हम कुछ लोग सैक्रामैन्टो नदी के किनारे खड़े थे। मैं उस दिन बड़े रंग में था। मैंने मज़ाक़ में लैनी को आदेश दिया "लैनी कूदो" और वह कूद पड़ा। तैरना वह एक हाथ भी न जानता था। वह डूबने से बाल बाल बचा। बड़ी मुश्किल से हम उसे निकाल पाये। और वह उलटा मुझे धन्यवाद देने लगा कि मैंने उसे नदी से निकाल लिया। यह वह एक दम भूल गया था कि मैंने ही उसे कूदने को कहा था। जो भी हो, उस दिन से मैंने यह सब मज़ाक छोड़ दिया।

"अच्छा आदमी है वह," स्लिम बोला। "अच्छा होने के लिए अकल की इतनी ज़रूरत नहीं। कभी-कभी तो मुझे लगता है कि बात

वास्तव में बिल्कुल उलटी है। किसी भी तेज़ होशियार आदमी को ले लो, मुश्किल से अच्छा निकलेगा।"

जार्ज ने स्लिम की बात सुनते हुए बेख़्याली में ताश के पत्तों की गड्डी बनायी और उन्हें योंही फेंटने लगा। बाहर से, उनके साथियों के जुआ खेलने और शोर मचाने की आवाज़ फिर आयी। दीवार में जहाँ खिड़की थी वहाँ साँझ की रोशनी अभी तक एक चौकोर सी बना रही थी।

"मेरे और कोई नहीं है," जार्ज पत्ते फेंटते हुए बोला "मैंने लोगों को देखा है जो अकेले बाड़ों पर नौकरी करते फिरते हैं। वे कुछ बना नहीं पाते। उन्हें कुछ रस नहीं मिलता। थोड़े दिन बाद उनमें कमीनापन आ जाता है। वे ऐसे स्वार्थी हो जाते हैं कि हर घड़ी मरने मारने को तैयार रहते हैं।

"हां, उनमें कमीनापन आ जाता है," स्लिम ने हामी भरी। "वे ऐसे अपने में लीन हो जाते हैं कि किसी से बात तक करना पसंद नहीं करते।"

"यह ठीक है कि लैनी के कारण ज़्यादातर तो मुझे परेशानी ही उठानी पड़ती है।" जार्ज बोला। "पर आदमी अपने साथी की संगति का आदी हो जाता है और फिर उसे छोड़ने को उसका मन नहीं होता।"

"वह स्वार्थी नहीं है," स्लिम ने कहा। "मैं दावे से कह सकता हूं, लैनी स्वार्थी नहीं है।"

"नहीं, स्वार्थी वह बिल्कुल नहीं है। पर वह इतना सीधा और ठस है कि हर वक़्त किसी न किसी झमेले में पड़ जाता है। वीड

में क्या हुआ था.....'' सहसा जार्ज बात करते करते रुक गया। ताश फेंटते हुए गड्डी दो हिस्सों में उसके हाथों में रह गयी। वीड की बात मुँह से निकल जाने पर वह घबरा गया। डरी सी आंखों से स्लिम की ओर देखते हुए उसने धीरे से पूछा, "किसी से कहोगे तो नहीं?"

"क्या किया उसने वीड में?" स्लिम ने शांत स्वर में पूछा।

"कहोगे तो नहीं?......नहीं, तुम नहीं कहोगे किसी से।"

"वीड में उसने क्या किया?" स्लिम ने फिर पूछा।

"क्या बताऊँ, उसने एक लड़की को लाल पोशाक पहने देखा। कूड़ मग़ज़ और जड़ तो वह अव्वल दर्जे का है। जो चीज़ उसे अच्छी लगती है वह उसे छू कर देखना चाहता है। उसके परस का आभास भर पाना चाहता है। उसने आगे बढ़ कर इस लाल पोशाक को छूने की कोशिश की। पर उस लड़की ने चिल्लाना शुरू कर दिया। लैनी एक दम घबरा गया। उसकी स्कर्ट का दामन उसने और भी कस कर पकड़ लिया। और कुछ उसकी समझ में आया ही नहीं। लड़की थी कि चिल्लाये जाती थी और यह था कि उसकी स्कर्ट छोड़ न पा रहा था। मैं थोड़ी ही दूर पर था। मैंने चीख़-पुकार सुनी। दौड़ा आया। पर तब तक लैनी इतना डर गया था कि बस वह कस के स्कर्ट को पकड़े हुए था। मैंने वहीं से बाड़े की एक लकड़ी उखाड़ी और उसके सिर पर जमायी कि वह उसे छोड़ दे। पर वह इतना घबरा गया था कि कपड़े को छोड़ ही न पा रहा था और वह कम्बख़्त कितना तगड़ा है, यह तो तुम जानते ही हो।"

स्लिम की आँखें स्थिर और अचल थीं। उसने बहुत धीरे से सिर हिलाया, "फिर क्या हुआ ?"

जार्ज फिर पत्ते फेंटने लगा था। बोला, "फिर क्या, उस लड़की ने पुलिस चौकी में जा कर शोर मचाया कि उसके साथ बलात्कार किया गया है। वीड वालों ने सुना तो क्रोध के मारे जो जिसके हाथ में आया उठा कर लैनी के होश दुरुस्त करने को चल दिये। सारा दिन हम एक रजबहे के पानी में छिपे बैठे रहे। केवल हमारा सर पानी के ऊपर था, जिसे किनारे की घास लोगों की दृष्टि से बचाये थी। उसी रात हम लोग यहां भाग आये।"

स्लिम क्षण भर चुप बैठा रहा। "उस लड़की को और तो कुछ नहीं कहा उसने ?" स्लिम ने अंत में पूछा।

"अरे, बिल्कुल नहीं। लेकिन अपनी उस मूर्खता से इसने डरा ज़रूर दिया उसे। यदि लैनी मुझे इस तरह पकड़ले तो मैं स्वयं डर जाऊँ। पर इसने उस लड़की को और कुछ नही कहा। वह तो बस उस लाल पोशाक को छूना चाहता था, जैसे वह उन पिल्लों को दिन-रात सहलाते रहना चाहता है।"

"नहीं लैनी कमीना नहीं है," स्लिम ने कहा, "कमीने आदमी को मैं मील भर से पहचान लेता हूं।"

"निश्चय ही नही है। और मैं उससे जो कहूं, वह उसे...."

दरवाज़े में से लैनी अंदर आ गया। वह अपना नीला कोट अपने कंधों के ऊपर डाले हुए और तनिक झुका सा चल रहा था।

"ओहो लैनी, कहो अब तुम्हें पिल्ला कैसा लगता है ?" जार्ज ने पूछा।

लैनी ने जैसे एक ही सांस में कहा, "वह भूरा और सफ़ेद है—ठीक जैसा मुझे चाहिए था।" वह सीधा अपने तख्ते पर जाकर लेट गया और दीवार की ओर मुँह करके उसने अपने पैर सिकोड़ लिये।

जार्ज ने तारा को मेज़ पर फेंक दिया। "लैनी" उसने तेज़ी से मुड़ कर कहा।

लैनी ने अपनी गरदन घुमा कर देखा। "एँ? क्या है जार्ज?"

"मैंने तुमसे कहा था तुम उस पिल्ले को यहां न लाने पाओगे।"

"कौन सा पिल्ला जार्ज?" लैनी ने बड़े भोलेपन से पूछा।

जार्ज जैसे एक ही डग में वहां पहुँचा। कंधे से पकड़ उसने लैनी को लुढ़का दिया और झुक कर उसने वह छोटा सा पिल्ला उस जगह से उठा लिया जहां लैनी उसे अपने पेट से चिपकाये सहला रहा था।

लैनी तेज़ी से उठ कर बैठ गया। "मुझे दे दो जार्ज!"

जार्ज चिल्लाया, "इसी दम उठो और इस पिल्ले को वहीं ले जाओ जहाँ से तुम इसे लाये हो। यह अपनी मां के पास सोयेगा। क्या तुम उसे मार डालना चाहते हो? अभी कल रात तो पैदा यह हुआ है और तुम इसे उसकी मां की गोद से ले आये हो। तुम उसे रख आओ! नहीं तो मैं अभी स्लिम से कहता हूं कि वह इसे तुम से वापस ले ले।"

लैनी ने बड़ी विवशता से हाथ फैलाया। प्रार्थना के स्वर में उसने कहा, "मुझे देदो इसे जार्ज। मैं इसे वहीं रख आता हूं। मैं इसे कुछ कष्ट न देना चाहता था जार्ज, विश्वास करो, मैं इसे कष्ट न देना चाहता था। बस मैं इसे केवल ज़रा सा सहलाना चाहता था।"

जार्ज ने पिल्ला उसे वापस दे दिया। "अच्छी बात है। तुम इसे

जल्दी वापस रख आओ! और देखो, अब इसे वहां से बाहर मत लाना। नहीं तो यह मर जायगा।"

लैनी पिल्ला उठा कर कमरे से जैसे भाग गया।

स्लिम अपनी जगह से हिला नहीं। उसकी स्थिर आंखों ने दरवाज़े तक लैनी का पीछा किया। "हे भगवान" उसने कहा। "यह तो बिल्कुल बच्चा है।"

"बिल्कुल बच्चा! ज़रा भी बुरा नहीं कर सकता किसी का।" जार्ज ने समर्थन किया, "बच्चों ही की तरह! हां, तगड़ा जरूर है। मैं शर्त बदता हूँ वह आज यहां सोने नहीं आयगा। बखारे ही में उस बक्स के बगल में सो रहेगा। सोता रहे। वहां वह कोई नुक्सान नहीं करेगा।"

बाहर अब लगभग अंधकार छा गया था। बूढ़ा कैंडी अंदर आया और अपने तखते की ओर चल दिया। उसके पीछे-पीछे उसका खुजली मारा बूढ़ा कुत्ता लड़खड़ाता सा चला आ रहा था।

"हैलो स्लिम, हैलो जार्ज", उसने अपने तखते की ओर जाते हुए कहा, "तुम दोनों ने खेल में भाग नहीं लिया?"

"रोज़-रोज़ का जुआ खेलना मुझे पसंद नहीं!" स्लिम बोला।

"तुम में से किसी के पास थोड़ी-सी ह्विस्की है?" कैंडी ने कुछ उमठते से पूछा। मेरे पेट में बड़ा दर्द हो रहा है।"

"ह्विस्की", स्लिम ने उसी शान्त भाव से कहा "बूँद भी नहीं। होती तो मैं स्वयं पीता।"

"बड़ी ज़ोर का दर्द है पेट में," कैंडी बोला। "उन सुसरे शलजमों ने कर दिया। मुझे खाते समय ही लग रहा था कि ये साले पेट में गड़बड़ मचायेंगे।"

भारी बदन का कार्लसन बाहर के अँधेरे में से अंदर आया। वह दालान के दूसरे कोने तक गया और उसने दूसरी बत्ती जला दी। "यहाँ तो कम्बख़्त क़यामत का अँधेरा है" वह बोला। "वह नीग्रो साला ख़ूब खेलता है।" उसने फ़तवा दिया।

"हाँ, बहुत होशियार है वह", स्लिम बोला।

"ज़रूर होशियार है।" कार्लसन ने कहा। "और किसी को जीतने का मौक़ा ही नहीं देता......"वह एकाएक चुप होकर हवा को सूँघने लगा, और फिर सूँघते-सूँघते उसने तख़्ते के नीचे बूढ़े कुत्ते को देख लिया। "इस साले कुत्ते से कितनी बदबू आती है! इसे यहां से निकाल बाहर करो कैंडी! बुड्ढे कुत्ते से ज़्यादा बदबूदार कोई चीज़ नहीं। इसे यहां से निकालना ही पड़ेगा।"

कैंडी अपने तख़्ते के किनारे तक लुढ़क आया। उसने हाथ बढ़ा कर अपने उस प्राचीन कुत्ते को थपथपाया और फिर कुछ माफ़ी मांगता-सा बोला, "मैं इसका इतना आदी हो गया हूँ कि मुझे इसकी बदबू नहीं आती।"

"तुम्हें नहीं आती तो क्या इसका मतलब है कि हमारी नाक भी सड़ गयी है। मैं इसकी बदबू और अधिक नहीं सहन कर सकता।" कार्लसन चिल्लाया। "इसके चले जाने के बाद भी देर तक कमरा बू से भारी रहता है।" वह अपने भारी-भारी क़दमों से चलता हुआ कुत्ते के पास आगया और उसे देखने लगा। "एक भी दांत नहीं इसके", उसने कहा। "गठिया से इसका सारा बदन ऐंठ गया है। यह तुम्हारे किसी काम का नहीं। तुम्हारे क्या, यह अपने भी किसी काम का नहीं। तुम इसे गोली क्यों नहीं मार देते, कैंडी?"

बूढ़ा कुछ परेशानी से कुनमुनाया, "इतने दिन से मेरे पास है।" उसने कहा "छोटा-सा पिल्ला था जब मैंने इसे पाला। इसे साथ लेकर मैंने भेड़ें चरायीं।" उसके स्वर में कुछ गर्व की मात्रा आ गयी। "आज इसे देख कर तुम्हें विश्वास नहीं होगा, पर मैंने आज तक इससे अच्छा 'गड़रिया कुत्ता' नहीं देखा।"

जार्ज ने कहा, "मैंने वीड में एक गड़रिये के पास एक साधारण ढग कुत्ता देखा था; वह बड़ी सुन्दरता से भेड़ों की रखवाली करता था। शायद गड़रिया कुत्तों को देख कर सीख गया होगा।"

कार्लसन टलने वाला न था। "देखो कैंडी!" उसने कहा, "यह कुत्ता बड़ी तकलीफ़ में है यदि तुम बाहर ले जाकर इसके सिर की पिछली ओर गोली मार दो" (उसने झुककर बताया, कि कहाँ पर गोली मारे) तो इसे मालूम भी न होगा।"

कैंडी ने एक दुखभरी दृष्टि चारों ओर डाली। "न, यह मुझसे नहीं होगा। मेरा इसका इतने दिनों का साथ है।"

"यह स्वयं इतनी तकलीफ़ पाता है," कार्लसन ने ज़िद करते हुए कहा। "और इसके बदन से ऐसी बदबू आती है कि मुश्किल हो जाती है। एक बात सुनो। मैं मार दूँगा इसे गोली। तुम्हें वह सब नहीं करना पड़ेगा।"

कैंडी ने अपने पैर तख़्ते के बाहर निकाल लिये। अपने गलमुच्छों को उसने बेचैनी से खुजाया। जार्ज ने देखा उसके हाथ तनिक कांप रहे थे। "मैं आदी हो गया हूँ इसका।" उसने धीमे से कहा। "पिल्ला सा था जब से यह मेरे पास है।

"इस हालत में जिंदा रखकर तुम इस पर कुछ दया नहीं कर रहे।" कार्लसन ने कहा। "देखो स्लिम की कुतिया ने हाल ही में पिल्ले दिये हैं। मुझे विश्वास है स्लिम उसमें एक पिल्ला तुम्हें पालने को दे देगा। दे दोगे न स्लिम ?"

स्लिम स्थिर भाव से बुड्ढे कुत्ते को तक रहा था। "हाँ", वह बोला। "चाहो तो तुम भी एक पिल्ला मुझसे ले सकते हो।" लगता था जैसे उसका ध्यान कहीं और था। बरबस अपने आपको उधर से हटाकर वर बोल रहा था। "कार्ल का कहना ठीक है कैंडी। वह कुत्ता खुद अपने लिए मुसीबत है। मैं चाहता हूँ जब मैं भी ऐसा ही बुड्ढा और अपाहिज हो जाऊँ तो कोई मुझे गोली मार दे !

कैंडी ने बड़ी बेबसी से उसकी ओर देखा, क्योंकि स्लिम की राय तो कानून के बराबर थी "गोली से शायद इसे कष्ट होगा", उसने झिझकते हुए कहा। "इसकी देख रेख करने में मुझे किसी प्रकार की तकलीफ़ नहीं।"

"मैं इसे गोली ऐसे मारूँगा कि इसे कुछ पता नहीं चलेगा।" कार्लसन बोला, "बन्दूक को मैं ठीक यहाँ रक्खूँगा", उसने अपने पैर के अँगूठे से संकेत करते हुए कहा। "ठीक सिर के पीछे! यह हिल भी न पायगा।"

कैंडी ने एक एक करके सबके चेहरों की ओर सहायतार्थ देखा ! बाहर उस समय बिल्कुल अँधेरा छा चुका था। एक युवक मज़दूर अंदर आया। उसके ढालू कंधे आगे की ओर झुके हुए थे और वह अपनी एड़ियों पर ज़ोर देते हुए चल रहा था जैसे अनाज का अदृश्य बोरा अब भी उसकी पीठ पर हो। अपने तखते के पास पहुँच कर उसने अपना टोप आलमारी पर रखा और फिर वह उस में से एक पत्रिका निकाल कर

मेज़ के पास रोशनी में ले आया। "मैंने यह दिखाया था तुम्हें स्लिम ?" उसने पूछा।

"क्या दिखाया था मुझे ?"

युवक ने पत्रिका को उलट कर मेज़ पर रक्खा और उँगली से इशारा करते हुए कहा, "यह देखो, पढ़ो।"

स्लिम उसके ऊपर झुक गया। "पढ़ो" ! युवक बोला, "जोर-जोर से पढ़ कर सुनाओ।"

स्लिम ने धीरे-धीरे पढ़ा :

'प्रिय सम्पादक महोदय, मैं छह साल से आपकी पत्रिका पढ़ता आ रहा हूँ और मैं समझता हूँ कि इस समय सबसे अच्छी पत्रिका यही है। मुझे पीटर रैंड की कहानियाँ अच्छी लगती हैं। मैं समझता हूँ वह हम लोगों की कल्पना को छूता है। 'काले घुड़सवार' जैसी चीजें और होनी चाहिएँ। मैं बहुत चिट्ठियाँ नहीं लिखता। पर मैंने सोचा कि आपको लिख कर बता दूँ कि आपकी पत्रिका सबसे अच्छी है और उसे पढ़ कर पैसे वसूल हो जाते हैं।"

स्लिम ने सिर उठा कर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। "यह मुझे किस लिए पढ़ा रहे हो ?"

ह्विट बोला, "आगे पढ़ो। नीचे नाम देखा है ?"

स्लिम ने पढ़ा। नीचे लिखा था—"तुम्हारी सफलता चाहने वाला, विलियम टैनर।" उसने फिर दृष्टि उठाकर ह्विट की ओर देखा। "तो फिर ?"

ह्विट ने बड़े रौब के साथ पत्रिका बंद कर दी। "तुम्हें बिल टैनर की याद नहीं रही ? तीन महीने पहले यहाँ तो काम करता था वह ?"

स्लिम सोचने लगा......"वह ठिगना सा आदमी ?" उसने पूछा। "जो हल चलाया करता था ?"

"हाँ, हाँ, वही," ह्विट जोर से बोला। "वही !"

"तुम्हारा ख्याल है उसी ने लिखी है यह चिट्ठी ?"

"हाँ हाँ उसी ने लिखी है। बिल और मैं एक दिन यहीं बैठे थे। बिल के हाथ में उन्हीं दिनों आया हुआ पत्रिका का एक अंक था। वह उसके पन्नों में कुछ ढूँढ़ रहा था। मैंने पूछा तो बोला 'एक चिट्ठी लिखी थी सम्पादक को ! शायद उसने उसे इस अंक में छाप दिया हो !' पर उसमें थी नहीं। बिल बोला, 'शायद फिर कभी बाद में छापें।' और वही किया सम्पादक ने। अब छापी है जाकर।"

"तुम ठीक कहते हो," स्लिम बोला। "सम्पादक ने बिल की चिट्ठी सम्हाल रखी थी।"

जार्ज ने अपना हाथ पत्रिका के लिए बढ़ाते हुए कहा, "देखें ज़रा।"

ह्विट ने वह जगह फिर ढूँढ़ निकाली। पर उसने वह पत्रिका अपने हाथ से छोड़ी नहीं। अपनी उँगली से उसने उस छपी हुई चिट्ठी को दिखाया और फिर उसे ले जाकर होशियारी से अपनी आलमारी के खाने में रख दिया। "न जाने बिल ने इसे देखा भी है या नहीं," वह बोला। "बिल और मैं उस मटर वाले खेत में काम करते थे। हम दोनों हल चलाते थे। बिल बहुत ही अच्छा आदमी है।"

इस सारी बातचीत में कार्लसन ने कोई भाग नहीं लिया। वह अभी तक अपनी दृष्टि का भाला बुड्ढे कुत्ते की ओर ताने था। कैंडी का ध्यान भी बातचीत में न था। उसकी बेचैन दृष्टि भी कार्लसन की ओर लगी थी। आखिरकार कार्लसन ने कहा, "तुम कहो तो मैं अभी

ले जाकर इस बेचारे की मुसीबत खतम कर दूं। इसके ही नहीं हमारे भी पाप कटें। अब कोई और चारा नहीं है। न यह खा सकता है, न देख सकता है, न पग पग पर ठोकर खाये बिना चल सकता है।"

कैंडी ने कुछ आशा के साथ कहा, "पर तुम्हारे पास बंदूक कहाँ है?"

"बन्दूक की क्या जरूरत है मेरे पास पिस्तौल है।"

"अच्छा तो कल सही फिर।" कैंडी ने तिनके का सहारा लिया। "कल तक और सबर करो।"

"पर इसका कोई कारण भी हो। सोच लिया है तो खतम करो यह झंझट। वह अपने तख़्ते पर गया। नीचे से उसने अपना थैला खींचा और उसमें से एक पिस्तौल निकाल लाया। "इसकी बदबू के मारे तो यहाँ सोना मुश्किल है।" पिस्तौल उसने अपनी पतलून की पीछे वाली जेब में डाल ली।

कैंडी बहुत देर तक स्लिम की ओर देखता रहा कि किसी तरह यह बात टल जाय। पर स्लिम ने कोई आशा नहीं दिलायी। आखिर कैंडी ने हताश होकर धीमे-से कहा, "अच्छी बात है, ले जाओ इसे।" कुत्ते की ओर उसने आँख उठा कर देखा तक नहीं। वह अपने तख़्ते पर पीठ के बल लेट गया। अपनी बाहें मोड़ कर उसने सिर के नीचे रख लीं और छत की ओर तकने लगा।

कार्लसन ने अपनी जेब से चमड़े का एक पतला चाबुक निकाला। उसका एक सिरा उसने उस बुड्ढे कुत्ते की गर्दन में बाँध दिया। कैंडी के अतिरिक्त सभी लोग उधर दृष्टि जमाये थे। "आओ बेटे अब उठो," कार्लसन ने धीमे-से कहा। कैंडी से उसने जैसे क्षमा माँगते हुए कहा,

"इसे मालूम तक न होगा।" कैंडी न तो हिला-डुला और न उसने कुछ उत्तर ही दिया। मुटर-मुटर वह छत की ओर तकता रहा। कार्लसन ने चाबुक खींचा, "आओ बेटे अब उठो!" उसने दोहराया। बूढ़ा कुत्ता धीरे-धीरे बड़ी कठिनाई से उठा और चाबुक से खिंचा हुआ सा चल पड़ा।

"कार्लसन"! स्लिम ने उसे रोका।

"हाँ!"

"मालूम है, क्या करना है तुम्हें!

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"एक फावड़ा लेते जाना," स्लिम ने कहा।

"हाँ हाँ, ज़रूर! मैं समझ गया।" वह कुत्ते को लेकर बाहर के अंधकार में लीन हो गया।

जार्ज उसके पीछे-पीछे दरवाजे तक गया और दरवाज़ा बंद करके उसने अर्गल को धीमे से लगा दिया। कैंडी अपने बिस्तर पर निश्चल, छत की ओर तकता हुआ पड़ा था।

स्लिम ने ऊँचे स्वर में कहा, "मेरी गाड़ी के अगले खच्चरों में से एक का खुर खराब हो गया है। कहीं से तारकोल लेकर लगानी पड़ेगी उस पर!" उसकी आवाज़ कुछ घिसटती-सी लग रही थी। बाहर सन्नाटा था। कार्लसन के पैरों की चाप अब सुनायी न दे रही थी। कमरे में निस्तब्धता छा गयी। देर तक वह निस्तब्धता जैसे किसी रुकी घटा की तरह कमरे पर छायी रही।

फिर जार्ज ने पहली बूंद के साहस से उस निस्तब्धता को तोड़ा। वह तनिक हँसा "मैं शर्त बदता हूँ, लैनी वहां बखारे में ही अपने

पिल्ले के पास होगा। उसे पिल्ला मिल गया है, अब उसे यहाँ आने की चाह नहीं।" उसकी हँसी और बात करने का ढंग जाने क्यों कुछ अजीब अजीब सा लग रहा था ।

"तुम चाहो तो कैंडी, उनमें से एक पिल्ला तुम भी ले लो" स्लिम ने कहा। कैंडी ने कोई उत्तर नहीं दिया। कमरे में फिर सन्नाटा छा गया वह जैसे रात का सन्नाटा था जो कमरे में बरबस घुस आया था।

जार्ज ने पूछा, "कोई ताश खेलना चाहता है ?"

"मैं खेलूँगा थोड़ी देर"। ह्विट बोला।

वे रोशनी के नीचे मेज़ पर एक दूसरे के आमने सामने बैठ गये, पर जार्ज ने पत्ते नहीं फेंटे। उस ने ताश के पत्ते उठाये। गड्डी बनायी और उसका एक किनारा बायें हाथ में लेकर दायें से दूसरे किनारे को फड़फड़ाने लगा। पर उस ज़रा सी आवाज़ ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। पत्तों का फड़फड़ाना उसने बंद करके गड्डी को फिर मेज पर रख दिया। दालान में फिर घोर निस्तब्धता छा गयी। एक मिनिट बीता, फिर एक और मिनिट । कैंडी एक दम निश्चल पड़ा छत की ओर मुटर मुटर तक रहा था। स्लिम ने क्षण भर उसकी ओर देखा और फिर आँखें झुका, अपने हाथों को देखने लगा। उसने एक हाथ को दूसरे से दबा लिया और उसे दबाये चुप चाप देखता रहा। फर्श के नीचे से कुछ ऐसी आवाज़ आयी जैसे कोई जानवर कुछ कतर रहा हो। सब ने बड़ी कृतज्ञता से उस ओर देखा । केवल कैंडी ही निर्निमेष छत की ओर तकता रहा।

"लगता है जैसे नीचे कोई चूहा है," जार्ज बोला । "हमें एक चूहे दानी लाकर रखनी चाहिए।"

"कार्लसन को इतनी देर क्यों लग रही है?" ह्विट फूट पड़ा "अच्छा तुम पत्ते बाँटो।" उसने कहा, "बाँटो न! ऐसे क्या खेल होगा?"

जार्ज ने फिर पत्तों की गड्डी उठायी और उनकी पीठ को देखने लगा। कमरे में फिर सन्नाटा छा गया।

दूर पर गोली चलने की आवाज़ आयी। सब लोगों ने तेज़ी से बूढ़े की ओर देखा। मानो एक ही झटके से उन सब के सिर उसी ओर मुड़ गये।

क्षण भर तक कैंडी छत की ओर तकता रहा। फिर उसने लुढ़क कर दीवार की ओर करवट ले ली और चुप पड़ा रहा।

जार्ज ने उस सन्नाटे के पूरी तरह तोड़ते हुए ज़ोर-ज़ोर से पत्ते फेंटे और उन्हें बांटने लगा। ह्विट ने नंबर लिखने का तखता पास खींच लिया। रंगवार पत्ते लगाते हुए बोला, "लगता है तुम लोग यहां सचमुच काम करने ही आये हो।"

"क्या मतलब?" जार्ज ने पूछा।

ह्विट हँसा।"अरे, तुम लोग शुक्रवार को आये। इतवार के पहले तुम्हें दो दिन तो काम करना ही पड़ेगा।"

"तुम्हारा मतलब मैं नहीं समझा," जार्ज ने कहा।

ह्विट फिर हँसा, । "यदि तुमने इन बड़े-बड़े बाड़ों में किया होता तो तत्काल समझ जाते। जो लोग बाड़ों को देखने भर के लिए आते हैं, वे शनि की दोपहर को आते हैं; शनि की रात और इतवार का पूरा दिन पेट भर खाना खाते हैं और सोमवार को पत्ता भी हिलाये बिना आराम से खिसक जाते हैं। पर तुम तो शुक्र की दोपहर को काम करने आये। तुम्हें तो, चाहे जो हो, डेढ़ दिन काम करना ही पड़ेगा।"

जार्ज ने सीधे उसकी ओर देखा। "हम लोग तो यहां कुछ दिन रहेंगे" उसने कहा। "हम कुछ पैसा जमा करना चाहते हैं।"

दरवाज़ा चुपचाप खुला और अस्तबल वाले का सिर दिखायी दिया—एक दुबला पतला सा नीग्रो का सिर; आकृति पर गहरे दुख की छाप और आंखों में अपार धीरज—"मिस्टर स्लिम"!

स्लिम ने अपनी आँखें बूढ़े कैंडी के ओर से हटायीं। "हुँ ? ओह कहो क्रुक्स। क्या बात है ?"

"आपने मुझसे उस खच्चर के पैर के लिए तारकोल गर्म करने को कहा था। तारकोल तैयार है। एक दम गर्म।

"हाँ, ठीक है क्रुक्स। मैं अभी आकर उसे लगाये देता हूँ।"

"आप कहें तो मैं ही लगा दूँ मि० स्लिम।"

"नहीं, मैं स्वयं लगाऊँगा।" वह उठा।

क्रुक्स बोला, "मि० स्लिम।"

"हाँ।"

"वह बड़ा सा नया आदमी बखारे में आपके पिल्लों को सता रहा है।"

"वह कुछ नुक्सान न करेगा। एक पिल्ला मैंने उसीको दे दिया है।"

"मैंने सोचा आप को बता दूं," क्रुक्स बोला। "वह उन्हें बाहर निकाल कर इधर उधर कर रहा है। यह शायद ठीक न रहेगा।"

"वह उन्हें सतायेगा नहीं।" स्लिम ने कहा। "मैं अभी तुम्हारे साथ चल रहा हूँ।"

जार्ज ने सिर उठा कर देखा। "यदि वह पागल अधिक गोल माल कर रहा हो तो उसे निकाल बाहर करना स्लिम।"

स्लिम अस्तबल वाले के पीछे पीछे कमरे से चला गया।

जार्ज ताश बाँटने लगा। ह्विट अपने पत्ते उठा कर उन्हें देखते-देखते बोला, "नयी चिड़िया को देखा तुमने?"

"कौन सी चिड़िया?" जार्ज ने पूछा।

"अरे वही कर्ली की नयी बीवी।"

"हां देखा है उसे।"

"है न पटाख़ा?"

"इतना तो मैंने अभी नहीं देखा।" जार्ज बोला।

ह्विट ने बड़े रौब से अपने पत्ते रख दिये। "ज़रा आँख खोल के रहो तो बहुत कुछ देखोगे। वह कुछ छिपाती थोड़े ही है। उस जैसी मैंने और कोई नहीं देखी। वह हर घड़ी हर किसी से आंखें लड़ाती रहती है। मैं तो शर्त बद सकता हूँ कि अस्तबल वाले से भी उसने जरूर आँख लड़ायी होगी। पता नहीं क्या चाहती है?"

जार्ज ने जैसे योंही पूछा, "जब से यहां आयी है कुछ गोल माल तो नहीं हुआ?"

प्रकट था कि ताश में ह्विट की तनिक भी दिलचस्पी न थी। उसने अपने हाथ के पत्ते पटक दिये। जार्ज उन्हें उठा कर एक के ऊपर एक चुनने लगा।

ह्विट बोला, "मैं समझ गया तुम्हारी बात। नहीं, अभी तक वैसे तो कुछ नहीं हुआ पर कर्ली जले पैर की बिल्ली बन गया है। जहाँ भी काम करने वाले लोग होते हैं, दालान में, खाने के कमरे में या

बाहर, वहीं वह आ पहुँचती है। वह या तो कर्ली को ढूँढ़ रही होती है या अपनी किसी खोयी हुई चीज़ को। ऐसा लगता है जैसे मरदों के पास गये बिना उसे चैन ही नहीं पड़ता। और कर्ली जल के राख हुआ जाता है। पर अभी तक कुछ और नहीं हुआ।"

जार्ज बोला, "वह ज़रूर कोई न कोई बखेड़ा खड़ा करेगी। वह तो बारूद है बारूद! जरा दियासिलाई लगी कि भक से जला देगी। इस साले कर्ली ने बैठे बैठाये बला को अपने घर बुला लिया है, बाड़े जहाँ इतने मरद रहते हैं, औरत के लायक जगह नहीं है। और फिर उस जैसी के लिए।"

जार्ज ने वाक्य पूरा करने के बदले सिर हिला दिया कि बाड़ा उस जैसी औरत के रहने की जगह कदापि नहीं।

ह्विट बोला, "यदि तबीयत हो तुम्हारी तो कल रात तुम हम लोगों के साथ शहर चलो।"

"क्यों? क्या बात है?"

"अरे वही। हम लोग सूसी के यहाँ जाते हैं। बड़ी बढ़िया जगह है। सूसी है भी बड़ी दिलचस्प बुढ़िया—हर समय हँसी-मजाक करती रहती है। पिछले शनि की रात को हम लोग उसके मकान की पोर्च* में पहुँचे और सूसी ने दरवाज़ा खोला तो घूम कर चिल्लायी, 'छोरियो तैयार हो जाओ कोतवाल साहब पधारे हैं।' पर वह गंदी बातें नहीं करती। पाँच लड़कियां हैं वहां।"

"पैसे कितने लगते हैं?" जार्ज ने पूछा।

"मामले की बात हो तो ढाई 'डालर'। यों पीने के लिए बहुत

* पोर्च=मकान के आगे कार आदि के रुकने की जगह।

थोड़े पैसे दरकार हैं। सूसी के यहां बैठने के लिए कुर्सियां भी बड़ी अच्छी हैं। यदि किसी लड़की वड़की से मामला न करना चाहो तो मज़े से कुर्सी पर बैठकर दो तीन पैग पीकर वक्त काटो। सूसी कुछ नहीं कहती। वह अपने ग्राहकों पर बरबस लड़कियों को नहीं ठोंसतीं और यदि कोई मामला वामला करना न चाहे तो उसे निकालती भी नहीं।

" कभी चल के देखेंगे।" जार्ज ने कहा।

"हां हां, चलना। अरे खूब मजा रहता है — वह हर घड़ी हँसी मजाक करती रहती है। एक बार बोली, 'अरे मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जो फर्श पर फटा हुआ कंबल बिछा और फोनोग्राफ़ पर मोम की गुड़िया वाली बत्ती जला कर समझते हैं कि बड़ा कोठीखाना खोल रखा है! उसका मतलब क्लारा के चकले से था।" ह्विट ने समझाया, और बोला, "फिर एक दिन कहने लगी, "मैं जानती हूं तुम लड़कों को असल में क्या चाहिए? बोली 'मेरी लड़कियां साफ और स्वस्थ हैं, और मेरी ह्विस्की में पानी की मिलावट नहीं, यदि कोई गुड़िया वाली बत्ती देखने और घाते में बीमारी का टिकट लगवाना चाहे शौक से उधर जाये! यहां ऐसे भी लोग है जिनकी टांगें बीमारी ने टेढ़ी कर दी हैं क्योंकि वे गुड़िया वाली बत्ती के शौकीन थे।"

जार्ज ने पूछा, "दूसरे चकले की मालिक क्लारा है?"

"हां," ह्विट ने कहा। "हम लोग वहां कभी नहीं जाते। क्लारा मामले के तीन डालर और एक पेग के पेंतीस सेंट लेती है और वह हँसी मजाक भी नहीं करती। पर सूसी की जगह साफ़ है और उसके पास अच्छी कुर्सियां हैं। ऐसे-वैसों को वह घुसने भी नहीं देती।"

"मैं और लैनी कुछ पैसे जमा कर रहे हैं," जार्ज ने कहा। "मैं जाकर वहां बैठ सकता हूँ और एकाध पेग पी भी सकता हूँ, पर ढाई डालर मेरे बस की बात नहीं।"

"अरे भाई, आदमी को कभी-कभी कुछ मौज भी मनानी चाहिए।" ह्विट बोला।

दरवाज़ा खुला और लैनी तथा कार्लसन साथ-साथ अंदर आये। लैनी चुपचाप अपने तख़ते पर जाकर बैठ गया। इस तरह कि किसी की निगाह उस पर न पड़े। कार्लसन ने अपने तख़ते के नीचे झुक कर अपना थैला निकाला। उसने बूढ़े कैंडी की ओर नहीं देखा, जो अभी तक दीवार की तरफ़ मुँह किये निश्चल पड़ा था। कार्लसन ने थैले में से बंदूक साफ़ करने की छड़ और एक तेल का डिब्बा निकाला। उसने उन चीज़ों को बिस्तर पर रख कर पिस्तौल निकाली और उसके अदर से भरी हुई गोली निकाल ली। फिर वह नली को छड़ से साफ़ करने लगा। जब घोड़े के छूटने की आवाज़ हुई तो कैंडी ने सहसा मुड़ कर निमिष भर को पिस्तौल की ओर देखा और फिर पलट कर पहले की तरह लेट गया।

कार्लसन ने पिस्तौल साफ़ करते करते पूछा, "कर्ली आया था अभी?"

"नहीं," ह्विट ने कहा। "क्यों क्या हुआ कर्ली को?"

कार्लसन एक आँख बंद करके अपने पिस्तौल की नली को देखने लगा। "अपनी बीवी को ढूँढ़ रहा था। मैंने बाहर उसे इधर से उधर चक्कर काटते देखा है।"

ह्विट ने कुछ व्यंग से कहा, "आधा वक्त वह उस को ढूँढ़ता रहता है, और बाक़ी में वह उसे ढूँढती रहती है।"

तभी कर्ली बगूले सा कमरे में दाखिल हुआ। "तुममें से किसी ने मेरी बोवी को देखा है?" उसने कुछ घबराये और आदेश पूर्ण स्वर में पूछा।

"यहां तो नहीं आयी," ह्विट ने उत्तर दिया। कर्ली ने बड़े क्रुद्ध भाव से कमरे में चारों ओर निगाह दौड़ायी। उस निगाह में कुछ अजीब धमकी थी। तब वह चिल्लाया, "और वह स्लिम कहां है!"

"बाहर बखारे में गया है," जार्ज ने कहा। "उसकी खच्चर का खुर फट गया है। उसे तारकोल लगाने गया है।"

कर्ली के कंधे गिर कर चौकोर हो गये। "कितनी देर हुई गये?"

"पाँच-दस मिनिट।"

कर्ली उछल कर दरवाज़े के बाहर निकल गया और किवाड़ों को पूरे ज़ोर से बंद करता गया।

कर्ली के बाहर जाते ही ह्विट भी उत्सुकता से उठा "मेरे ख्याल से यह देखना चाहिए।" उसने जैसे सब से कहा, "कर्ली मरने मारने पर तुला है, नहीं वह स्लिम के पीछे न जाता। और कर्ली है तगड़ा, खासा तगड़ा है। गोल्डन ग्लव्स के बाक्सिंग मैच में वह फाइनल में पहुंच गया था। उसके पास मैच की खबरों के उद्धरण कटे रखे हैं।" फिर वह तनिक सोच कर बोला, "पर वह स्लिम से न उलझे तो अच्छा है। कोई नहीं जानता स्लिम क्या कर बैठे।"

"सोचता है उसकी बोवी से स्लिम की सांठ गांठ है, है न?" जार्ज ने कहा।

"लगता तो यही है" ह्विट बोला। "पर बात ऐसी नहीं। स्लिम के सम्बंध में तो कम से कम मैं तो नहीं सोचता। पर यदि कुछ गोले दगें

तो बड़ा मजा आयगा। चलो, चलें।"

"भाई मैं तो यहीं रहूँगा" जार्ज बोला "मैं किसी बखेड़े में नहीं उलझना चाहता। लैनी और मुझे मिल कर कुछ न कुछ पैसा जमा करना है।"

कार्लसन ने पिस्तौल की सफाई समाप्त करके उसे थैले में रख दिया और थैले को अपने तख्ते के नीचे खिसका दिया। "सोचता हूँ, मैं जरा जा कर देख आऊँ," उसने कहा।

बूढ़ा कैंडी चुपचाप पड़ा रहा और लैनी अपने तख्ते से बड़ी सतर्कता के साथ जार्ज की ओर तकता रहा। ह्विट और कार्लसन बाहर चले गये।

ह्विट के चले जाने के बाद जब दरवाजा बंद हो गया तो जार्ज लैनी की ओर मुड़ा "क्या बात है ?" उसने पूछा।

"मैंने कुछ नहीं किया जार्ज, स्लिम कह रहा था कि मैं उन पिल्लों को अभी कुछ दिन इतना न सहलाऊँ। कह रहा था, यह उनके हक में अच्छा नहीं। सो मैं यहां आ गया। मैं ने कुछ बुरा नहीं किया जार्ज।"

"मैं तुम से यह कहने ही वाला था" जार्ज बोला।

"पर मैं उन्हें किसी तरह का नुकसान न पहुँचा रहा था-सिर्फ अपने वाले को गोद में रखकर सहला रहा था।"

"क्या तुमने बखारे में स्लिम को देखा है ?" जार्ज ने पूछा

"हां, जरूर देखा है। उसने मुझसे कहा था कि मैं उस पिल्ले को अधिक न सहलाऊँ।"

"तुमने उस लड़की को भी देखा था ?"

"तुम्हारा मतलब है कर्ली की बीवी को ?"

"हाँ। क्या वह बखारे में आयी थी?"

"नहीं। मैंने कम से कम उसे नहीं देखा।"

"तुमने उसे स्लिम से बातचीत करते हुए नहीं देखा?"

"ऊँ-हूँ। वह बखारे में नहीं आयी।"

"अच्छी बात है," जार्ज बोला। "तब मेरा ख्याल है उन लोगों को कोई लड़ाई देखने को न मिलेगी।" उसने जैसे अपने आप से कहा फिर मुँह उठा कर वह लैनी से बोला, "देखो लैनी यदि कोई लड़ाई हो, तो तुम उससे अलग ही रहना।"

"मैं किसी लड़ाई-झड़ाई में नहीं पड़ना चाहता," लैनी ने कहा। वह अपने तख्ते से उठ कर जार्ज के सामने मेज पर बैठ गया। जार्ज ने बेख्याली में ताश के पत्ते फेंटे और एक पर दूसरा पत्ता फेंकने लगा। उसकी गति इतनी मंद थी जैसे वह जान बूझ कर बड़ी सोच के बाद पत्ता फेंक रहा हो।

लैनी ने एक पत्ता उठाया। ईंट का बादशाह था। वह बड़े ध्यान से उसे देखने लगा। पहले ऊपर से, फिर उलट कर नीचे से। "दोनों सिरे एक से हैं," वह बड़बड़ाया, फिर बोला, "जार्ज, दोनों सिरे एक से क्यों हैं?"

"मालूम नहीं," जार्ज बोला। "ताश ऐसे ही बनाये जाते हैं।" फिर निमिष भर रुक कर उससे पूछा, "जब तुमने स्लिम को भुसौड़े में देखा तब वह क्या कर रहा था?"

"स्लिम?"

"हाँ। तुमने उसे बखारे में देखा था न, और उसने तुमसे कहा था कि पिल्लों को इतना मत थपथपाओ।"

"हाँ, हाँ। उसके हाथ में तारकोल का डिब्बा और एक ब्रश था। मालूम नहीं किस लिए ?"

"तुम्हें पक्का मालूम है कि वह लड़की वहाँ बिल्कुल नहीं आयी, जैसे वह यहां आज आ गयी थी ?"

"न, वह नहीं आयी।"

जार्ज ने लंबी सांस ली। "इससे तो कोई चकला हज़ार दर्जे अच्छा है," उसने कहा। "वहाँ जाओ, शराब पी लो, और चाहे जो कर डालो, कोई टंटा बखेड़ा नहीं। और यह पक्की तरह मालूम रहता है कि इतने पैसे देने पड़ेंगे। पर यहां तो......यह जगह तो चूहे दानी है। कुछ भरोसा ही नहीं, जरा फिसल की फसे। उफ़ !"

लैनी बड़ी प्रशंसा के भाव से उसकी ओर देख रहा था। और उसकी नक़ल में ओठ हिला रहा था। "तुम्हें एडी कुशमैन की याद है, लैनी ?" जार्ज बोला, "ग्रामर स्कूल में पढ़ने जाया करता था ?"

"वही न जिसकी मां उसके साथी बच्चों के लिए गर्म गर्म केक बना दिया करती थी ?"

"हां, हां, वही। जिस बात में खाने पीने का कोई जिक्र हो, वह तुम्हें कभी नहीं भूलती।" जार्ज ने जैसे बड़े ध्यान से पत्तों की ओर देखते हुए कहा। उसने एक गड्डी के ऊपर एक इक्का रक्खा और उसके की ऊपर तीन-चार ईंट के पत्ते रख दिये। "ऐंडी इस समय सैन क्वैन्टिन-जेल में है, एक छिनाल के कारण से !" जार्ज ने कहा।

लैनी ने अपनी उँगलियों से मेज पर तबला बजाते हुए कहा, "ज़ार्ज ?"

"हूँ ?"

"जार्ज, कितने दिन तक हम वह थोड़ी ही जमीन ले पायेंगे। जहां हम रहेंगे और खरगोश पालेंगे।"

"मालूम नहीं," जार्ज ने कहा। "हमें पहले बहुत सा रुपया इकट्ठा करना है। मैं एक जगह के बारे में जानता हूँ जो सस्ती मिल सकती है, पर वे लोग अभी बेच नहीं रहे।"

तब बूढ़े कैंडी ने धीरे-धीरे करवट बदली। उसकी आंखें पूरी खुली थीं। उसने ध्यान से जार्ज की ओर देखा।

लैनी ने कहा, "उस जगह के बारे में बताओ, जार्ज।"

"मैंने हाल ही में तो बताया था, कल ही रात को तो।"

"बताओ जार्ज......फिर बता दो।"

"अच्छी बात है। दस एकड़ जमीन है।" जार्ज ने कहा। "एक छोटी-सी पन चक्की भी वहां है। एक छोटी-सी झोंपड़ी भी है और एक मुर्गियों का दड़बा भी। एक रसोईघर है और फलों का बाग भी, जिसमें चेरी, सेब, नाशपातियां, खूबानियां, आड़ू और अखरोट आदि हैं। कुछ बेर भी हैं। दूब का मैदान भी है और उसे तर रखने को नदी का पानी भी। एक सुअर खाना है......

"और खरगोश, जार्ज ?"

"अभी तो खरगोशों के लिए कोई जगह नहीं है, पर मैं आसानी से कुछ-एक खरगोशों के दड़बे बना दूंगा और तुम उन्हें दूब खिलाया करना।"

"वाह वा!" लैनी खुशी से चिल्ला उठा "मैं उन्हें दूब खिलाया करूँगा। तुमने बहुत ठीक कहा, मैं उन्हें जरूर दूब खिलाया करूँगा।"

जार्ज के हाथों ने ताश के पत्तों से उलझना छोड़ दिया। उसकी आवाज में कुछ जोश आता जा रहा था। "और हम कुछ सुअर पाल लेंगे। मैं एक धुँआं घर बना लूँगा, जैसा दादा के यहां था। और जब हम सुअर मारेंगे तब उसके गोश्त को गरम करके नमक लगा कर रखेंगे. उसका अचार चटनी और कई दूसरी चीजें बनायेंगे। और जब नदी में सामन मछलियों की बहुतायत हुआ करेगी, तब, हम सौ पचास मछलियां पकड़, सुखाकर या सेंक कर अथवा नमक लगा कर रख लिया करेंगे। वे कलेवे के समय बहुत अच्छी रहेंगी। सिंकी हुई सालमन मछली से बढ़िया कोई और चीज नहीं होती। फलों की ऋतु में हम फलों को डिब्बों में बंद कर लिया करेंगे और टमाटर......टमाटरों को डिब्बों में बंद करना बड़ा आसान होता है। हर इतवार को हम या तो मुर्गी मारा करेंगे या ख़रगोश। शायद हम लोगों के पास एकाध गाय या बकरी भी हो जाय। उसकी मलाई इतनी मोटी हुआ करेगी कि उसे छुरी से काट कर चम्मच से लगाना पड़ा करेगा।"

लैनी ही नहीं कैंडी भी आँखें फाड़े जार्ज की बात सुन रहा था।

धीरे से लैनी ने कहा "और हम वहां आराम से रहा करेंगे।"

"ज़रूर ज़रूर," जार्ज बोला। "बगीचे में हर तरह की साग-सब्जी हुआ करेगी। ह्विस्की की जरूरत पड़ने पर हम थोड़े से अडे, या थोड़ा सा दूध बेच दिया करेंगे या कोई और चीज बेच दिया करेंगे। हम बस वहीं रहा करेंगे। वहीं के हो जायेंगे फिर दुनियाँ भर में भटकने और किसी साले जापानी रसोइए के हाथ का खाना खाने की

जरूरत न रहेगी। नहीं जी, हमारी अपनी ज़मीन हो जायेगी और किसी तख्तों वाले दालान में ज़िन्दगी तबाह करने की कोई जरूरत न रहेगी।......

"घर के बारे में भी बताओ जार्ज!" लैनी ने प्रार्थना सी करते हुए कहा।

"हां, हां, हमारा एक छोटा सा घर होगा जिसमें हमारे अलग अलग कमरे होंगे। एक छोटा सा लोहे का चूल्हा होगा और जाड़ों के दिनों में उसमें आठों पहर आग सुलगा करेगी। ज़मीन बहुत नहीं है, इसलिए हमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। शायद दिन में छह-सात घंटे। पर हमें दूसरों के लिए दिन में ग्यारह घंटे जौ नहीं ढोने पड़ेंगे। और जब फ़सल होगी, तब उस पर हमारा ही अधिकार होगा। और हम जान पायेंगे कि हमारे श्रम का हमें क्या फल मिला।"

"और ख़रगोश," लैनी ने व्यग्रता से कहा। "मैं उन सब की देख-भाल किया करूँगा। बताओ, मैं कैसे देख भाल किया करूँगा उनकी जार्ज।"

"हां हां, जरूर। तुम एक बोरा लेकर दूब के मैदान में चले जाया करोगे। दूब से उसे भर कर लाया करोगे और ख़रगोशों के दड़बों में डाल दिया करोगे।"

"वे किट किट दूब कतरा करेंगे। नन्ही नन्ही थोथनियों से चबाया करेंगे। मैं ने उन्हें कुतर कुतर चबाते देखा है।" लैनी ने सोल्लास कहा।

"हर छह-सात सप्ताह में, उनके बच्चे हो जाया करेंगे।" जार्ज उसी जोश से कहता गया और हमारे पास खाने और बेचने के लिए

ख़रगोशों की कोई कमी न रहेगी। और हम थोड़े से कबूतर भी पाल लेंगे। वे पनचक्की के चारों ओर तरारे भरते फिरेंगे। उसी प्रकार जैसे बचपन में मैंने अपने दादा के यहां उन्हें उड़ते देखा था।" वह लैनी की दृष्टि को सामने दीवार में लगे जैसे उड़ते कबूतरों को निरखते देखता रहा। फिर बोला "और वह सब हमारा होगा और कोई साला हमें वहां से निकाल न सकेगा। और यदि कोई मज़दूर खेती पर कार्य न करेगा तो हम उससे कहेंगे कि वह निकल जाय! और उसे हमारी बात माननी पड़ेगी। कभी कोई दोस्त आया तो हम उसके लिए एक फालतू तख्त बिछा दिया करेंगे और उससे कहेंगे आज रात यहीं रहो यार और उसे वहीं रहना पड़ेगा। हम एक कुत्ता पाल लेंगे और दो एक धारीदार बिल्लियां। पर बिल्लियों के बारे में तुम्हें चौकस रहना पड़ेगा, नहीं वे छोटे छोटे ख़रगोशों को खा जाया करेंगी।"

लैनी बेतरह उत्तेजित हो उठा। और जब वह बोला तो क्रोध के मारे उसके कंठ में शब्द अटक गये। "वे जायें तो ख़रगोशों के पास! मैं उन कम्बख्तों की गर्दन मरोड़ दूँगा...... मैं......मैं लठिया से उनका भुरकस बना दूँगा।"

वह धीरे-धीरे शांत हो गया और मन ही मन बुदबुदाता रहा, और उन भावी बिल्लियों को धमकी देता रहा, जो भावी ख़रगोशों के जीवन क्रम में विघ्न डालने वाली थीं।

जार्ज स्वयं अपने कल्पनालोक में मग्न, मंत्र मुग्ध सा बैठा था।

और जब कैंडी बोला तो दोनों ऐसे चौंके जैसे उन्हें कोई अपराध करते हुए देख लिया गया हो। कैंडी ने कहा, "कहां है ऐसी जगह?"

जार्ज तत्काल सावधान होगया। संदेहशील दृष्टि उसे देखते हुए बोला "मान लो मैं जानता हूँ। तुम्हें इससे क्या?"

"मुझे बताने की ज़रूरत नहीं कि वह कहां है, कहीं भी हो सकती है।" कैंडी बोला।

"हां हां!" "जार्ज ने कहा तुम्हें वह सौ साल में भी नहीं मिल सकती।"

कैंडी कुछ उत्तेजित-सा बोला, "ऐसी जगह के लिए कितना मांगते हैं?"

जार्ज ने संदेह के साथ उसकी ओर देखा। "मैं.....मुझे वह छह सौ डालर में मिल सकती है। एक बुड्ढा जोड़ा उस जगह का मालिक है। बुढ़िया को तो आप्रेशन की ज़रूरत है। बड़ी खराब हालत है उसकी......पर यह तो बताओ, तुम्हें क्या पड़ी है? तुमसे हमसे तो कोई मतलब नहीं।"

कैंडी बोला, "अरे भाई मैं यों तो मैं ज्यादा काम का नहीं। मेरा एक ही हाथ है। और इसीलिए मैं यहां झाड़ू देने का काम करता हूं। एक बात है— मेरा यह हाथ इसी बाड़े में जाता रहा था। इसलिए मालिकों ने मुझे यह आसान काम सौंपा और ढाई सौ डालर हर्जाना दिया। पचास मैंने और भी बचा कर बैंक में रख छोड़े हैं। तीन सौ हुए, और पचास मुझे इस महीने के अंत में मिल जायेंगे। सुनो मैं बताता हूँ,..." वह बड़ी व्यग्रता के साथ आगे को झुक आया। "मान लो मैं भी तुम लोगों के साथ शामिल हो जाऊँ। अपने साढ़े तीन सौ डालर मैं भी लगा दूँगा। मैं उतना काम नहीं कर सकता। पर मैं रसोई बना सकता हूँ; मुर्गियों की देख भाल कर सकता हूँ और थोड़ा बहुत बगीचे की

निराई गुड़ाई कर सकता हूँ। कैसा रहेगा यह ?"

जार्ज ने अपनी आँखें आधी बंद कर लीं। "सोचना पड़ेगा मुझे। हम लोग तो यह काम स्वयं ही करने वाले थे।"

कैंडी उसकी बात काट कर बोला, "मैं एक वसीयत कर दूँगा कि यदि मैं मर जाऊँ तो मेरा हिस्सा तुम लोगों को मिल जाय। मेरा सगा सम्बंधी भी कई नहीं। तुम लोगों के पास है कुछ रुपया ? हो तो हम लोग तत्काल खरीद सकते हैं।"

जार्ज ने झल्लाहट के साथ फर्श पर थूकते हुए कहा, "हम दोनों के पास तो कुल मिलाकर दस डालर हैं।" फिर उसने सोचते हुए कहा, "देखो, यदि मैं और लेनी महीने भर काम करें और कुछ खर्च न करें तो हमारे पास सौ डालर हो जायेंगे। यह हो गये साढ़े चार सौ। मेरा ख्याल है उस बुढ़िया को हम इतने में तैयार कर सकते हैं। तब तुम और लेनी जाकर वहां काम शुरू कर देना और मैं कहीं थोड़े दिन नौकरी करके बाकी रुपया चुका दूँगा। इस बीच में तुम लोग अंडे और ऐसी ही और चीजें बेच कर काम चला सकते हो।"

वे लोग चुप हो गये। वे चकित से एक दूसरे की ओर देख रहे थे। यह उन्होंने कभी न सोचा था कि यह 'स्वप्न इस प्रकार इतनी जल्दी' सत्य हो सकता है। जार्ज ने कुछ भक्ति भाव से कहा, "हे भगवान ! हम लोग ज़रूर उन को इतने पर ज़मीन छोड़ने को तैयार कर लेंगे।" उसकी आँखें विस्मय से भरी हुई थीं। "हम ज़रूर उन को तैयार कर लेंगे," उसने बहुत धीमे से कहा।

कैंडी उठ कर अपने तखते के किनारे बैठ गया था। उसने अपने लुंज को बेचैनी खुजलाते हुए कहा। "चार बरस पहले मुझे चोट

लगी थी। अब जल्दी ही ये लोग मुझे निकाल देंगे। ज्यों ही मैं मज़दूर-घरों की सफाई धुलाई का काम करने के लायक न रहा, ये मुझे धत्ता बतायेंगे। यदि मैं अपना रुपया तुम लोगों को देदूँ, तो तुम लोग मुझे बेकार हो जाने पर भी शायद बगीचे की गुड़ाई करने दो। और मैं प्लेटें धो दिया करूँगा, मुर्गियों की देखभाल कर लिया करूँगा। पर मैं कम से कम अपनी जगह तो रहूँगा, और अपनी जगह में तो काम कर सकूँगा।" उसने बड़ी व्यथा से कहा, "तुमने देखा, उन्होंने अभी क्या किया मेरे कुत्ते के साथ? कहते थे कि वह न अपने किसी काम का था न दूसरों के। जब यहाँ से मुझे निकाला जाय तो मैं चाहता हूँ, मुझे भी कोई गोली मार दे! पर कोई इसके लिए तैयार न होगा। दीन दुनिया में न मुझे कहीं जाने को जगह होगी, न कोई काम मिलेगा। तुम लोग जब तक यहां से चलने को तैयार होगे, मेरे पास तीस डालर और हो जायेंगे।"

जार्ज जोश से उठा। "हम लोग जरूर वह जगह लेंगे," वह बोला। "हम उन लोगों को मना लेंगे।" मेज़ पर मुक्का मार कर वह फिर बैठ गया। वे सब निश्चल बैठ गये। इस विचार की सुंदरता से विस्मित चकित से। तीनों का दिमाग उस भविष्य में उलझ गया जब यह सुंदर कल्पना सच्ची हो उठेगी।

जार्ज ने उसी विस्मय भरे स्वर में कहा "मान लो कोई कारनीविल या सरकस शहर में आये या कोई नाच या खेल हो......"

बूढ़े कैंडी ने जैसे जार्ज की बात को समझते हुए प्रशंसा में सिर हिलाया।

"हम लोग वहां निश्चय ही जाया करेंगे," जार्ज ने कहा। "और इसके लिए हमें किसी की आज्ञा लेने की जरूरत न पड़ेगी। बस कहा कि—जायेंगे, और चल दिये। गाय दुहो, मुर्गी के बच्चों को कुछ दाना दुनका डाला और चल दिये।"

"और कुछ घास खरगोशों के लिए," लैनी ने बीच ही में कहा। "उनको खिलाना कभी नहीं भूलेंगे। कब हम करेंगे यह सब, जार्ज?"

एक महीने में। बस महीने भर में। मालूम है मैं क्या करने वाला हूँ? मैं उन लोगों को जिनकी जगह है, लिख दूंगा कि हम लोग खरीदेंगे और कैंडी १०० डालर बयाने के भेज देगा। ताकि वह जगह किसी और को न बेचें।"

"हां जरूर भेज दूंगा," कैंडी ने कहा। "वहां अच्छा चूल्हा तो है न?"

"हां, जरूर है। बहुत अच्छा चूल्हा है जिसमें कोयला लकड़ी जो भी चाहो जला सकते हैं।"

"मैं अपना पिल्ला अपने साथ जरूर ले आऊँगा।" लैनी ने कहा, "ईश्वर कसम, उसे भी वहां बहुत अच्छा लगेगा।"

बाहर से उनके साथियों की आवाज़ें निकट सुनायी दीं। जार्ज ने जल्दी से कहा, 'किसी से इसके बारे में कहना मत। बस हम तीनों, और कोई नहीं। किसी को मालूम पड़ गया तो हम लोग निकाल दिये जायेंगे और फिर रुपया जमा न हो सकेगा। अभी तो हम ऐसे करते रहेंगे मानों जीवन भर हमें जौ ही ढोना है। फिर एकाएक किसी दिन हम अपनी पगार लेंगे और (उसने चुटकी बजायी) रफ़ू चक्कर!"

लैनी और कैंडी ने सिर हिलाया; वे दोनों खुशी से मुस्करा रहे थे। "किसी से मत कहना," लैनी ने मन ही मन दोहराया।

कैंडी ने कहा, "जार्ज !"

"हुँ ?"

"उस कुत्ते को मुझे स्वयँ जाकर गोली मारनी चाहिए थी। कोई दूसरा क्यों मेरे कुत्ते को गोली मारे ?"

दरवाज़ा खुला। स्लिम अंदर आया, उसके पीछे कर्ली, कार्लसन और ह्विट भी थे। स्लिम के हाथ कोलतार से काले हो रहे थे और उसकी त्योरियाँ चढ़ी हुई थीं। कर्ली उसके पीछे चला आ रहा था।

"भई, मेरा कुछ और मतलब न था, स्लिम। मैंने सिर्फ पूछा ही था।" कर्ली कह रहा था।

"तुम बहुत बार पूछ चुके हो।" स्लिम चिड़चिड़े स्वर में बोला "मैं तंग आ गया हूँ। यदि तुम स्वयं अपनी उस कम्बख़्त बीवी पर नज़र नहीं रख सकते तो मैं क्या करूँ? तुम मुझसे मत उलझो!"

"मैं तुमसे यही कह रहा हूँ कि मेरा कुछ और मतलब न था।" कर्ली ने कहा, "मैंने सोचा शायद तुमने उसे देखा हो।"

"तुम उसे साले उस घर में रहने को क्यों नहीं कहते, जो उसकी उचित जगह है," कार्लसन बोला। "तुम उसे मज़दूरों-घरों के आसपास मँडराने देते हो। और फिर किसी दिन कुछ हो-हवा गया तो बैठे हाथ मलते रह जाओगे।"

कर्ली कार्लसन पर बरस पड़ा; "तुम इसमें टांग मत अड़ाओ नहीं फिर पछताओगे बाद में।"

कार्लसन ने ज़ोर का ठहाका मारा "वाह रे मेरे तीस मार ख़ां! वह व्यंग से बोला, "अभी स्लिम पर रौब गांठने की कोशिश कर रहे थे, वह जमा नहीं। बल्कि स्लिम का रौब तुम्हारे ऊपर गालिब हो गया। शीशे में मुँह तो देखो मेंढक के पेट की तरह पीला हो गया है। और अब मुझ पर रौब जामना चाहते हो। मुझे इस बात की परवा नहीं कि तुम यहां के सबसे बड़े लड़ाके हो। मुझ से तुम अटके तो मैं तुम्हारी खोपड़ी तोड़ के रख दूँगा, समझे।"

कैंडी भी अपनी खुशी में कार्लसन की इस डांट में शामिल हो गया। "वैसलीन भरा दस्ताना," उसने बड़े व्यंग भरे स्वर में कहा और तनिक हँस दिया।

कर्ली ने उसकी ओर घूरा। फिर उसकी आंखें उस पर से होती हुई लैनी पर जा पड़ीं। लैनी अभी तक अपने ख़रगोशों की कल्पना में निमग्न दांत निकाले मुस्करा रहा था

कर्ली टेरियर कुत्ते की तरह लैनी पर झपटा। "तुम साले क्यों हँस रहे हो?"

कमरे में क्या हो रहा है लैनी ने कुछ नहीं देखा। कर्ली के प्रश्न पर उसने आश्चार्य्य से उसकी ओर देखकर केवल एक प्रश्न-चिन्ह सी 'हुं' करदी?"

कर्ली एक दम क्रोध से फट पड़ा। "इधर तो आ लम्बे हरामी। ज़रा खड़ा तो हो जा। कोई सुअर का बच्चा चाहे वह कितना भी लम्बा तगड़ा क्यों न हो, मुझ पर हँसने का साहस नहीं कर सकता।"

लैनी ने बड़ी विवशता की एक नज़र जार्ज पर डाली और वह उठ कर पीछे की ओर हटा। कर्ली मुक्के कसे निपुण बाक्सरों की तरह तैयार खड़ा था।

वायाँ हाथ उसकी कनपटी पर देते हुए दायें से उसने लैनी की नाक तोड़ दी। लैनी भयातुर चीख उठा। उसकी नाक से रक्त का फौव्वारा फूट पड़ा "जार्ज" उसने चीख कर कहा। "इस से कहो मुझे छोड़ दे, जार्ज।" वह पीछे हटते हटते दीवार से जा लगा। कर्ली उसके पीछे-पीछे उसे मारता हुआ बढ़ता जा रहा था। लैनी के हाथ अभी बगल में ही लटके हुए थे; वह इतना डर गया था कि अपने आप को बचाना भी भूल गया था।

तभी जार्ज उठा। "मार, पकड़ ले इसे लैनी!" वह चिल्लाया, "मत मारने दे। लगा इसके एक लैनी, मार।"

लैनी ने अपने बड़े-बड़े पंजों से अपना मुँह ढँक लिया और डर से घिघियाने लगा। वह चीखा, "रोको इसे, जार्ज

कर्ली ने उसके पेट में घूँसा जमा दिया जिससे उसकी साँस रुक गयी।

स्लिम उछल पड़ा। "कमीना कुत्ता" वह चिल्लाया। "मैं स्वयँ देता हूँ इसे।

"जार्ज ने हाथ बढ़ा कर स्लिम को पकड़ लिया। "जरा ठहरो", वह चिल्ला कर बोला। उसने अपने दोनों हाथ मुँह पर भोंपू की तरह रख लिये और चिल्लाया, "लैनी मार इस साले को।"

लैनी ने हाथ उठा कर जार्ज की ओर देखा और कर्ली ने एक मुक्का उसकी आंख पर दिया। जार्ज चिल्लाया। "मैं कहता हूँ पकड़ो इसे" तब लैनी ने हाथ बढ़ाया। कर्ली मारने के लिए घूंसा घुमा रहा था जब लैनी ने उसकी बँधी मुट्ठी अपने बड़े पंजे में पकड़ ली। दूसरे क्षण कर्ली कांटे पर मछली की तरह तड़फड़ाता दिखायी दिया। उसकी बंद मुट्ठी लैनी के बड़े-बड़े हाथ में गायब हो चुकी

स्लिम ने कहा, "कार्लसन तुम जरा गाड़ी जोत लो। इसे सोले दाद ले जा कर किसी डाक्टर के कुछ प्रबंध करना पड़ेगा।" कार्लसन जल्दी से बाहर चला गया। स्लिम लैनी की ओर मुड़ा जो यह सब देख कर सिसकने लगा था। "तुम्हारा इसमें कोई दोष नहीं," उसने कहा। "इस तीस मारखां को एक न एक दिन यह भुगतना ही था। पर कसम है! हाथ इसका खतम हो गया है बिल्कुल।" स्लिम जल्दी से बाहर चला गया और क्षण भर में एक टीन के प्याले में पानी लेकर लौट आया। प्याला उसने कर्ली के मुँह से लगा दिया।

जार्ज ने कहा, "स्लिम, क्या अब हम लोग निकाल दिये जायेंगे? हमें कुछ पैसे की बड़ी जरूरत है। क्या कर्ली का बाप हमें अब जवाब दे देगा?

स्लिम मुँह बिचका कर हँसा। वह कर्ली के ऊपर झुका। "मेरी बात सुनने लायक दिमाग ठिकाने है कि नहीं?" उसने कर्ली से पूछा। कर्ली ने सिर हिला दिया-कि कहो। "तो फिर सुनो," स्लिम ने कहा। "तुम्हारा हाथ मशीन में आ गया था। यही कहना है तुम्हें। यदि तुम किसी से कुछ न कहोगे तो हम भी किसी से नहीं कहेंगे। पर यदि तुमने जरा भी जबान हिलायी और इस आदमी को निकलवाने की कोशिश की तो हम फिर सबसे कह देंगे, और फिर सब लोग तुम्हारे ऊपर हँसेंगे।"

"मैं किसी से न कहूँगा।" कर्ली ने लैनी के निगाह चुराते हुए कहा।

बाहर गाड़ी के पहियों की आवाज हुई। स्लिम ने सहारा देकर कर्ली को उठाया। "अब चलो। कार्लसन तुम्हें डाक्टर के पास ले

जायगा।" वह कर्ली को सहारा देकर दरवाजे से बाहर ले गया। पहियों की आवाज दूर जाती सुनायी दी। पल भर बाद स्लिम अन्दर लौट आया। उसने लैनी की ओर देखा। वह अभी डर के मारे दीवार के सहारे दुबका हुआ था। "तुम्हारे हाथ देखें," उसने कहा।

लैनी ने अपने हाथ बढ़ा दिये।

"हे भगवान, परमात्मा न करे कि तुम्हें कभी मुझ पर गुस्सा आये," स्लिम ने कहा।

जार्ज बीच ही में बोला, "लैनी बहुत डर गया था," उसने सफाई दी। "उसकी समझ में ही नहीं आया कि क्या करे। मैंने कहा था तुमसे न कि उससे कभी किसी को न लड़ना चाहिए। नहीं, शायद मैंने कैंडी से कही थी यह बात।"

कैंडी ने गंभीरता पूर्वक सिर हिला कर कहा, "हाँ कहा था तुमने। आज सवेरे जब कर्ली ने पहले पहल तुम्हारे मित्र को डांटा था, तभी तुमने कहा था, यदि अपना भला चाहता है तो वह लैनी से न उलझे।' ठीक यही बात कही थी तुमने।"

जार्ज ने लैनी की ओर घूम कर कहा, "तुम्हारा कोई दोष नहीं। अब तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं। मैंने तुमसे कहा था, वही तुमने किया है। अब जाकर तुम अपने हाथ मुँह धो आओ। बड़े भयानक लग रहे हो।"

लैनी अपने घायल मुँह से ही मुस्कराया। "मैं तो किसी से झगड़ना नहीं चाहता। किसी को कष्ट नहीं पहुँचाना चाहता।" उसने कहा। वह दरवाजे की ओर बढ़ा, पर वहाँ तक पहुंचने के पहले ही वह एकाएक लौट आया। "जार्ज!"

"क्या बात है ?"

"मुझे खरगोशों की देख भाल तो करने दोगे न ?"

"जरूर। तुमने कोई कसूर नहीं किया है।"

"मैं उसे चोट न पहुंचाना चाहता था, जार्ज"

"अच्छा, अब जाकर पहले मुँह-हाथ धो आओ।",

चार

नीग्रो साईस क्रुक्स का तखता घोड़े के साज-समान वाले कमरे में था जो बखारे की दीवार के सहारे एक छोटा-सा छप्पर डाल कर बना दिया गया था। छोटे से कमरे के एक ओर चार शीशों वाली एक चौकोर खिड़की थी और दूसरी ओर एक सँकरा सा तखतों का दरवाजा था जो बखारे में खुलता था। एक लम्बे से बक्स में घास भर कर क्रुक्स का तखता बना दिया गया था जिसके ऊपर उसके कवल बिछे थे। खिड़की के पास दीवार पर खूँटियाँ थीं जिनके ऊपर टूटा हुआ साज मरम्मत होने के लिए लटक रहा था। एक ओर नये चमड़े की पट्टियां टँगी थीं। ठीक खिड़की के नीचे एक बैंच थी जिस पर चमड़े के काम के औज़ार पड़े हुए थे— मुड़े हुए चाकू, सुइयां, डोरे की पेचकें और एक

छोटा-सा रिबट लगाने का औजार आदि आदि। खूँटियों पर साज के कुछ अलग-अलग हिस्से भी टँगे थे, फटा हुआ गले का पट्टा जिसके अंदर भरे घोड़े के बाल निकल आये थे; एक जोड़ी टूटे हुए खमदार कुलाबे और रासें जिनके ऊपर चढ़ा हुआ चमड़ा खुल गया था। क्रुक्स का बक्सा उसके तख्ते के ऊपर था। बक्से में एक दवाइयों की संदूक्ची थी, जिसमें उसकी और घोड़ों की दोनों की दवाइयां थीं। इसके अति-रिक्त गद्दी घोने के साबुन के डिब्बे थे और एक कोलतार का डिब्बा था जिसके किनारों से पोतने का एक ब्रश भी निकला हुआ दिखायी पड़ता था। फर्श पर चारों ओर बहुत-सी व्यक्तिगत जरूरत और मलकीयत चीज़ें बिखरी पड़ी थीं। क्रुक्स अकेला था इसलिए वह अपनी चीजों को बड़े इतमीनान से बिखरी छोड़ सकता था। साईस और वह भी लँगड़ा होने के कारण और लोगों की अपेक्षा वह अधिक स्थायी था और उसने इतना सामान इकट्ठा कर लिया था कि वह सारे का सारा स्वयं अपनी पीठ पर लाद कर कभी न ले जा सकता था।

क्रुक्स के पास बहुत-से जोड़े जूतों के थे। उनमें एक जोड़ी रबड़ के जूते भी थे। एक बड़ी सी अलार्म घड़ी और एक नली वाली बन्दूक भी थी। और फिर उसके पास किताबें थीं, एक जर्जर शब्द कोष और १६०५ के कैलिफोर्निया के दीवानी कानून की एक जीर्ण शीर्ण प्रति! पुरानी पत्र-पत्रिकाएँ और कुछ मैली-कुचैली सी किताबें सदा। उसके तख्ते के ऊपर एक विशेष अलमारी पर रखी रहती थीं। एक बड़ा-सा सुनहरे फ्रेम का चश्मा उसके बिस्तर के ऊपर दीवार पर एक खूँटी से टँगा था।

यह कमरा काफी साफ़-सुथरा था, क्योंकि क्रुक्स बड़ा आत्माभिमानी

और एकान्त-प्रिय आदमी था। वह लोगों से दूरी बनाये रखता और यह मांग करता था कि दूसरे भी उस दूरी को बनाये रखने में उसे योग दें। उसका शरीर उसकी टेढ़ी रीढ़ की हड्डी पर बायीं ओर को कुछ झुका हुआ था; उसकी आँखें उसके सिर में गहरी धँसी हुई थीं और उस गहराई के कारण तीक्ष्णता से चमकती हुई जान पड़ती थीं। उसके क्षीण मुख पर गहरी, काली झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं, और उसके पतले ओंठ पीड़ा के कारण तने हुए-से थे, जो उसके चेहरे से अधिक हलके दिखायी देते थे।

शनिवार की रात थी। बखारे में खुलने वाले दरवाजे में से बाहर चरते हुए घोड़ों, उनके हिलते डुलते पैरों, उन के घास चबाते हुए दाँतों और इस क्रिया में हिलती हुई ज़ंजीरों की आवाज़ें आ रही थीं। साईस के कमरे में एक छोटे से बिजली के हंडे से हलकी-सी पीली रोशनी निकल रही थी।

क्रुक्स अपने तख्ते पर बैठा था। उसकी कमीज पीठ की ओर पतलूनमें से निकली हुई थी। उसके एक हाथ में लिनामेंट* की एक शीशी थी और वह दूसरे से अपनी रीढ़ की हड्डी को मल रहा था। बीच-बीच में वह अपनी गुलाबी सी हथेलियों में दवाई की चन्द बूँदे उँडेल लेता और अपनी कमीज के नीचे हाथ डाल कर फिर मलने लगता। फिर वह अपने पट्ठों को पीठ की ओर झुकाता और सहसा पीड़ा से काँप जाता।

लैनी बिल्कुल चुपचाप किसी प्रकार की आवाज किये बिना खुले दरवाजे में आ खड़ा हुआ, उसके चौड़े कंधों से दरवाजा लगभग भर गया। पल भर क्रुक्स ने उसे नहीं देखा, पर दृष्टि उठाते ही वह कठोर पड़

*लिनामेंट—दर्द आदि के लिए मालिश की दवाई।

गया और उसकी त्योरियाँ चढ़ गयीं। उसका हाथ कमीज़ के नीचे से निकल आया।

लैनी मैत्री स्थापित करने के प्रयास में बड़ी बेबसी के साथ मुस्कराया।

क्रुक्सने रुखाई से कहा, "तुम्हें इस कमरेमें आने की इजाजत किस ने दी। यह कमरा मेरा है। यहाँ पर मेरे अतिरिक्त किसी को आने का अधिकार नहीं।"

लैनी ने कुछ कहने के प्रयास में थूक निगल लिया और उसकी मुस्कान और भी फैल गयी। "मैं कुछ भी नहीं कर रहा हूँ", उसने कहा। "मैं अपने पिल्ले को देखने आया था। और मैंने तुम्हारे कमरे में रोशनी देखी," उसने अपनी सफाई देते हुए कहा।

"रोशनी जलाने से मुझे कौन रोक सकता है" क्रुक्स और भी रुखाई से बोला, "तुम मेरे कमरे से इसी क्षण निकल जाओ। तुम लोग अपने कमरे में मेरा आना पसंद नहीं करते और मैं अपने कमरे में तुम्हारा आना पसंद नहीं करता।

"क्यों नहीं पसंद करते तुम्हारा आना वे अपने कमरे में?" लैनी ने उसी भोलेपने से पूछा।

"क्योंकि मेरा रंग काला है। वहां लोग ताश खेलते हैं, पर मैं नहीं खेल सकता क्योंकि मैं काला हूँ। वे कहते हैं मेरे बदन से बदबू आती है। मैं कहता हूँ मुझे तुम्हारे सबके बदन से बदबू आती है।"

लैनी ने अपने बड़े बड़े हाथ विवशता से फड़फड़ाये। "सब लोग शहर चले गये हैं," उसने कहा। "स्लिम, जार्ज, सब। जार्ज ने कहा है कि मैं यहीं रहूँ और कोई बखेड़ा न खड़ा करूँ। मैंने तुम्हारे कमरे में

रोशनी देखी मैं चला आया।

"अच्छा तो तुम चाहते क्या हो ?"

"कुछ नहीं—मैंने तुम्हारी रोशनी देखी। मैंने सोचा कि जाकर जरा देर को बैठूँ।

क्रुक्स ध्यान से लैनी को देखने लगा। फिर वह चल कर उसके पीछे पहुँचा और उसने अपना चश्मा खूँटी से उतार कर अपनी नाक पर रखा और उसकी कमानियों को अपने गुलाबी कानों पर ठीक से बैठाया फिर तनिक और ध्यान से लैनी को देखने लगा। "पर तुम बखारे में क्या कर रहे थे ?" उसने शिकायत के स्वर में कहा। "तुम तो अनाज कूटने अथवा उसका छिलका उतारने वाले नहीं हो। तुम केवल जौ ढोने वाले हो और ढोने वाले के लिए बखारे में आने का कोई काम नहीं। तुम तो अनाज कूटने वाले नहीं हो तुम्हें घोड़ों से भी कोई मतलब नहीं।"

"पिल्ला है न," लैनी ने दोहराया, "मैं अपने पिल्ले को देखने आया था।"

"तो फिर जाओ देखो अपने पिल्ले को। जहां तुम्हारी जरूरत नहीं वहां क्यों मुँह उठाये चले आते हो ?"

लैनी की मुस्कान उसके बड़े बड़े ओठों पर विलुप्त हो गयी। वह एक पग कमरे में आगे बढ़ा, फिर कुछ याद आने से पीछे को पलटा। "मै जरा उन पिल्लों को देख रहा था। स्लिम ने कहा है कि मुझे उन्हें अधिक न थपथपाना चाहिए।"

"तुम उन्हें उनके बक्से से बार बार निकालते हो। उनकी मां उन्हें तुम्हारे डर से जरूर कहीं और ले जायगी।"

"वह तो बुरा नहीं मानती। मैं बैठा उसके सामने उन्हें थपथपाता हूं और वह तनिक भी बुरा नहीं मानती।"

क्रुक्स के तेवर चढ़ गये, पर लैनी की भोली मुस्कान से वह परास्त हो गया। "आओ, कुछ देर बैठो", वह बोला। "यदि तुम बाहर नहीं जा रहे, तो आओ बैठ जाओ।" उसके स्वर में कुछ अधिक अपनापन था। "सब लोग शहर चले गये हैं, ऐं?"

"कैंडी के अतिरिक्त सब। केवल वह अपने तखते पर बैठा अपनी पेंसिल छील रहा है और हिसाब लगा रहा है।"

क्रुक्स ने अपना चश्मा ठीक किया। "हिसाब लगा रहा है! किस चीज का हिसाब लगा रहा है कैंडी?"

लैनी जोश से लगभग चिल्ला कर बोला, "खरगोशों के बारे में।"

"तुम पागल हो," क्रुक्स ने अपने सिर को हाथ से छूकर हाथ को हवा में हिलाते हुए कहा, "तुम एक दम पागल हो। किन खरगोशों की बात कर रहे हो तुम?"

"वही खरगोश जो हम लोग पालने वाले हैं, जिनकी मैं देख भाल किया करूँगा, जिनके लिए मैं घास काट कर लाया करूँगा, पानी पिलाया करूँगा, सहलाया करूँगा।"

"तुम एक दम पागल हो।" क्रुक्स ने कहा। तुम जिस आदमी के साथ रहते हो यदि वह तुम्हें अपने से दूर रखता है तो इसमें उसका कोई दोष नहीं।"

लैनी ने शांत भाव से कहा, "इस में ज़रा भी झूठ नहीं। हम यह सब करने वाले हैं। हम जमीन लेने वाले हैं और वहाँ जाकर रहने वाले हैं।"

क्रुक्स और भी आराम के साथ अपने बिस्तर पर जम गया। "बैठ जाओ", उसने लैनी से कहा। "उस कीलों के डिब्बे पर बैठ जाओ।"

लैनी उस छोटे से पीपे पर कुबड़ा सा बना बैठ गया। "तुम सोचते हो यह झूठ है", वह बोला, "पर इसमें जरा भी झूठ नहीं। इसका एक एक अच्छर सच्चा है। तुम जार्ज से पूछ लेना।"

क्रुक्स ने अपनी काली ठोड़ी अपनी गुलाबी हथेली पर टिका ली। "तुम जार्ज के साथ-साथ हर जगह जाते हो न ?"

"जरूर। मैं और जार्ज हर जगह साथ-साथ जाते हैं।"

क्रुक्स कहता गया। "कभी-कभी ऐसा होता है न कि वह बातें करने लगता है और तुम्हारी समझ में नहीं आता कि वह क्या बक रहा है। है न ऐसा ?" वह आगे झुक आया, उसकी गहरी आँखें जैसे लैनी के भीतर घुसी जा रही थीं। "ऐसा ही है न ?"

"हां......कभी-कभी।"

"वह बात करता जाता है, और तुम्हें पता ही नहीं चलता कि वह क्या बक रहा है ?"

"हां......कभी कभी। पर.....हमेशा नहीं।"

क्रुक्स अपने बिस्तर के किनारे पर आगे को झुक आया। "मैं दक्खिन का नीग्रो नहीं हूं," उसने कहा, "मैं यहीं कैलीफोर्निया में पैदा हुआ था। मेरे बाप का मुर्गियों का बाड़ा था, लगभग दस एकड़ का। गोरों के बच्चे हमारे यहां खेलने आया करते थे। और कभी-कभी मैं भी उनके साथ खेलने जाया करता था। उनमें से कुछ बहुत भले थे। पर मेरे बाप को यह पसंद न था। बहुत दिनों बाद तक मेरी समझ में

यह न आया कि क्यों उसे यह पसंद न था। पर अब मैं जान गया हूँ।" वह कुछ हिचकिचाया, और जब फिर उसने बोलना शुरु किया तो उसकी आवाज़ और भी धीमी थी। "मीलों तक आस पास कोई दूसरा नीग्रो घर नहीं था। और अब इस बाड़े में एक भी काला आदमी नहीं है और सोलेदाद में बस एक घर बचा है।" वह हँसा। "यदि मैं कुछ कहूँ तो वह बस एक नीग्रो की बात है"

लैनी ने पूछा, "तुम्हारा क्या ख्याल है कि कितने दिनों में वे पिल्ले थपथपाने लायक हो जायेंगे?"

क्रुक्स फिर हँसा। "तुमसे बात करके यह पक्का विश्वास रहता कि तुक कभी किसी से कुछ न कहोगे। बस दो हफ्ते की देर है, फिर वे पिल्ले ठीक हो जायेंगे। जार्ज जानता है कि उसे क्या चाहिए। वह बस बात करता रहता है और तुम्हें एक अक्षर समझ में नहीं आता।" वह जोश से और आगे झुक आया। "मेरी बात का क्या? मैं तो एक नीग्रो हूँ और वह भी कुबड़ा लँगड़ा नीग्रो। इसलिए मेरी बात का कुछ मतलब नहीं, है न? और तुम्हें तो वैसे भी याद नहीं रहेगी। मैंने कई बार देखा है कि आदमी वात करना चाहता है। इसी लिए वह बात करता है, दूसरा सुने या समझे, इससे उसे कोई ग़र्ज़ नहीं। चुप बैठे रहने से किसी सें बात कर सकना कहीं अच्छा है। "वह काफी उत्तेजित हो गया था और बात करते हुए अपने घुटने पर घूँसे मार रहा था। "जार्ज तुमसे चाहे जैसी उलटी-सीधी बात कर सकता है। तुम समझो या न समझो। वह बात तो कर पाता है। एक और आदमी का साथ तो मिल जाता है उसे। यही क्या कम है?"

वह कुछ थमा। उसका स्वर और भी धीमा हो गया, जैसे कुछ समझ रहा हो। "अच्छा मान लो जार्ज अब वापस न आये। मान लो वह कुछ खा ले और वापस न लौटे। तब तुम क्या करोगे?"

यह बात जैसे बर्मे की भांति धीरे-धीरे लैनी के जड़ मस्तिष्क में भी घुस गयी। वह कुछ कुछ समझा कि क्या कहा जा रहा है। "क्या?" उसने पूछा।

"मैंने कहा कि मान लो जार्ज आज शहर गया है और अब तुम्हें उसका कोई पता न चले।" क्रुक्स ने अपनी बात पर ऐसे ज़ोर दिया मानो उसे कोई दाव जीतना हो। "थोड़ी देर के लिए मान लो," उसने दोहराया।

"वह ऐसा नहीं कर सकता।" लैनी चिल्लाया। "जार्ज ऐसा हरगिज़ नहीं कर सकता। मैं बहुत दिनों से उस के साथ हूं। वह आज रात को ही वापस आ जायगा —।" पर लेनी के लिए यह सन्देह भी असह्य था। "तुम सोचते हो वह नहीं आयगा?"

लैनी के इस दुख और परेशानी से क्रुक्स को कुछ अजीब खुशी हुई। उसका चेहरा जगमगा सा गया। "कौन कह सकता है कि एक आदमी क्या करेगा?" उसने बड़ी स्थिरता के साथ कहा। "मान लो कि वह आना तो चाहता है, पर आ नहीं सकता। मान लो वह मारा जाता है, या उसे प्रबल चोट लग जाती है और वह नहीं आ सकता।"

लैनी ने बात को समझने का प्रयत्न किया। "जार्ज ऐसा कोई काम नहीं करेगा", उसने दोहराया। "जार्ज बड़ा समझदार है। वह कभी चोट नहीं खा सकता। उसे आज तक कभी चोट नहीं लगी। वह बहुत होशियार है।"

'पर मान लो, जरा देर के लिए मान ही लो, कि वह लौट कर नहीं आता। तब फिर तुम क्या करोगे?"

लैनी की आकृति पर आशंका की रेखाएँ दौड़ गयीं। "कह नहीं सकता मैं क्या करूँगा। पर, तुम्हारा मतलब क्या है?" उसने चीख कर कहा। "यह बात सच नहीं है। जार्ज को कोई चोट नहीं लगी।"

क्रुक्स ने अपने परिहास का वर्मा कुछ और दबाया। "मैं बताऊँ, क्या होगा? वे तुम्हें एक पागलखाने में पकड़ ले जायेंगे और एक पट्टे से बाँध कर रक्खेंगे, जैसे कुत्ते को रखते हैं।"

एकाएक लैनी की आँखें एक स्थल पर केन्द्रित होकर स्थिर हो गयीं और फिर उनमें प्रबल क्रोध उबल आया। वह उठा और बड़े खतरनाक ढंग से क्रुक्स की तरफ बढ़ा। "किसने चोट पहुंचायी है जार्ज को?" वह चिल्लाया।

अब क्रुक्स ने अपनी ओर बढ़ते हुए संकट को पहचाना। वह अपने तखत पर पीछे की ओर को खिसक गया ताकि बीच में से हट जाय। "अरे मैं तो सिर्फ यह कह रहा था कि मान लो यदि ऐसा हो जाय", उसने कहा। "जार्ज को सचमुच थोड़े ही चोट लगी है। वह भला-चंगा है। रात को लौट आयेगा।"

लैनी उसके सिर पर सवार था। "क्यों मान रहे हो यह सब तुम? किसी को ऐसी बात सोचने का हक नहीं। मेरे रहते कोई यह नहीं सोच सकता कि जार्ज को चोट आयी है।"

क्रुक्स ने अपना चश्मा उतारकर उँगलियों की पोरों से अपनी आँखें पोंछीं। "बैठ जाओ", उसने कहा, "जार्ज को कोई चोट नहीं लगी।"

लैनी धीरे धीरे फिर पीपे पर जा बैठा। "जार्ज को चोट पहुंचने की झूठी बात कोई नहीं कर सकता।" वह बड़बड़ाया।

क्रुक्स ने धीमे से कहा, "शायद अब तुम समझ सको। तुम्हारे पास तो जार्ज है। तुम्हें पूरा विश्वास है कि वह लौट आयगा। पर मान लो कि तुम्हारा कोई संगी न होता। मान लो कि तुम काले आदमी होते और इसलिए और लोगों के साथ बैठकर ताश न खेल पाते। तब तुम्हें कैसा लगता? मान लो तुम्हें भी यहाँ अकेले बैठे बैठे किताबों से माथा फोड़ना पड़ता। यह ठीक है कि शाम को तुम गोधूलि तक जुआ खेल सकते, पर फिर बाद में तो तुम्हें किताबों ही से उलझना पड़ता। किताबें बेकार हैं। आदमी को अपने पास कोई आदमी चाहिए," उसने शिकायत के स्वर में कहा, "यदि बात करने को कोई साथी न हो तो आदमी पागल हो जाता है। इससे कुछ मतलब नहीं कि कौन आदमी अपने पास है, बस वह पास रहे यही काफ़ी है। मैं कहता हूँ", वह लग भग चिल्ला उठा, "मैं कहता हूँ यदि आदमी एकदम अकेला रहे तो वह जिन्दगी से तंग आ जाता है।"

"जार्ज जरूर वापस आ जायगा", लैनी ने डरे हुए स्वर में अपने मन को विश्वास दिलाते हुए कहा। "शायद जार्ज आ ही गया हो। मैं जाकर देख लूँ तो ठीक होगा।"

क्रुक्स ने कहा, "मैं तुम्हें डराना न चाहता था। वह जरूर वापस आ जायगा। मैं तो अपने सम्बंध में कह रहा था। रात को मेरे ऐसा आदमी बड़ा अकेला अकेला अनुभव करता है। वह लाख किताबें पढ़ता हो या इधर-उधर की बातें सोचता हो। कभी-कभी वह सोच में डूब जाता है और उसके निकट कोई ऐसा नहीं होता जो उसे बता सके कि

यह ऐसा है या ऐसा नहीं है। वह सोच सोच कर एक परिणाम पर पहुँचता है। पर वह ठीक परिणाम पर पहुँचा है अथवा गलत पर, यह उसे कोई नहीं बता सकता। वह कुछ नहीं कह सकता। उसके पास ठीक बेठीक नापने के लिए कोई चीज नहीं होती। कई बार मुझे तरह तरह की चीजें दिखायी पड़ती हैं। मैं नशे में तो होता नहीं। पर मालूम नहीं मैं सो रहा होता हूँ या नहीं। यदि कोई दूसरा मेरे साथ हो तो मुझे बता दे कि मैं सो रहा था और मैंने सपना देखा था और मैं निश्चिन्त हो जाऊँ पर अब मैं नहीं जान पाता।" क्रुक्स अब कमरे के पार, खिड़की की ओर देख रहा था।

लैनी ने बड़ी विवशता के स्वर में कहा, "जार्ज मुझे छोड़ कर न जायगा। जार्ज ऐसा नहीं करेगा।"

अस्तबल वाला जैसे स्वप्नावस्था में कहता चला जा रहा था, "मुझे याद है जब मैं अपने बाप के बाड़े में बच्चा था। मेरे दो भाई थे। वे सदा मेरे पास रहते थे, मेरे ही कमरे में सोते थे, मेरे ही बिस्तर पर। तीनों एक साथ। हमारे खेत में स्टराबेरियों की एक क्यारी थी, एक दूब का मैदान था। जिस दिन सवेरे धूप निकलती, उस दिन मैं मुर्गी के चूज़ों को दूब के खेत में छोड़ देता। मेरे भाई बाड़े के ऊपर बैठे उन्हें देखा करते —नन्हे नन्हें प्यारे सफेद चूज़े.........

धीरे धीरे लैनी समझने लगा कि क्रुक्स क्या कह रहा है। उसकी आँखों में चमक आ गयी और वह बोला। "जार्ज कहता है कि हम भी खरगोशों के लिए दूब का मैदान तैयार करेंगे।"

"कैसे खरगोश?"

"हम लोग खरगोश पालेंगे और एक हिस्से में बेरियां लगायेंगे।"

"तुम पागल हो।"

"सचमुच लगायेंगे। जार्ज से पूछ लेना।"

"तुम एक दम पागल हो।" अपने सिर को छूकर क्रुक्स ने हवा में हाथ घुमा दिया कि रत्ती भर भी अक्ल लैनी के भेजे में नहीं। "मैंने सड़कों पर और बाड़ों में सैकड़ों मजदूरों को कन्धे पर अपना बोरिया बंधना उठाये आते जाते देखा है। सब सालों के दिमाग में यही एक थोड़ी सी जमीन होती है।" क्रुक्स ने अतीव उपेक्षा से कहा। "वे आते हैं, कुछ दिन यहाँ झख मारते हैं फिर आगे चल देते हैं। और उन सब सालों के दिमाग में यही थोड़ी सी जमीन रहती है और अपनी खेती और अपनी बकरियों और गायों और सुअरों की साध होती है। सब के सिर पर एक ही भूत सवार होता है। पर उनमें से एक भले आदमी को भी कभी कोई जमीन नहीं मिलती। ठीक स्वर्ग की तरह हर आदमी थोड़ी सी जमीन की तलाश में है। मैंने यहाँ बहुत-सी किताबें पढ़ी हैं। कभी किसी को स्वर्ग नहीं मिलता और न कभी कोई जमीन पाता है। वे सब धरती विहीन मजदूर दिन रात इस साध को मन में लिये रहते हैं। दिन रात इसी की चर्चा करते हैं, पर वह बस उनके दिमाग में ही रहती है।" वह कुछ रुका और उसने खुले हुए दरवाजे की ओर देखा, क्योंकि घोड़े बेचैनी से इधर उधर पांव पटक रहे थे और उनकी जंजीरें खनखना रही थीं। एक घोड़ा हिनहिनाया।

"शायद कोई आया है वहाँ", क्रुक्स ने कहा। "हो सकता है स्लिम आया हो। कभी-कभी स्लिम रात में दो-तीन बार तक चक्कर लगा जाता है। स्लिम सच्चा स्किनर है। अपनी जोड़ियों की बड़ी चिन्ता रहती है उसे।" वह कष्ट के साथ सीधा

खड़ा हुआ और दरवाजे की ओर बढ़ा। "तुम हो, स्लिम ?" उसने पुकार कर कहा।

उत्तर में कैंडी का स्वर सुनायी दिया, "स्लिम तो शहर गया है। अरे, तुमने लैनी को देखा है ?"

"तुम्हारा मतलब उस बड़े लम्बे तगड़े जार्ज के साथी से है।"

"हाँ ! उसे इधर कहीं देखा है तुमने ?"

"वह यहीं बैठा है"। क्रुक्स ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया। और वह लौट कर अपने तख्ते पर जाकर लेट गया।

कैंडी अपनी लुंज कलाई को खुजलाता हुआ दरवाजे में आ खड़ा हुआ। उस उजले कमरे में वह अंधे की तरह झांक रहा था। उसने अंदर आने का प्रयास नहीं किया। "मेरी बात सुनो लैनी। मैं उन खरगोशों के बारे में हिसाब लगा रहा था।"

क्रुक्स ने झल्लाहट के साथ कहा, "चाहो तो अंदर आ सकते हो।"

कैंडी कुछ परेशान मालूम होता था। "मालूम नहीं। अगर तुम कहो तो आ जाऊँ।"

"आ जाओ अंदर। सभी लोग जब आ रहे हैं, तो तुम भी आ सकते हो।" क्रुक्स की प्रसन्नत इस कृत्रिम क्रोध की आड़ में छिप न पा रही थी।

कैंडी अंदर चला आया, पर वह अब भी कुछ झिझक रहा था। "तुम्हारी यह छोटी-सी जगह तो बड़ी अच्छी और आरामदेह है। उस-ने क्रुक्स से कहा। "अपना अलग कमरा होने से बड़ा अच्छा लगता होगा।"

"जरूर", क्रुक्सने कहा। "और खिड़की के नीचे खाद का अम्बार भी। जरूर बड़ा अच्छा लगता है।"

लैनी बीच में बोल उठा, "तुम खरगोशों के बारे में कह रहे थे।"

कैंडी टूटे हुये पट्टे के पास दीवार के सहारे टिक कर अपने हाथ के लुंज को खुजलाता खड़ा रहा। "मुझे यहां बहुत दिन हो गये", उसने कहा। "और क्रुक्स को भी यहां बहुत दिन हो गये हैं। पर मैं आज पहली बार ही उसके कमरे में आया हूँ।"

क्रुक्स ने बड़ी कटुता से व्यंग भरे स्वर में कहा, "काले आदमी के कमरे में लोग अधिक नहीं आते। स्लिम और मालिक के अतिरिक्त यहां कोई नहीं आता।"

कैंडी ने तेजी से विषय बदल दिया। "स्लिम जैसा होशियार स्किनर मैंने कभी नहीं देखा।"

लैनी कैंडी की ओर झुक गया। "उन खरगोशों की बात बताओ" उसने जिद करते हुए कहा।

कैंडी मुस्कराया। "मैंने हिसाब लगा लिया है। यदि हम ठीक से चलें तो उन खरगोशों से भी कुछ आय हो सकती है।"

"पर उनकी देख भाल मैं ही किया करूँगा।" लैनी बीच ही में बोल उठा। "जार्ज ने कहा है कि मैं ही उनकी देख भाल किया करूँगा। उसने वादा कर लिया है।"

क्रुक्स ने निर्दयतापूर्वक बीच हीं में टोक कर कहा, "तुम लोगों की मूर्खता अपार है। तुम चाहे अपने आप को कितना धोखा दो, कितने सपने देखो पर जमीन तुम्हें नहीं मिलने की। तुम यहीं गुसलखाने साफ करते रहोगे। जब तक तुम्हारी अरथी उठेगी तब तक! मैंने

तुम्हारे जैसे बीसियों देखे हैं। लैनी दो-तीन हफ्ते में यहां से छोड़-छाड़ कर फिर सड़क पर जूते चटखाता दिखायी देगा। लगता है, हर मजदूर के सिर जमीन का भूत सवार है।"

कैंडी ने बड़े गुस्से से अपने गलमुच्छों को रगड़ा। "तुम चाहे जो कहो, हम लोग यह सब करने ही वाले हैं। जार्ज ने कहा था कि जरूर करेंगे। हमारे पास रुपया अभी तैयार है।"

"हां ?" क्रुक्स ने कहा। "और अब जार्ज कहां है ? शहर में किसी रंडी की बाहों में न। वहां जायगा तुम्हारा रुपया। भगवान कसम मैंने बार बार यह होते देखा है। अनगिनत लोगों को मैं देख चुका हूँ जिन के सिर पर जमीन का भूत सवार है। पर वह कभी हाथ में उनके नहीं आती।"

कैंडी ने लगभग चीख कर कहा, "जरूर हम सब के सिर सवार है जमीन का भूत। हर आदमी थोड़ी-सी जमीन चाहता है। ज्यादा नहीं। बस इतनी सी जिसे वह स्वयं जोत बो सके। जिससे उसकी अपनी गुजर-बसर आज़ादी से हो सके। जिसका वह स्वयं स्वामी हो। जिस जमीन से कोई उसे निकाल न सके। मेरी कभी कोई जमीन नहीं हुई। इस प्रान्त में करीब-करीब हर साले के लिए मैंने फ़सल बोयी है। पर उस फसल पर कभी मेरा जरा भी अधिकार नहीं रहा। जब वह फसल कटी तो वह दूसरों की कोठियों में भरी गयी। आखिर अब जाकर हम लोग अपना इरादा पूरा करने वाले हैं। तुम इसे झूठ मत समझना। रुपया जार्ज के पास शहर में नहीं। रुपया बैंक में है। मैं, लैनी और जार्ज तीनों जायेंगे। हमारा तीनों का अपना-अपना अलग कमरा होगा। हम एक कुत्ता पालेंगे, और खरगोश और मुर्गियां और हमारा हरा-भरा अनाज होगा,

और हम शायद एक गाय या बकरी भी रख सकेंगे।" वह चुप हो गया, अपने कल्पना चित्र से विभोर हो उठा।

क्रुक्स ने पूछा, "तुमने कहा तुम्हारे पास रुपया है।"

"जरूर है। करीब-करीब पूरा रुपया ही है। बस थोड़ी-सी कसर और है। एक महीने में वह भी पूरी हो जायगी। जार्ज ने जमीन भी छाँट कर पसंद कर रक्खी है।"

क्रुक्स ने अपना हाथ पीछे की ओर घुमा कर अपनी रीढ़ की हड्डी ढूँढ़ने की कोशिश की। "मैंने आज तक किसी का सपना पूरा होते नहीं देखा," उसने कहा। "मैंने लोग देखे हैं जो जमीन के लिए पागल हैं, पर हर बार कोई न कोई रंडी का घर या जुए की बाजी सब हिसाब-किताब बराबर कर देती है।" वह कुछ हिचकिचाया। "..... यदि तुम......तुम लोगों को कभी किसी मजदूर की जरूरत हो, बिना पगार के, बस रहने खाने पर, तो मैं आने को तैयार हूँ। मैं इतना निकम्मा नहीं हूँ। मैं चाहूँ तो खूब कस कर मेहनत न कर सकता हूँ"

"तुम में से किसी ने कर्लीं को देखा है?"

वे चौंके। उनके सिर दरवाजे की ओर घूम गये। कर्ली की बीवी अंदर झाँक रही थी। उसके चेहरे पर गहरा पाउडर पुता था। ओठ उसके कुछ खुले थे। वह जल्दी-जल्दी साँस ले रही थी, जैसे दौड़ कर आयी हो।

"यहां नहीं आया कर्ली," कैंडी ने तीखेपन से कहा।

वह अब भी दरवाजे में खड़ी उन्हें देख कर मुस्करा रही थी और एक हाथ की तर्जनी और अँगूठे से दूसरे हाथ के नाखूनों को खुरच रही थी। उसकी दृष्टि एक से दूसरे चेहरे पर दौड़ रही थी। "सब

अपाहिजों को वे यहां छोड़ गये हैं," उसने अन्त में कहा। "तुम सोचते हो मैं जानती नहीं वे कहां गये हैं ? कर्ली भी मुझे मालूम है वे सब कहां गये हैं।"

लैनी उसकी ओर मंत्रमुग्ध-सा देख रहा था। पर कैंडी और क्रुक्स उसकी ओर देखे बिना भ्रू भंग किये हुए थे। "यदि आप जानती हैं तो हमसे पूछने क्या आयी हैं ?" कैंडी ने कहा

लड़की ने उन्हें बड़ी कौतूहल भरी दृष्टि से देखा। "कैसी अजब बात है," उसने कहा। "यदि मैं किसी अकेले आदमी से मिलती हूँ तो वह जरा नहीं बिदकता खूब बातें करता है। पर जहां एक से दो हुए कि उनके मुँह को ताला पड़ जाता है। बस झल्लाने के सिवा उन्हें और कुछ नहीं सूझता।" उसने नाखून खुरचना छोड़ दिया और अपने हाथों को कमर के ऊपर रख लिया। "तुम लोग सब एक दूसरे से डरते हो। और कोई बात नहीं। हर एक को यही डर बना रहता है कि दूसरा उससे खार खाये बेटा है।"

पल भर चुप रहने के बाद क्रुक्स ने कहा, "अब यदि आप अपने मकान में चली जायें तो अच्छा होगा। हम किसी मुसीबत में नहीं पड़ना चाहते।"

"पर मैं तुम्हारे लिए क्या मुसीबत ला रही हूँ। तुम सोचते हो मेरी कभी किसी से बात करने की इच्छा नहीं होती ? सोचते हो मुझे हर समय घर में बैठे रहना अच्छा लगता है ?"

कैंडी ने अपने लुंजे हाथ को अपने घुटने पर रक्खा और धीरे-धीरे उसे दूसरे हाथ से मलने लगा। उसने शिकायत के से स्वर में कहा "आपका पति है। आपके लिए दूसरे लोगों गिर्द मँडराना और बखेड़ा खड़ा करना अच्छा नहीं।"

लड़की यह सुन कर एक दम बरस पड़ी ! "हां मेरा पति है। जैसा है, तुम सब जानते हो। तुम सब ने उसे देखा है। कैसा जवान है ? है ना ? सारा दिन यह शेखी बघारने के सिवा उसे और क्या काम है कि जो लोग उसे पसद नहीं उनके साथ वह यह करेगा और वह करेगा। और उसे पसंद कौन है ? कोई भी नहीं। तुम्हारा ख्याल है। उस छोटे से कमरे में आठों पहर मैं यही सुना करूँ कि किस प्रकार वह पहले अपने बायें हाथ से यों अपने शत्रु की कनपटी सहलायेगा और फिर कैसे दायें से उसकी आँख या नाक, या दांत तोड़ेगा। "एक दो और तीन—और यह चारों खाने चित्त !" तुम्हारा ख्याल है सारा दिन यही बकवास सुनने के सिवा मेरा कोई और काम नहीं।

वह जरा रुकी और उसके चेहरे की झल्लाहट भी कुछ दूर हो गयी। एकाएक बहुत दिलचस्पी के साथ उसने पूछा, "अच्छा कर्ली के हाथ में क्या हुआ है ?"

एक विचित्र उलझना भरा सन्नाटा छा गया। कैंडी ने मौन रूप से लैनी की ओर देखा। फिर वह खाँस कर बोला; "क्यों......कर्ली... उसका हाथ मशीन में आ गया था।"

पल भर वह ध्यान से उन्हें तकती रही और फिर ठहाका मार कर हँस पड़ी। "मशीन में आ गया है तुम्हारा सिर ! तुम मुझे ऐसा बुद्धू समझते हो ? कर्ली ने किसी के साथ अपना "एक दो" शुरू किया था और वह तीन नहीं कह पाया" वह हँसी। मशीन में आगया— तुम्हारा सिर ! जब से उसका हाथ टूटा है तब से वह अब "एक दो तीन और वह मारा" नहीं करता। किसने की है उसकी मरम्मत ?"

कैंडी ने अनमने भाव से वही वाक्य दोहरा दिया. "मशीन में आ गया था।"

"अच्छी बात है," उसने अतीव उपेक्षा से कहा। "अच्छी बात है, चाहते हो तो डाले रहो परदा। मुझे क्या परवाह है? तुम बुद्धू लोग अपने आपको न जाने क्या समझते हो? क्या तुम लोगों ने मुझे दूध पीती बच्ची समझ रखा है। मैं कहती हूँ, मैं चाहती तो थियेटर में चली जाती। और वह भी एकाध में नहीं। एक आदमी ने मुझसे कहा था कि वह मुझे सिनेमा कम्पनी में जगह दिला सकता है......।" क्रोध से उसकी साँस जल्दी-जल्दी चलने लगी थी। "शनि की रात। सब लोग मन बहलाने चल दिये। सारे के सारे! और मैं क्या कर रही हूँ? यहाँ खड़ी-खड़ी तुम काठ के उल्लुओं से बातें कर रही हूँ—एक नीग्रो, एक बौड़म, और एक बुड्ऊ—और यह सब सहन किये जा रही क्योंकि और कोई है नहीं यहां।"

लैनी उसकी ओर एक टक देख रहा था, उसका मुँह आधा खुला था। क्रुक्स ने अपने को नीग्रोपन के भीषण रक्षा-कवच में बंद कर लिया था। पर बूढ़े कैंडी में एक परिवर्तन दिखायी पड़ा। वह एका-एक उठा और अपने कीलों के पीपे को ठोकर से पीछे ढकेलते हुए, गुस्से से बोला, "बस बहुत हो चुका। तुम्हारी यहाँ कोई ज़रूरत नहीं है। एक बार हम कह चुके हैं कि यहाँ कोई काम नहीं तुम्हारा। और मैं कहता हूँ कि हम लोगों के बारे में तुम्हारे बड़े बे-सिर-पैर के विचार हैं। तुम्हारी उस मुर्गी की-सी खोपड़ी में यह समझने लायक भी अक्ल नहीं कि हम काठ के उल्लू नहीं हैं। मान लो तुम हमें निकलवा दोगी। मान ही लो। तुम सोचती हो हम ऐसी दो टके की नौकरी के लिए दर-दर मारे फिरेंगे। तुम्हें क्या मालूम हमारा अपना बाड़ा है

और अपना घर है। हम इसी दम यहां से चले जायेंगे। हम यहीं क़ब्र में जाने वाले नहीं हैं! हमारा घर है, मुर्गियां हैं, फलों के पेड़ हैं जो, यहां से सौगुने अच्छे हैं। और हमारे दोस्त हैं। समझीं? शायद कभी ऐसा रहा हो कि हमें निकाले जाने का डर था, पर अब वे दिन लद गये। हमारी अपनी ज़मीन है, हमारी अपनी ज़मीन, वहां हम किसी वक्त भी जा सकते हैं।"

कर्ली की बीवी उसकी बात पर जोर से हँस पड़ी। "सिर तुम्हारा," वह लोट पोट होती बोली। "मैंने तुम्हारे जैसे बहुत देखे हैं। यदि तुम्हारे पास अपना एक तिनका भी होता तो तुम कभी के खाने-पीने में उड़ा कर बराबर कर चुके होते। मैं अच्छी तरह जानती हूँ तुम जैसों को।"

कैंडी का चेहरा तमतमा उठा था, पर कर्ली की बीवी के बोलना खतम करने के पहले उसने अपने ऊपर काबू पा लिया। परिस्थिति उसके काबू में थी। "तुमसे यह सब कहने से कोई फायदा नहीं। यह मुझे पहले ही समझ लेना चाहिए था" उसने धीमे से कहा। "अब तुम यहां से जाकर अपना काम देखो। हमें तुमसे कुछ नहीं कहना है। हमें मालूम है हमारे पास क्या है, और हमें इसकी तिनका भर परवाह नहीं कि तुम उसे मानती हो या नहीं। इसलिए तुम अब यहां से चलती बनो, क्योंकि शायद कर्ली को यह पसंद न आयेगा कि उसकी बीवी बखारे में "काठ के उल्लुओं" से मथा पच्ची कर रही थी।

कर्ली की बीवी ने एक एक करके तीनों की ओर देखा। वे सब उसके लिए एक दम बन्द थे। लैनी की ओर वह दूसरों की अपेक्षा अधिक देर तक देखती रही। हार कर लैनी ने अचकचा कर आँखें नीची

कर लीं । सहसा कर्ली की बीवी ने पूछा। "तुम्हारे चेहरे पर ये सब घाव कैसे आ गये ?"

लैनी ने अपराधी की भांति आंखें उठाकर पूछा," "किसके..... मेरे ?"

"हां' तुम्हारे ।"

लैनी सहायता के लिए कैंडी की ओर मुड़ा फिर उसकी निगाहें झुक गयीं। फर्श की ओर देखते हुए उसने कहा। "उसका हाथ मशीन में आगया था ।"

कर्ली की बीवी ठहाका मार कर हँस पड़ी । "अच्छा, मशीन ही सही। मैं तुमसे फिर बात करूँगी। मशीनें मुझे अच्छी लगती हैं।"

कैंडी बीच ही में बोल उठा, "इस बेचारे पर दया करो। इससे तुम मत उलझो। मैं जार्ज को बता दूँगा कि तुम यह कह रही थीं। जार्ज तुम्हें कभी लैनी से न उलझने देगा।"

"जार्ज कौन है ?" उसने पूछा । "वह छोटा-सा आदमी, तुम जिसके साथ आये हो ?"

लैनी खुशी से मुस्कराया । "हाँ वही ।" उसने कहा, "और उसने कहा है कि वह मुझे ख़रगोशों की देख भाल करने देगा ।"

"अच्छा, यदि ख़रगोश ही तुम्हें चाहिएं तो एक जोड़ा ख़रगोश मैं भी मँगवा लूंगी तुम्हारे लिए।"

क्रुक्स अपने तख़्ते से उठा और कर्ली की बीवी के सामने आकर खड़ा हो गया। "बस बहुत हो चुका, उसने रुखाई से कहा। "तुम्हें एक काले आदमी के कमरे में आने का कोई अधिकार नहीं। यहां गोल माल करने का भी तुम्हें कोई अधिकार नहीं। अब तुम यहाँ से नौ, दो,

ग्यारह हो जाओ यदि तुम चलती न बनीं तो मैं मालिक से कह कर तुम्हारा बखारे में आना एक दम बंद कर दूंगा।"

कर्ली की बीवी अतीव घृणा से उसकी ओर मुड़ी। "सुन ओ नीग्रो सुअर के बच्चे," उसने कहा। "तू जानता है कि यदि तैने अपनी थोथनी खोली तो तेरी क्या दुरगत होगी ?"

क्रुक्स बड़े हताश भाव से उसकी ओर तकने लगा और तब वह फिर अपने तख़्ते पर बैठ गया और अपने भीतर सिमट गया।

कर्ली की बीवी दो क़दम आगे बढ़ आयी, "जानता है मैं क्या कर सकती हूँ ?"

क्रुक्स सिमट कर जैसे और भी छोटा लगने लगा। वह दीवार से चिपक सा गया। बड़े धीमे स्वर में उसने केवल इतना कहा, "जानता हूं सरकार।"

"तो अपनी औक़ात में रह नीग्रो के बच्चे। इतना जान ले, मैं तुझे आसानी से पेड़ पर लटकवा सकती हूँ। इतनी आसानी से कि उसमें कुछ भी मज़ा नहीं।"

क्रुक्स ने अपने आप को बिल्कुल ख़तम कर दिया। को नहीं, कोई अहँ नहीं—ऐसी कोई चीज़ नहीं जो रुचि अथवा अरुचि पैदा कर सके। उसने उत्तर में केवल इतना कहा, "जी सरकार" और उसके स्वर की जैसे कोई ध्वनि न थी।

क्षण भर कर्ली की पत्नी इस प्रतीक्षा में खड़ी रही कि क्रुक्स अपना मुँह खोले कि वह उसे फिर लताड़े पर क्रुक्स एक दम शांत बैठा रहा, उसकी आँखें और कहीं जमी रहीं, हर वह चीज़ जिस पर चोट हो

सकती थी, एक दम उसके भीतर सिमट गयी। आखिर कर्ली की बीवी शेष दोनों की ओर मुड़ी।

बूढ़ा कैंडी उसकी ओर मंत्र-मुग्ध सा देख रहा था। "यदि तुम ऐसी हरकत करोगी तो हम लोग कह देंगे" उसने शांतिपूर्वक कहा। "हम कह देंगे कि तुम झूठमूठ तोहमत लगा रही हो क्रुक्स पर !"

"कह दो मेरी जूती से" वह चीख कर बोली। "कौन सुनेगा तुम्हारी बात ?"

कैंडी दब गया। "नहीं......", उसने हामी भरते हुए कहा। "कोई भी नहीं सुनेगा" !

लैनी ने मिमियाते हुए कहा, "जार्ज यहाँ होता तो अच्छा था। जार्ज यहाँ होता तो अच्छा था।"

कैंडी उसकी ओर को झुका। "तुम चिन्ता न करो", उसने कहा। मैंने अभी अभी लोगों के आने की आवाज सुनी है। जार्ज बस आता ही होगा, शर्त बदता हूँ। 'फिर वह कर्ली की पत्नी की ओर मुड़ा। "अच्छा है अब तुम घर चली जाओ! उसने धीरे से कहा। "यदि तुम अभी चली जाओ तो हम कर्ली से नहीं कहेंगे कि तुम यहाँ आयी थीं।"

कर्ली की पत्नी ने स्थिर दृष्टि से कैंडी को देखा। "मैं जानती हूँ, जितनी आवाज़ तुम्हें सुनायी देती है।"

"जोखिम न उठाना ही अच्छा है", कैंडी ने कहा। "तुम्हें मेरी सुनने की शक्ति पर विश्वास न भी हो तो भी तुम्हें बचकर चलना चाहिए।"

वह लैनी की ओर घूमी। "मुझे बड़ी खुशी है कि तुमने कर्ली की थोड़ी सी मरम्मत कर दी। यह कभी न कभी होने ही को थी। कई बार तो मुझे स्वयं इच्छा होती है कि मैं ही उसकी तबीयत ज़रा साफ़

कर दूँ।" वह दरवाजे में से खिसक कर अँधेरे बखारे में गायब हो गयी। जब वह बखारे से गुज़री थी तो घोड़ों की ज़ंजीरें खनखनायी, कुछ घोड़े हिनहिना उठे और कुछ अपने पैर पटकने लगे।

धीरे-धीरे क्रुक्स अपने रक्षा-कवच से बाहर निकल आया। "क्या तुमने सचमुच लोगों के आने की आवाज सुनी थी?" उसने पूछा।

"सचमुच। मैंने सुना था।"

"पर हमने तो कुछ नहीं सुना।"

"दरवाजा बंद होने की आवाज हुई थी", कैंडी ने कहा "भगवान कसम, यह कर्ली की बीवी चुपचाप खिसकने में एक दम निपुण है। बड़ा ही अभ्यास किया होगा।"

क्रुक्स उस विषय को टालना चाहता था। "अब तुम लोग जाओ तो अच्छा है", उसने कहा। "मैं अब अकेला रहना चाहता हूँ। काले आदमी का यह तो अधिकार है ही। चाहे वह उसे पसंद नहीं।"

"उस कुतिया को वह बात तुमसे न कहनी चाहिए थी", कैंडी ने कहा।

"वह कोई बात नहीं", क्रुक्स ने बड़े निस्तेज भाव से कहा। "तुम लोगों के यहाँ आकर बैठने से मैं भूल गया था। जो उसने कहा वह सोलहो आने ठीक है।"

घुड़साल में फिर घोड़े हिनहिनाये, जंजीरें खनकीं और किसी ने पुकारा, "लैनी, ओ लैनी। तुम बखारे में हो?"

"जार्ज आगया", लैनी चिल्ला उठा। और उसने उत्तर दिया, "यह रहा जार्ज, मैं यहाँ हूँ।"

निमिष भर बाद जार्ज दरवाजे की चौखट पर खड़ा था। उसने कुछ नाराज़गी के साथ चारों ओर देखा। "क्रुक्स के कमरे में तुम क्या कर रहे हो ?" उसने आक्रोश के साथ कहा, "तुम लोगों को यहाँ न आना चाहिए था।"

क्रुक्स ने सिर हिलाया। "मैंने तो इन लोगों से कहा था, पर ये माने नहीं।"

-"तुम्हें चाहिए था इन्हें बरबस निकाल देते।"

"मैंने ज़रूरत नहीं समझी", क्रुक्स बोला। "लैनी भला आदमी है।"

कैंडी जैसे अब जगा। "ओह जार्ज ! मैंने अच्छी तरह हिसाब लगा लिया है। मैंने हिसाब लगा लिया है कि हम उन खरगोशों से भी कुछ रुपया पैदा कर सकते हैं।"

जार्ज के माथे पर बल पड़ गये। "मेरे ख्याल से मैंने तुमसे कहा था कि किसी से इस बात का जिक्र मत करना।"

कैंडी जैसे आसमान से गिर पड़ा। क्रुक्स के अतिरिक्त तो मैंने किसी से नहीं कहा।"

"अच्छा हटाओ" उसने रुखाई से कहा, "अब तुम लोग यहाँ से निकलो।" और फिर जैसे वह अपने आप से बोला "हे भगवान ! लगता है, मैं एक मिनट के लिए भी कहीं नहीं जा सकता।"

कैंडी और लैनी उठे और दरवाज़े की ओर बढ़े। क्रुक्स ने पुकारा "कैंडी !"

"कहो ?"

"याद है न, मैंने मिट्टी खोदने या छोटे-मोटे काम करने के बारे में कुछ कहा था ?"

"हाँ", कैंडी ने उत्तर दिया। "मुझे याद।"

"उस बात को भूल जाना", क्रुक्स ने कहा। "मैं योंही मज़ाक कर रहा था। मैं वैसी किसी जगह भी न जाऊँगा।"

"अच्छी बात है, जैसी तुम्हारी मर्जी। बाई बाई"

तीनों आदमी दरवाजे के बाहर निकल गये। जैसे ही वे बखारे में से गुज़रे, घोड़े हिनहिना उठे और ज़ंजीरें खनक उठीं।

क्रुक्स अपने तखते पर बैठा कुछ क्षण तक दरवाजे की ओर तकता रहा। फिर उसने दवाई की शीशी की ओर हाथ बढ़ा दिया। उसने अपनी कमीज पीठ पर से ऊँची कर ली, अपनी गुलाबी हथेली में थोड़ी सी दवाई ली और फिर हाथ पीछे करके धीरे धीरे अपनी पीठ मलने लगा।

पाँच

उस लम्बे चौड़े महान बखारे के एक सिरे पर नयी पुआल का पहाड़ लगा था जो धीरे धीरे ढालुआं होता बखारे के दूसरे सिरे तक चला गया था। वहाँ थोड़ी सी समतल जगह बची हुई थी, जहाँ नयी फ़सल भरी जाने वाली थी। पुआल के पहाड़ पर एक जैक्सन पचंगला* अपनी चरखी से लटका हुआ था। बखारे के एक बग़ल को घोड़ों के थान बने दिखायी देते थे। जिनकी लकड़ी के चोकर बक्सों के बीच से घोड़ों के सिर दिखायी पड़ जाते थे।

इतवार के दिन दोपहर के बाद का समय था। सुस्ताते हुए घोड़े बची हुई घास के टुकड़ों को चबा रहे थे। वे अपने पैर पटकते, अपने

---

*पंचगला = पाँच दांतों अथवा अंगुलियों वाला काँटा जो भुस व पुआल अथवा फसल का ढेर लगाने के काम में आता है।

दाने की नांद के काठ को काटते, और जंजीरों को खनखनाते थे! दोपहर के बाद की धूप पतली पतली फांकों में बखारे की दीवार की दरारों से अंदर घुस आयी थी और पुआल पर पतली पतली चमकीली लकीरें बना रही थी। मक्खियों की भिनभिनाहट, दोपहर के बाद के सालस वातावरण को गुंजा रही थी।

बाहर जुआ ज़ोरों से चल रहा था। घोड़ों की नालें लोहे के खूंटे पर ज़ोर से फेंकी जा रही थी और बाजियां लग रही थी। जीत का शोर हार की चिड़चिड़ाहट और तमाशियों के आवाज़ों से मिल कर भुसौड़े में आ रहा था। पर यों वहां गर्मी थी और सन्नाटा था और वही दोपहर की सालस गूंज!

बखारे में उस समय केवल लैनी था। उस समतल जगह में जो अभी खाली थी, वह एक नांद के नीचे एक बक्से के बराबर बैठा हुआ था। लैनी पुआल पर बैठा था और उसके सामने एक मरा हुआ पिल्ला पड़ा था, जिसे वह मुटर मुटर तक रहा था। बहुत देर तक वह उसी तरह उसकी ओर तकता रहा फिर उसने अपना बड़ा सा हाथ बढ़ाकर उसे थपथपाया—एक सिरे से, दूसरे सिरे तक पूरे के पूरे पिल्ले को थपथपाया।

"तुम मर क्यों गये?" वह धीरे धीरे पिल्ले से कहने लगा "तुम तो चूहे जैसे छोटे नहीं हो। तुम्हें तो मैंने ज़ोर से नहीं दबाया।" उसने पिल्ले का सिर ऊपर की ओर को घुमाया, उसके मुख को अपनी ओर किया और बोला "अब यदि जार्ज को पता चल गया कि तुम मर गये हो तो वह कभी मुझे खरगोशों की देख भाल न करने देगा।"

उसने वहीं पुआल को हटा कर एक छोटा सा गढा बनाया, पिल्ले को उसमें रक्खा और उसे घास से ऐसे ढँक दिया कि सहसा दिखायी न पड़े। पर वह पिल्ले की उस कब्र से आँखें न हटा सका। फिर उसने अपने आप कहा, "यह तो कोई इतनी बुरी बात नहीं है कि मैं जाकर झाड़ी में जा छिपूं। अरे नहीं, यह ऐसी बात नहीं। मैं जार्ज से कह दूँगा कि यह बखारे में मुझे मरा मिला था।"

उसने पिल्ले को फिर से बाहर निकाला और उसे भली भांति देखने लगा। उसने फिर उसे कान से पूंछ तक थपथपाया। फिर वह बड़े दुख के साथ कहने लगा, "पर उसे मालूम हो जायगा। जार्ज को सदा मालूम हो जाता है। वह कहेगा, 'तुम्हीं ने मारा है। मुझ से चालाकी मत करो।' और फिर वह कहेगा, 'बस अब मैं तुम्हें खरगोशों की देख भाल न करने दूँगा।"

एकाएक उसे प्रबल क्रोध हो आया "तुम्हारी ऐसी की तैसी!" वह चीख़ा। "तुम मर क्यों गये? तुम तो चूहे की तरह नन्हें मुन्ने नहीं हो"। और उसने पिल्ले को उठा कर जोर से दूर फेंक दिया। फिर वह पीठ मोड़ कर बैठ गया। उसने अपने घुटनों पर सिर टिका लिया और बड़बड़ाने लगा। "अब जार्ज मुझे खरगोशों की देखभाल नहीं करने देगा। अब वह कभी मुझे खरगोशों की देख भाल न करने देगा।" वह दुख के मारे आगे-पीछे झूलने लगा।

बाहर लोहे के तख्ते पर नाल के फेंकने की आवाज़ आयी और फिर एक साथ कुछ लोग चिल्ला उठे। लैनी उठा और फिर जाकर पिल्ले को उठा लाया और उसे पुआल पर रख कर बैठ गया। उसने पिल्ले को फिर थपथपाया। "तुम उतने बड़े नहीं थे।" उसने कहा।

"लोगों ने मुझे ख़बरदार किया था। उन्होंने कहा था कि तुम उतने बड़े नहीं हो। मैं न जानता था कि तुम इतनी जल्दी मर जाओगे।" वह पिल्ले के निर्जीव लटकते कान को अपनी उँगली से सहलाने लगा। "हो सकता है जार्ज कुछ न कहे।" वह खदबदाया "इस साले अभागे कुतिया के बच्चे में जार्ज को क्या दिलचस्पी है।"

तभी कर्ली की बीवी दूसरे कोने पर दिखायी पड़ी। वह इतने चुपके से आयी थी कि लैनी ने उसकी पदचाप नहीं सुनी। वह अपनी भड़कीली सूती पोशाक पहने थी, जिस पर लाल शुतुर्मुग के पंख ठिके हुए थे। उसके चेहरे पर पाउडर पुता हुआ था और उसकी लटों के घुंघर अपनी अपनी जगह सजे सँवरे थे। जब वह काफ़ी निकट आ गयी तो लैनी ने सिर उठाया और उसे देखा।

घबराहट में उसने अपनी उँगलियों से पिल्ले के ऊपर पुआल डाल दी और खीज कर उसने कर्ली की पत्नी की ओर देखा।

"क्यों बेटे वहां क्या छिपा रखा है तुमने?" वह स्निग्धता से बोली।

लैनी उसकी ओर तकता रहा। "जार्ज ने कहा है कि मुझे तुमसे कोई मतलब न रखना चाहिए— न बोल चाल न कुछ और......।"

वह हँसी, "जार्ज तुम्हें हुक्म देता है, हर चीज़ के बारे में?"

लैनी ने पुआल की ओर देखा। "उसने कहा है कि यदि मैंने तुमसे बात चीत की तो वह मुझे ख़रगोशों की देख भाल न करने देगा"।

वह धीमे से बोली, "उसे डर है कि कर्ली नाराज़ हो जायगा। कर्ली की एक बांह तो मशीन में आ ही गयी है। यदि वह अधिक गोल-माल करे तो दूसरी भी मशीन में दे देना।" और वह हँसी,

"मुझसे कुछ छिपा नहीं। मशीन में आने की गप मुझे मत सुनाना, मुझ पर वह झूठ नहीं चल सकता। मैं सब जानती हूँ"

पर लैनी बातों में आने को तैयार न था। "नहीं, जी, मैं तुमसे किसी तरह की बात चीत नहीं कर सकता।"

वह उसकी बगल में पुआल पर घुटनों के बल बैठ गयी। "सुनो" उसने कहा। "सब लोग वहां जुए में मगन हैं। अभी सिर्फ चार बजे हैं। उनमें से कोई भी खेल छोड़ कर आने वाला नहीं है। तुम क्यों मुझसे बात नहीं कर सकते? मैं कभी—किसी से बात नहीं कर सकती। मुझे बड़ा अकेला-अकेला लगता है।"

"पर मुझे तो तुमसे बात चीत करने की इजाज़त नहीं।"

"मेरा मन नहीं लगता," कर्ली की पत्नी बोली, "तुम तो लोगों से बात चीत कर सकते हो, पर मैं कर्ली के सिवा किसी से दो बात नहीं कर सकती। वह नाराज़ हो जाता है। यदि तुम्हें किसी से भी बोलने को न मिले तो कैसा लगे?"

लैनी ने कहा, "पर मुझे तो इजाज़त नहीं है। जार्ज को डर है कि मैं किसी बखेड़े में पड़ जाऊँगा।"

कर्ली की बीवी ने विषय बदल दिया। "वहाँ तुमने क्या छिपा रक्खा है?"

लैनी की सारी वेदना फिर लौट आयी। "मेरा पिल्ला है, और कुछ नहीं," उसने बड़े दुख के साथ कहा। "यही मेरा पिल्ला!" और उसने उसके ऊपर से पुआल हटा दी।

"अरे, यह तो मर गया है," कर्ली की बीवी ने ज़ोर से कहा।

"वह इत्ता ज़रा-सा था," लैनी बोला। "मैं बस उसके साथ खेल रहा था।....और उसने ऐसा मुँह बनाया कि जैसे मुझे काटेगा....और मैंने ज़रा सा उसे हाथ उठा कर डराया...और....और फिर मैंने ज़रा सा लगा दिया तमांचा। और बस वह मर गया।"

कर्ली की पत्नी ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "अरे तुम कुछ चिंता मत करो। बड़ा मामूली-सा पिल्ला था। तुम्हें आसानी से दूसरा मिल जायगा। मारे मारे फिरते हो इधर ऐसे पिल्ले।"

"दूसरे पिल्ले की बात नहीं", लैनी ने कष्ट से सारी बात समझाते हुए कहा। "अब जार्ज मुझे खरगोशों की देखभाल न करने देगा।"

"क्यों न करने देगा?"

"उसने कहा था कि यदि मैंने कोई भी बुरी बात की, तो वह मुझे ख़रगोशों की देखभाल न करने देगा।"

वह उसके और भी पास सरक आयी और बड़ी तसल्ली देते हुए बोली, "जहां तक मुझसे बात करने का सम्बंध है, तुम चिंता मत करो। उधर सुनो लोग कितना शोर मचा रहे हैं। चार डालर की बाज़ी लगा रखी है उन्हों ने। बिना खेल खत्म किये उनमें से कोई हिलने का नहीं।"

"यदि जार्ज नें मुझे तुमसे बात करते देख लिया तो वह बहुत बिगड़ेगा," लैनी ने सतर्कता से कहा। "उसने मुझसे कह रक्खा है।"

कर्ली की पत्नी झुँझला उठी। "मुझमें ऐसी क्या बुराई है?" वह चिल्लायी। "क्या मुझे किसी से भी बात करने का अधिकार

नहीं ! वे लोग समझते क्या हैं मुझे ? पर तुम अच्छे आदमी हो। मैं क्यों तुम से बात चीत नहीं कर सकती ? मैं तुम्हें कोई हानि तो नहीं पहुँचा रही हूँ।"

"पर जार्ज कहता है कि तुम हम लोगों को किसी मुसीबत में फँसा दोगी।"

"सब बकवास है !" वह बोली। "क्या हानि पहुँचा सकती हूँ मैं तुम्हें ? ऐसा लगता है कि उनमें से किसी को इसकी परवाह नहीं है कि मैं कैसे रहती हूँ। मैं तुमसे कहूँ, मुझे इस तरह रहने की आदत नहीं ! मैं भी कुछ बन सकती थी।" उसने उदासी के साथ कहा, "शायद मैं अब भी कुछ बन सकूं।" और वह जल्दी जल्दी कह चली। उसके शब्द, मन की सुनने वाले को पाकर, सब कुछ कह लेने की प्रबल उत्कंठा में, जैसे हृदय की गहराइयों से झरने सरीखे फूटकर बह चले। "मैं सैलीनास में रहती थी।" उसने कहा ! "बच्ची थी तभी वहां आयी थी। एक बार वहां एक थिएटर कंपनी आयी। मैं उसके एक ऐक्टर से मिली थी। उसने कहा था कि मैं चाहूँ तो कंपनी के साथ चल सकती हूँ। पर मेरी मां नहीं मानी। वह कहती थी कि मैं छोटी हूँ, केवल पन्द्रह बरस की। पर वह ऐक्टर कहता था कि इसमें कोई हरज नहीं। यदि मैं चली जाती तो मैं कहती हूँ—मैं इस तरह की वाहयात जिंदगी न बिताती। मैं भी कुछ बन जाती।"

लैनी ने पिल्ले को ऊपर से नीचे तक थपथपाया। "हम एक छोटी सी जगह खरीदने वाले हैं। वहां हम खरगोश पालेंगे, खरगोश," उसने समझाते हुए कहा।

उसने लैनी की बात नहीं सुनी। वह जल्दी जल्दी अपनी बात कहती गयी। मानो बीच में कोई बाधा पड़ने से पहले वह सब कह लेना चाहती हो। "फिर एक बार मेरी एक और आदमी में भेंट हुई। वह सिनेमा में था। उसके साथ मैं रिवर-साइड के नाच महल में गयी थी। उसने कहा था वह मुझे सिनेमा में भरती करा देगा। कहता था मैं तो बनी बनायी अभिनेत्री हूँ। हालीवुड पहुँचते ही वह मुझे इसके बारे में लिखने वाला था।" वह यह देखने के लिए रुकी कि लैनी पर इस बात का क्या प्रभाव पड़ता है। पड़ भी रहा है कि नहीं। "पर आज तक मुझे वह चिट्ठी नहीं मिली।" वह फिर कहने लगी, "मुझे विश्वास है कि मेरी मां ने उसे छिपा लिया होगा। पर मैं ऐसी जगह रहने को तैयार न थी, जहां से मैं कहीं जा न सकूं; अपने आप को कुछ बना न सकूँ; जहां पर लोग दूसरों की चिट्ठियां चुरा लें। मैंने मां से पूछा भी कि उसने चुरायी है चिट्ठी? पर उसने कहा कि 'नहीं!' लेकिन मुझे विश्वास नहीं आया। इसलिए मैंने कर्ली से ब्याह कर लिया। उससे भी मैं उसी रात को रिवर-साइड के नाच-महल में मिली थी।"

लैनी ने न कोई हुँकारा दिया न कुछ और बात कही।

"सुन रहे हो न?" कर्ली की बीवी ने पूछा।

"मैं? ज़रूर।"

"देखो ये बातें मैंने पहले कभी किसी से नहीं कहीं। शायद मुझे कहना चाहिए भी नहीं। मुझे कर्ली पसंद नहीं। वह आदमी भला नहीं है।" अपने दिल की बात कह देने के कारण वह लैनी के और समीप खिसक कर बिल्कुल उसकी बगल में बैठ गयी। "सिनेमा में चली जाती, बढ़िया कपड़े होते—वे सभी बढ़िया कपड़े जो वे सब

लोग पहनते हैं। और मैं बड़े-बड़े होटलों में रहा करती और लोग मेरी तस्वीरें खींचा करते। और जब फिल्म पहली बार दिखायी जाया करती तो मैं वहां जाती और रेडियो में बोला करती और मुझे एक कौड़ी भी खर्च न करनी पड़ती, क्योंकि मैं तो स्वयं सिनेमा में होती। और मैं वे बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहनती क्योंकि उस आदमी ने कहा था कि मैं तो बनी बनायी अभिनेत्री हूँ।" उसने दृष्टि उठा कर लैनी की ओर देखा और अपने हाथ और बांह से एक हलकी-सी पर भव्य मुद्रा बनायी, यह दिखाने के लिए कि वह स्वभाविक अभिनेत्री है। छोटी उँगली को बाहर निकाल, शेष को मोड़ कर उसने हाथ को आगे से अपनी ओर को बड़े ही सुन्दर ढंग से घुमाया। उसकी कलाई के पीछे पीछे उसका हाथ बहता सा चला आया।

लैनी ने गहरी साँस ली। फिर लोहे के तखते पर घोड़े की नाल के गिरने और उसके साथ ही खेलने वालों की 'वाह वा' का शोर उठा।

"किसी ने बाज़ी जीती है।" कर्ली की बीवी ने कहा।

बाहर सूरज डूब रहा था, क्योंकि रोशनी ऊपर खिसकती जा रही थी और धूप की फांकें दीवार के ऊपर चढ़ कर घोड़ों की नांदों और उनके सिरों पर पड़ने लगी थीं।

लैनी ने कहा, "यदि मैं इस पिल्ले को बाहर ले जाकर कहीं फेंक दूं तो शायद जार्ज को पता न चले। तब मैं बिना किसी झमेले के खरगोशों की देख भाल कर सकूँगा।"

कर्ली की पत्नी ने जल कर कहा, "तुम खरगोशों के सिवा कभी कुछ और नहीं सोचते?"

"हम एक छोटी-सी जगह खरीदने वाले हैं", लैनी ने बड़े धीरज के साथ उसे समझाते हुए कहा, "वहाँ हम एक घर बनायेंगे, एक बगीचा होगा और एक दूब का मैदान। वह दूब ख़रगोशों के लिए होगी। मैं एक बोरे में दूब भर लाया करूँगा और ख़रगोशों को खिलाया करूँगा।"

कर्ली की बीवी ने पूछा, "तुम ख़रगोशों के लिए इतने पागल क्यों हो?"

उत्तर ढूँढने के लिए लैनी को काफी देर सोचना पड़ा। सोच सोच कर उसने कारण ढूँढ निकाला। वह बड़ी सावधानी से उसके समीप खिसक आया, इतना कि वह लगभग उससे सट गया। "मुझे अच्छी चीजों को सहलाना, थपथपाना अच्छा लगता है। एक बार एक मेले में मैंने बड़े-बड़े बालों वाले खरगोश देखे थे। वे बड़े अच्छे थे। सच! कभी-कभी मैं चूहे को भी सहलाता हूँ, पर यदि कोई दूसरी अच्छी चीज न मिले तभी।"

कर्ली की बीवी उससे तनिक परे खिसक गयी। "मेरा ख्याल है तुम पागल हो।" उसने कहा।

"नहीं, मैं पागल नहीं हूँ", लैनी ने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया। "जार्ज कहता है मैं पागल नहीं हूँ। मुझे अपनी उँगलियों से अच्छी चीजें, नर्म चीजें सहलाना अच्छा लगता है। बस!"

कर्ली की पत्नी कुछ आश्वस्त हुई। "किसे अच्छा नहीं लगता?" उसने कहा। "हर आदमी को अच्छा लगता है। मुझे रेशम या मखमल पर हाथ फेरना अच्छा लगता है। तुम्हें मखमल पर हाथ फेरना लगता है अच्छा?"

लैनी प्रसन्नता से खिला उठा। "भगवान कसम बहुत अच्छा लगता है", वह खुशी से चिल्लाया, "मेरे पास थोड़ी-सी मखमल थी भी। एक महिला ने मुझे दी थी, और वह महिला थी......" तनिक सोच कर उसने कहा........"अरे वह मेरी अपनी क्लारा चाची थी! उसने मुझे मखमल का एक टुकड़ा दिया था। इतना बड़ा टुकड़ा। वह मखमल इस समय होती तो कितना अच्छा होता।" उसके माथे पर व्याथा के हलके से बल पड़ गये। "खो गयी वह", उसने कहा। "बहुत दिनों से मैंने मखमल के उस टुकड़े को नहीं देखा"

कर्ली की बीवी उसकी बात पर हँस पड़ी। "तुम निरे पागल हो! बड़े हो, पर बिल्कुल बच्चे हो!" उसने कहा। "पर तुम आदमी अच्छे हो। मैं समझती हूँ तुम्हारी बात। कभी-कभी अपने बाल सँवारने समय मैं ही बैठ कर अपने बालों पर हाथ फेरने लगती हूँ। बड़े सुकोमल लगते हैं।" अपने सिर पर हाथ फेर कर उसने दिखाया कि कैसे उन्हें सँवारते समय वह उनके स्पर्श से पुलकित हुआ करती है। "कुछ लोगों के बाल बड़े कड़े होते हैं," उसने लापरवाही से कहा। "कर्ली ही को ले लो। उसके बाल तार की तरह सख्त और रूखे हैं। पर मेरे सुकोमल और सुन्दर हैं। मैं उन पर ब्रश भी तो बहुत बार करती हूँ। इससे बाल नर्म हो जाते हैं। देखो जरा हाथ लगा कर।" उसने लैनी का हाथ उठाकर अपने सिर पर रख लिया। "यहां हाथ फेर कर देखो कितने सुकोमल हैं।"

लैनी की बड़ी बड़ी उँगलियाँ उसके बालों को सहलाने लगीं।

"खराब मत करो," कर्ली की बीवी ने कहा।

लैनी ने कहा, "वाह ! कैसे बढ़िया हैं," और वह जोर-जोर से उन्हें सहलाने लगा। "वाह ! कैसे बढ़िया हैं।"

"देखो, देखो ! मेरे घुंघर बिगड़ जायेंगे। अरे तुम तो मेरे घुंघर बिगाड़ रहे हो ! और तब वह गुस्से में चीखकर बोली, "छोड़ो इनको, सब गड़बड़ कर दोगे तुम !" उसने अपने सिर को झटका देकर एक ओर करना चाहा, पर लैनी की उँगलियाँ उसके बालों को गरिफ़्त में लेकर वहीं अटक गयीं।

"छोड़ो", वह चिल्लायी। "छोड़ो तुम !"

लैनी बेतरह घबरा गया। उसका चेहरा सिकुड़ गया। तब कर्ली की बीवी भय से चीख पड़ी। लैनी ने और भी घबरा कर दूसरा हाथ उसके मुँह पर रख दिया। "भगवान के लिए चिल्लाओ मत," वह गिड़-गिड़ाया। "भगवान के लिए ऐसा मत करो। जार्ज नाराज़ हो जायगा मुझ से।"

वह उसके हाथों में जकड़ी मुक्त होने के लिए छटपटाती रही। उसके पैर पुआल पर तड़फड़ाते रहे और वह दोनों हाथों से मुक्त होने की पूरी कोशिश करती रही। तभी लैनी के हाथ नीचे घुटी हुई चीख का स्वर आया। "भगवान के लिए मत चीख़ो !" लैनी भय से रो दिया। "जार्ज कहेगा मैंने बुरा काम किया और मुझ खरगोशों की देख भाल न करने देगा।"

उसने अपना हाथ ज़रा सा हटाया। और कर्ली की पत्नी के कंठ से भर्रायी सी चीख निकली। लैनी क्रोध से तन गया। "मैं कहता हूँ, मत चिल्लाओ !" वह गुसा कर बोला, "जार्ज कहता था तुम हमें मुसीबत में फँसा दोगी और वही तुम करने जा रही हो।

मैं नहीं चाहता तुम चिल्लाओ। बंद करो यह सब।" और उसने अपना हाथ वहां रख दिया। और कर्ली की बीवी छटपटाती रही। उसकी भयातुर आँखों में वहशत बरस रही थी। तभी लैनी ने उसे झँझोड़ा, और वह उससे नाराज हो गया। "चिल्लाना बंद करो तुम," उसने कहा और फिर एक बार उसे झकझोर दिया। और कर्ली की पत्नी मछली की तरह तड़पने लगी। फिर वह धीरे धीरे शांत पड़ गयी। लैनी ने अन-जाने में उसकी गरदन मरोड़ दी थी।

वह क्षण भर उसकी ओर देखता रहा। फिर सतर्कता से उसने अपना हाथ उसके मुँह पर से हटा लिया। वह निश्चल पड़ी थी। "मैं तुम्हें कष्ट न देना चाहता था," उसने कहा। "पर यदि तुम चिल्लायीं तो जार्ज बहुत नाराज होगा।" जब उसने कोई उत्तर न दिया और न हिली-डुली तो वह उसके ऊपर झुक गया। उसने उसकी बाँह उठाई और फिर छोड़ दी। क्षण भर के लिए वह परेशान और भौंचक सा उसे तकता रहा। फिर वह डर से बदबदाया। "मैंने बुरा काम कर डाला। मैंने एक और बुरा काम कर डाला।"

उसने अपने बड़े बड़े पंजों से बहुत-सी पुआल उसके ऊपर डाल दी। जिससे वह थोड़ी सी ढँक गयी।

बखारे के बाहर से कुछ लोगों के चिल्लाने और घोड़े की दो नालों के एक साथ लोहे पर गिरने की आवाजें आयीं। लैनी को जैसे पहली बार बाहर का ध्यान आया। वह पुआल में दुबक गया और ध्यान से सुनने लगा। "मैंने सचमुच बुरा काम कर डाला है," वह बदबदाया। "मुझे ऐसा न करना चाहिए था। जार्ज बहुत नाराज होगा।

और....उसने कहा था......'जब तक मैं आऊं, झाड़ी में छिपे रहना।' बहुत नाराज़ होगा वह। जब तक वह आये तब तक झाड़ी के भीतर छिपे रहना। यही तो कहा था उसने। लैनी ने वापस जाकर मरी हुई लड़की की ओर देखा। पिल्ला भी उसके पास ही पड़ा था। लैनी ने पिल्ले को उठा लिया। "इसे मैं फेंक दूँगा," उसने कहा। "यह बात ही कम बुरी नहीं है।" उसने पिल्ले को अपने कोट के नीचे छिपा लिया और वह चुपके से बखारे की दीवार के पास सरक गया और उस ने दरारों में से बाहर झाँका और तब चुपके चुपके रेंग कर वह अंतिम नांद तक गया और उसके पीछे गायब हो गया।

धूप की फाँके अब दीवार पर बहुत ऊँचे चढ़ गयी थीं, और बखारे में रोशनी बहुत मद्धिम पड़ती जा रही थी। कर्ली की बीवी पीठ के बल पड़ी थी और उसका लग भग आधा शरीर पीली पीली पुआल से ढँका हुआ था।

बखारे में एकदम शांति थी। दोपहर के बाद का मौन सारे के सारे बाड़े पर छाया हुआ था। जुए में मस्त लोगों की आवाज़ें और हो-हल्ला भी जैसे धीमा होता जा रहा था। बाहर दिन डूबने के पहले ही बखारे में गोधूलि का अँध्यारा छा गया था। खुले हुए पुआल के दरवाजे में से एक कबूतर बखारे में घुस आया और दो चार चक्कर काट कर फिर बाहर उड़ गया। घोड़ों के अंतिम थान के पास से एक दुबली-पतली, लम्बी गड़रिया कुतिया, अपने भारी भारी थनों को झुलाती आ गयी। जिस बक्से में पिल्ले रक्खे हुए थे उससे परे ही उसे कर्ली की पत्नी के मृत शरीर की गंध मिली और उसकी रीढ़ की हड्डी पर बाल खड़े हो गये। उसने दो तीन बार 'पें पें' की, दुम पेट के साथ

लगाती हुई वह बक्से की ओर को दुबकी और फिर एक ही बार कूद कर अपने पिल्लों में जा बैठी।

कर्ली की बीवी पुआल से आधी ढँकी हुई थी। उसकी चातुरी, ओछापन, असंतोष और अपनी ओर ध्यान खेंचने की बेचैनी सब उसकी आकृति को छोड़ गये थे। वह बड़ी सरल और सुन्दर लगती थी। उसकी मुखाकृति मधुर और युवा थी। अपने पौडर से पुते गालों और लाल लाल सुर्खी लगे ओठों के कारण वह जीवित और हलकी-सी नींद में सोयी हुई जान पड़ती थी। उसकी छोटी-छोटी घुँघराली लटें उसके सिर के पीछे घास पर बिखरी पड़ी थीं और उसके ओठ तनिक खुले हुए थे।

और जैसा कभी-कभी होता है, एक क्षण मानो वहां थम कर, क्षण भर से कहीं अधिक समय तक मंडराता रुका रहा। और क्षण भर से कहीं अधिक देर के लिए आवाजें थम गयीं और गति स्थिर हो गयी।

फिर धीरे-धीरे जैसे समय फिर जागा और अलसाया-सा धीरे-धीरे चल निकला। नांदों पर खड़े घोड़े पैर पटकने लगे और जंजीरें खनक उठीं। और बाहर खेलने वालों की आवाज़ें और भी ऊँची और साफ सुनायी देने लगीं।

अंतिम थान के सिरे से बूढ़े कैंडी की आवाज सुनायी दी। "लैनी," उसने फिर पुकारा! "अरे लैनी ` तुम कहां हो? मैंने और भी हिसाब लगाया है।" और मैं तुम्हें बताने आया हूँ कि हम क्या कर सकते हैं।" बूढ़ा कैंडी अंतिम थान के पास दिखायी पड़ने लगा। "अरे, लैनी!" उसने फिर पुकारा। और फिर वह सहसा रुक गया। उसका शरीर तन गया। उसने अपनी लुंजी चिकनी कलाई को अपनी

सफेद दाढ़ी पर रगड़ा। "मुझे मालूम न था कि तुम यहाँ हो", उसने कर्ली की बीवी से कहा।

जब उसे कुछ उत्तर न मिला तो वह और आगे बढ़ आया। "तुम्हें यहाँ न सोना चाहिए" उसने नापसंदगी के स्वर में कहा और फिर वह उसके बराबर आ गया और..."ओह! हे भगवान!" उसने बड़ी बेबसी के साथ चारों ओर देखा, और अपनी दाढ़ी को रगड़ने लगा। और फिर वह उछला और जल्दी-जल्दी बखारे के बाहर निकल गया।

पर अब तो बखारा सजीव हो उठा। घोड़े हिनहिनाने और पैर पटकने लगे, वे बैठने के हेतु धरती पर बिछायी गयी, अपने 'बिस्तर' की घास को चबाने और जंजीरों को खनखनाने लगे। कैंडी लौट आया। उसके साथ जार्ज भी था।

जार्ज ने कहा, "क्या चीज दिखाना चाहते थे तुम मुझे?"

कैंडी ने कर्ली की पत्नी की ओर संकेत किया। जार्ज क्षण भर तकता रहा। "क्या हुआ है इसे?" उसने पूछा। वह कुछ निकट बढ़ आया और तब जैसे उसके ओठों से कैंडी के शब्दों की प्रतिध्वनि हुई।

"ओह! हे भगवान!" वह कर्ली की पत्नी के बराबर झुक गया अपना हाथ उसने उसकी छाती पर रक्खा। अंत में जब वह धीरे धीरे, जैसे अकड़ा सा उठा तो उसके चेहरे पर लकड़ी की सख्ती और तनाव तथा उसकी आंखों में बेपनाह कठोरता थी।

कैंडी ने पूछा, "किसने यह किया?"

जार्ज ने सख्ती से उसकी ओर देखा। "तुम्हें कुछ मालूम नहीं?" उसने पूछा। कैंडी चुप रहा। "मैं जानता हूँ शायद", जार्ज ने बड़ी बेबसी से कहा। "शायद मेरे दिमाग में कहीं यह बात थी। जरूर थी।"

कैंडी बदबदाया, "अब हम क्या करें, जार्ज ! हम अब क्या करें ?"

जार्ज ने बड़ी देर में उत्तर दिया। "मेरा ख्याल है...हमें बताना पड़ेगा...उन लोगों को। उसे पकड़ कर हमें बंद करना होगा। हम उसे भागने नहीं दे सकते। वह तो भूखा मर जायगा हरामी ! और उसने आपको तसल्ली देने की कोशिश की। "शायद लोग उसे सिर्फ बंद ही करें, और उस पर दया करें।"

पर कैंडी ने उत्तेजित होकर कहा, "हम उसे भाग जाने दें तो अच्छा है। तुम उस कर्ली को नहीं जानते। कर्ली उसे मरवा डालना चाहेगा। वे अदालत में भी जाने की तकलीफ़ न करेंगे और उसे ढूंढ़ कर पागल कुत्ते की तरह पीट पीट कर उसे मार देंगे या उसके टस दिमाग़ को गोली से उड़ा देंगे।"

जार्ज कैंडी के ओठों की ओर देख रहा था। "हां", उसने आख़िर स्वीकार किया, "तुम ठीक कहते हो, कर्ली जरूर उसे मरवा डालेगा और दूसरे लोग भी।" और उसने घूम कर कर्ली की बीवी की ओर देखा।

अब कैंडी ने अपने मन की बात कही, जिसके सम्बंध में वह अधिक डर रहा था। "हम तुम दोनों मिल कर वह जमीन खरीद सकते हैं न जार्ज ? तुम और हम जाकर वहां रह सकते हैं। मजे से रह सकते हैं। रह सकते हैं न जार्ज ?"

जार्ज के उत्तर देने से पहले ही कैंडी ने अपना सिर लटका लिया और नीचे पुआल की ओर देखने लगा।

जार्ज ने धीरे धीरे कहा, "मैं शुरू ही से जानता था। शुरू ही से मेरे मन में आशंका थी। मुझे डर था हमारा स्वप्न कभी पूरा न होगा। हम कभी ज़मीन न ले पायेंगे। लैनी को इस सम्बंध में बात करना

इतना अच्छा लगता था कि मैं सोचने लगता— शायद हम उस स्वप्न को सत्य कर पायें।"

"तो फिर...क्या वह सब खतम हो गया?" कैंडी ने झुँझलाहट के साथ पूछा।

जार्ज ने उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। "मैं महीने भर काम करूँगा और पचास डालर मुझे मिलेंगे और मैं सारी रात किसी चुड़ैल के यहां पड़ा रहूँगा या किसी जुआ-घर में जाकर उस समय तक बैठा रहूँगा जब तक एक भी आदमी वहां रहेगा और वह सब बराबर कर दूंगा और फिर आकर महीने भर काम करूँगा और फिर मुझे पचास डालर मिलेंगे...।" उसने धीरे धीरे जैसे अपने आप से कहा।

"वह इतना अच्छा आदमी था। मेरे ख्याल में उसने यह काम नहीं किया होगा।" कैंडी बोला

जार्ज अब भी कर्ली की पत्नी की ओर एकटक देख रहा था। "लैनी ने कभी यह जानबूझ कर न किया होगा", उसने कहा। "लगातार वह बुरे काम करता रहा है, पर कभी जाने में या अपने स्वार्थ के लिए नहीं।" वह सीधा खड़ा हो गया और कैंडी की ओर देखने लगा "अच्छा एक बात सुनो। हमें लोगों को बता देना चाहिए। शायद वे उसे पकड़ लायें। ऐसे तो वह हरामी भूखा मर जायगा। दूसरा कोई चारा नहीं। हो सकता है वे उसे कष्ट न दें, उसे न मारें।" उसने तेज़ी से कहा, "मैं उन्हें लैनी को मारने न दूंगा। अब तुम सुनो। लोग सोच सकते हैं कि मैं भी इसमें शामिल था। मैं उधर दालान में जा रहा हूँ। एक मिनट बाद तुम बाहर आकर सब लोगों को बता देना और फिर मैं भी चला आऊँगा, जैसे मैंने पहले कुछ देखा ही न हो।

कहो इतना कर दोगे न ? इस तरह कि लोग यह न सोचें कि मेरा भी हाथ था इसमें ?"

कैंडी ने कहा, "हां हां जार्ज मैं ऐसा ही करूँगा।"

"तब ठीक है। मुझे केवल दो मिनिट का समय दो, और फिर तुम दौड़ते हुए बाहर आना और लोगों को बता देना, जैसे तुम्हें अभी अभी पता चला हो। मैं अब जा रहा हूँ।" जार्ज मुड़ कर तेज़ी से बाहर चला गया।

बूढ़ा कैंडी उसे जाते हुए देखता रहा। उसने मुड़कर एक बड़ी दीन, लाचार निगाह कर्ली कि बीवी पर डाली और धीरे धीरे उसका दुख और क्रोध शब्दों में फूट पड़ा। "आवारा कहीं की," उसने बड़े क्षोभ के साथ कहा। "तुम्हीं ने यह सब किया है तेरा ही सब दोष है। शायद तू अब खुश है। सभी जानते थे कि तू जरूर बखेड़ा खड़ा करेगी। तू किसी काम की न थी। अब भी तू किसी काम की नहीं। लुच्ची छिनाल कहीं की।" वह रुआंसा हो गया और उसकी आवाज़ कांपने लगी। "मैं बाग में मिट्टी गोड़ा करता और उन लोगों के बरतन धो दिया करता," वह रुका और फिर जैसे एक सांस में कहता गया और उसने वे सब पुराने शब्द दोहराये, "यदि कभी कोई सरकस या कोई और खेल आता.....हम लोग वहां जाया करते......बस कहते, काम आज जहन्नुम में जाय और चले जाया करते किसी से इजाज़त मांगने की जरूरत न पड़ती। और हमारे पास सुअर होते, मुर्गी के बच्चे होते...और जाड़ों में...छोटा सा चूल्हा...और पानी बरसता...हम वहां बैठे-बैठे आग तापा करते।" उसकी आंखें आँसुओं से भर गयीं और वह मुड़ कर लड़खड़ाता-सा बखारे के बाहर

चला गया, और उसने अपने ठूँठे हाथ से अपनी दाढ़ी को रगड़ा।

बाहर सहसा खेल का शोर रुक गया। एक साथ प्रश्न पूछते कंठों के ऊँचे स्वर और दौड़ते हुए पैरों की आहट सुनायी पड़ी और सब आदमी बखारे में घुस पड़े—स्लिम और कार्लसन, और युवक ह्विट और कर्ली। क्रुक्स पीछे-पीछे आ रहा था कि उस पर किसी का ध्यान न जाए। कैंडी उसके बाद आरहा था, और सब से पीछे आया जार्ज। उसने अपना नीला कोट पहन रखा था, उसके बटन सब लगे हुए थे और उसके काले टोप का अगला भाग उसकी आँखों तक झुका हुआ था। लोग अन्तिम नांद के पास से दौड़ते हुए आये। धुँधलके में उनकी आँखों ने कर्ली की बीवी को पहचान लिया। वे रुक गये और निश्चल खड़े होकर देखते रह गये।

फिर स्लिम चुप चाप आगे बढ़ा। उसने झुक कर उसकी कलाई हाथ में लेकर उसकी नाड़ी देखी। अपनी पतली सी उँगली से उसके गाल को छुआ। उसका हाथ लड़की की थोड़ी सी मुड़ी हुई गरदन के नीचे गया और वहां कुछ टटोलने लगा। जब वह उठा तो लोग उसके निकट घिर आये और फिर जैसे जादू टूट गया।

एकाएक कर्ली जैसे जीवित हो उठा। "मैं जानता हूँ किसने किया है," उसने चीख कर कहा। "उसी बड़े सूअर के बच्चे ने किया है यह सब! मैं जानता हूँ उसी ने किया है। अरे सभी लोग तो वहां खेल रहे थे।" वह क्रोधसे पागल हो उठा। "मैं अभी उसे पकड़ता हूँ। अपनी बन्दूक उठा लाऊँ। उस हरामी पिल्ले को मैं अपने हाथ से गोली मारूँगा। उसके पेट में मारूँगा गोली। आओ, तुम सब!" वह बौखलाया-सा बखारे के बाहर भागा। कार्लसन ने कहा, "मैं भी

अपनी बन्दूक ले आऊँ," और वह भी उसके पीछे पीछे भाग गया।

स्लिम मौन रूप से जार्ज की ओर मुड़ा। "मेरे ख्याल में यह लेनी ही ने किया है!" उसने कहा।

"इसकी गर्दन टूट गयी है। लैनी ही यह कर सकता है।" वह फ र बोला —

जार्ज ने कोई उत्तर न दिया, बस सिर हिलाया। उसका टोप उसके माथे पर इतना नीचे खिसका हुआ था कि उसकी आँखों में क्या है, यह जानना कठिन था।

स्लिम कह रहा था, "शायद वैसे ही, जैसे एक बार तुम वीड की बात सुना रहे थे।"

जार्ज ने फिर सिर हिलाया।

स्लिम ने ठंडी साँस भरी। "मेरे ख्याल में उसे पकड़ना होगा तुम्हारा क्या विचार है कहाँ गया होगा वह!"

लगा कि जार्ज को उत्तर देने में कुछ देर लगी। "वह—शायद दक्खिन की ओर गया होगा!" उसने कहा, "हम लोग उत्तर से आये हैं, सो वह दक्खिन ही को गया होगा।

"मेरे ख्याल में उसे पकड़ना ही पड़ेगा।" स्लिम ने दोहराया।

जार्ज एक कदम आगे बढ़ आया। "क्या यह नहीं हो सकता कि हम लोग उसे लाकर बंद कर दें? वह पागल है, स्लिम। उसने जान बूझ कर यह सब न किया होगा।"

स्लिम ने हामी भरी। "शायद यह हो सके," उसने कहा। "यदि हम कर्ली को काबू में रख सकें, तो यह हो सकता है। पर कर्ली तो उसे गोली मारना चाहता है। कर्ली को अपने हाथ के टूटने

का क्रोध है। बदला लेना चाहेगा वह और मान लो वे उसे पकड़ें। हाथ पैर बांध कर पीटें और सीख़चों में बन्द कर दें। इससे भी तो कोई लाभ नहीं जार्ज।"

"जानता हूँ जार्ज, जानता हूँ।"

कार्लसन दौड़ता हुआ आया। "हरामी मेरी बन्दूक चुरा ले गया है," वह चिल्लाया। "मेरे थैले में नहीं है।" कर्ली उसके पीछे-पीछे ही आ रहा था। उसका पलस्तर वाला हाथ गले के रूमाल से बँधा था और अच्छे हाथ में बन्दूक थी। उसका जोश खत्म हो गया था। और उसकी जगह एक गम्भीर निश्चय ने ले ली थी।

"अच्छी बात है," उसने कहा। "नीग्रो के पास एक बन्दूक है। उसे तुम ले लो कार्लसन। यदि दिखायी पड़ जाय तुम्हें तो उसे भागने का अवसर मत देना। सीधे सीने में गोली मारना।"

ह्विट ने बड़ी उत्तेजना के साथ कहा, "मेरे पास नहीं है कोई बन्दूक।"

कर्ली ने कहा, "तुम सोलेदाद में जाकर एक पुलिस वाले को बुला लाओ। 'एल विल्ज़' को ले आना। वह डिप्टी कोतवाल है। चलो अब चलें।" वह संदेह पूर्वक जार्ज की ओर मुड़ा। "तुम भी चलो, हमारे साथ।"

"हां हां।" जार्ज ने कहा। "मैं चल रहा हूँ। पर सुनो, कर्ली। वह बेचारा बिल्कुल पागल है। उसे गोली मत मारना। उसको कभी मालूम भी न होगा कि वह क्या कर रहा है।"

"गोली न मारें?" कर्ली चिल्लाया। "उसके पास कार्लसन की बंदूक है। हम जरूर मारेंगे गोली।"

जार्ज ने दबी जवान से कहा, "कार्लसन की बंदूक शायद खो गयी हो।"

"मैंने आज सवेरे ही तो देखी थी," कार्लसन ने कहा।

"कर्ली तुम्हें अपनी पत्नी के पास ठहरना चाहिये।" स्लिम बोला।

कर्ली का चेहरा लाल होगया। "मैं ज़रूर जाऊँगा।" वह चिल्लाया। "मैं अपने हाथ से उस हरामी का काम तमाम करूँगा। चाहे मेरा एक ही हाथ ठीक है तो भी मैं जरूर पकड़ूंगा उसे।

स्लिम कैंडी की ओर मुड़ा। "तो फिर तुम यहां इसके पास ठहरो कैंडी। शेष सबको अब चलना चाहिए।"

वे चल दिए। जार्ज क्षण भर कैंडी के पास रुका और वे दोनों मरी हुई लड़की की ओर देखने लगे। तभी कर्ली ने चिल्ला कर कहा तुम हमारे साथ ही रहो जार्ज जिससे हमें यकीन रहे कि तुम्हारा इसमें कोई हाथ नहीं।"

जार्ज धीरे-धीरे जैसे घिसटता सा उनके पीछे चल दिया।

उन लोगों के चले जाने के बाद कैंडी पुआल पर बैठ गया और कर्ली की पत्नी के मुख की ओर तकने लगा। "बेचारा अभागा।" उसने धीमे से कहा।

लोगों की पद-चाप हल्की पड़ती जा रही थी! वखारे में धीरे धीरे अँधेरा घिर रहा था और घोड़े अपने अपने चौखटों में पैर पटक रहे थे और जंजीरें खनका रहे थे। बूढ़ा कैंडी पुआल में लेट गया और उसने अपनी आँखे बांहसे ढँक लीं।

छः

सैलीनास नदी के गहरे हरे पोखरे पर सांझ की खामोशी छायी हुई थी। सूरज अभी से घाटी को तज चुका था। उसकी धूप गैबीलन पहाड़ों की ढालों पर चढ़ी जा रही थी। केवल पहाड़ों के शिखर सूरज के प्रकाश से जगमगा रहे थे। टेढ़े-मेढ़े अंजीर के पेड़ों के बीच नदी के पानी पर एक सुहावनी छाया घिर आयी थी।

एक पनियल सांप पानी पर फिसलता चला आया; उसका फन इधर से उधर डोलता आ रहा था। वह पोखर को पूरा पार करके उथले पानी के बीच एक निश्चल खड़े बगुला भगत के पैरों के पास आ पहुंचा। एक निश्चल सिर और चोंच नेज़े सी नीचे झपटी और दूसरे क्षण सांप का सिर बगुले की चोंच में था और दुम बाहर बेतरह छटपटा रही थी।

दूर पर कहीं से हवा के झोंके की ध्वनि आयी और पेड़ों की फुनगियों में एक लहर-सी दौड़ गयी। अंजीर के पेड़ों की पत्तियों की चमकीली पीठ ऊपर आ गयी। धरती पर पड़ी सूखी भूरी पत्तियां कुछ दूर खिसक गयीं। और पानी की सतह पर हवा से एक के बाद एक लहर बह चली।

जितनी तेजी से हवा आयी थी उतनी ही तेजी से चली गयी और फिर खामोशी छा गयी। बगुला अब भी उथले पानी में वैसा ही निश्चल खड़ा था। एक और छोटा सा पनियल सांप अपने फन को इधर उधर डोलाता आया।

एकाएक लैनी झाड़ी में से निकला। वह इतनी खामोशी से निकला जैसे रेंगता हुआ भालू। बगुले ने अपने पंख हवा में फटफटाये, पानी में से निकला और उड़ गया। छोटा सा सांप फिसल कर किनारे के सरकंडों के बीच जा छिपा।

लैनी चुपचाप नदी के किनारे आ पहुँचा। उसने झुक कर पानी पिया; उसके ओठ पानी को छू भर रहे थे। तभी उसके पीछे सूखी पत्तियों पर एक छोटी सी चिड़िया सरसराई। लैनी चौंका। झटके से उसने सिर उठाया और अपनी आँखों और कानों को आवाज पर लगा दिया। तभी उसने चिड़िया देखी और फिर इतमीनान से सिर डाल कर पानी पीने लगा।

पानी पीना खत्म करके वह किनारे पर पानी की ओर बगल करके बैठ गया ताकि पीछा करने वाले का आना देख सके। उसने दोनों बाहों से घुटनों को घेर लिया और अपनी ठोड़ी घुटनों पर टिका दी।

रोशनी घाटी के ऊपर चढ़ती हुई बाहर चली गयी। उसके जाने

के साथ साथ पहाड़ों की चोटियां डूबते सूरज की चमक से अधिकाधिक सुलगती सी जान पड़ने लगीं।

लैनी ने धीमे से कहा, "भगवान कसम मैं भूला नहीं झाड़ी में छिपकर जार्ज की प्रतीक्षा करना।" उसने अपने टोप को अपनी आंखों तक खिसका लिया। "जार्ज बहुत बिगड़ेगा मुझ पर", उसने कहा। "जार्ज कहेगा कि 'इससे तो मैं अकेला होता तो अच्छा होता।' उसने सिर घुमा कर पहाड़ों की चमकीली चोटियों की तरफ देखा। "मैं बस वहां चला जाऊँगा और एक गुफा ढूँढ़ लूँगा", उसने बड़े उदास स्वर में जैसे अपने आप से कहा। "और कभी टमाटर की चटनी नहीं खाऊँगा— पर मुझे इसकी परवाह नहीं! जार्ज मुझे नहीं चाहता......तो मैं चला जाऊँगा। मैं चला जाऊँगा।"

और फिर लैनी के सिर में से एक मोटी सी बुढ़िया निकल कर खड़ी हो गयी। वह मोटे-मोटे शीशों का चश्मा पहने हुए थी और उसके बदन पर एक बड़ा जेबोंदार लबादा था। उसके कपड़े साफ और अच्छी तरह धुले हुए थे। वह लैनी के सामने खड़ी हो गयी और उसने अपने दोनों हाथ कमर पर रख कर क्रोध से तेवर चढ़ा कर लैनी की ओर देखा।

और जब वह बोली तो वह लैनी की ही आवाज थी। "मैंने तुमसे बार बार कहा, बार-बार कहा," उसने कहा। "मैंने तुमसे कहा था कि जार्ज की बात माना करो, क्योंकि वह कितना भला है और तुम्हारा कितना ख्याल रखता है। पर तुम कुछ ध्यान ही नहीं देते। तुम बुरे काम करते हो।"

और लैनी ने उसे उत्तर दिया, "मैंने कोशिश की, क्लारा चाची! मैंने बड़ी कोशिश की। पर मैं क्या करूँ मुझसे हो जाते हैं।"

"तुमने कभी जार्ज की बात पर ध्यान नहीं दिया, वह लैनी क आवाज में कहती रही। "वह तुम्हारे साथ निरन्तर भलाई करता आ रहा है। उसे एक टुकड़ा रोटी का मिला तो उसने सदा आधा, बल्कि आधे से भी ज़्यादा, तुम्हें दिया। और यदि चटनी मिली तो उसने सब की सब तुम्हें दे दी।"

"मैं जानता हूँ," लैनी ने बड़े कष्ट से कहा। "मैंने बड़ी कोशिश की, क्लारा चाची। मैंने बड़ी-बड़ी कोशिशें कीं।"

वह बीच ही में बोली, "तुम न होते तो वह ऐसे मज़े में जिन्दगी बिताता। वह अपनी सारी पगार लेकर चकले में खूब ऐश मनाता। किसी जुआघर में बैठ कर मौज से खेलता। पर उसे तो तुम्हारी चिंता रहती थी।

लैनी दुख से कराह उठा। "मैं जानता हूँ, क्लारा चाची। मैं बस तत्काल पहाड़ों में चला जाऊँगा और एक गुफा ढूँढ़ लूंगा और उसी में रहूँगा और जार्ज को तंग न करूँगा।"

"तुम बस यह कहते ही कहते हो," चाची ने तेजी से कहा। "तुम सदा यही कहते हो। कुत्ते के पिल्ले, तुम यह अच्छी तरह जानते हो कि तुम यह कभी नहीं करोगे। और सदा जार्ज के पीछे पड़े उसकी छाती पर मूंग दलते रहोगे।"

लैनी ने कहा, "इससे तो मैं अभी चला जाऊँ तो अच्छा है। जार्ज अब मुझे कभी खरगोशों की देख भाल न करने देगा।"

क्लारा चाची गायब हो गयी, और लैनी के सिर में एक दानवाकार खरगोश निकल आया। वह उसके सामने अपने पिछले पैरों के बल बैठ गया। वह लैनी के ऊपर अपनी नाक चढ़ाने और कान

हिलाने लगा जब वह बोला तो उसकी आवाज भी लैनी ही की थी।

"खरगोशों की देख भाल", उसने बड़ी उपेक्षा के साथ कहा। "पागल के बच्चे तुम किसी खरगोश के पैरों की धूल छूने के लायक भी नहीं। तुम उन्हें खाना खिलाना भूल जाओगे और भूखा मार दोगे बस यही करोगे तुम। फिर जार्ज क्या सोचेगा?"

"मैं नहीं भूलूँगा।" लैनी ने जोर से कहा।

"नहीं भूलोगे अपना सिर," खरगोश ने कहा। "तुम एक दम निकम्मे हो। भगवान जानता है कि जार्ज ने तुम्हें घूरे से उठाकर कुछ न कुछ बना देने के लिए, क्या क्या नहीं किया। लेकिन कुछ लाभ न हुआ। यदि तुम सोचते हो कि जार्ज तुम्हें खरगोशों की देख भाल करने देगा, तो तुम और भी पागल हो। वह नहीं करने देगा तुम्हें खरगोशों की देख भाल। वह छड़ी से मार मार कर खाल उधेड़ देगा तुम्हारी। समझे कि नहीं?"

अब लैनी ने बड़े विद्रोही भाव से उत्तर दिया। "जार्ज यह कभी नहीं कर सकता। जार्ज कभी ऐसी बात नहीं कर सकता। मैं जार्ज को तब से जानता हूँ...यह भूल गया कब से...और उसने आज तक मेरे ऊपर एक उँगली भी नहीं उठायी। वह हमेशा मेरे साथ अच्छा बर्ताव सकता है। वह कभी यह कमीनी हरकत नहीं कर सकता।"

"अब वह तुमसे तंग आ गया है", खरगोश ने कहा। "वह अब मार मार कर तुम्हारी अकल दुरुस्त करेगा और फिर तुम्हें छोड़ कर चला जायगा।"

"नहीं करेगा वह", लैनी अनायास चिल्लाया। "वह ऐसा कोई काम नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ जार्ज को। मैं और वह हमेशा,

हर जगह साथ साथ जाते हैं।"

पर खरगोश बराबर इसी बात को धीमे धीमे दोहराता रहा। "वह तुम्हें छोड़ कर चला जायगा, पागल हरामी कहीं के। वह तुम्हें अकेला छोड़ जायगा। वह तुम्हें छोड़ कर चला जायगा, पागल हरामी कहीं के!"

लैनी ने अपने कानों पर हाथ रख लिये। "नहीं जायगा वह, मैं कहता हूँ नहीं जायगा।" और वह चीखने लगा, "ओह! जार्ज.... जार्ज.....जार्ज!"

जार्ज चुपचाप झाड़ी से निकल आया और खरगोश तत्काल लैनी के दिमाग में घुस गया!

जार्ज ने धीमे से कहा, "इतना हल्ला क्यों मचा रहे हो?"

लैनी अपने घुटनों के बल खड़ा हो गया। "तुम मुझे छोड़ कर तो नहीं जाओगे? नहीं जाओगे न जार्ज? मैं जानता हूँ कि नहीं जाओगे।"

जार्ज चुपचाप आकर तना हुआ सा उसके पास बैठ गया। उसने उसी प्रकार कहा, "नहीं।"

"मैं जानता था", लैनी ने कहा। "तुम नहीं हो ऐसे आदमी।"

जार्ज चुप।

लैनी ने कहा, "जार्ज!"

"हां?"

"मैंने एक और बुरा काम कर डाला है।"

"इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता।" जार्ज ने कहा और वह फिर चुप हो गया।

अब पहाड़ों के केवल सबसे ऊँचे शिखर ही धूप में थे। घाटी में धुँधियाली नीली पड़ती जा रही थी। दूर से लोगों के आपस में चिल्लाकर कर बातें करने की आवाज़ आयी। जार्ज सिर घुमा कर उन्हें सुनने लगा।

लैनी ने कहा, "जार्ज।"

"हां?"

"तुम मुझ पर बहुत बिगड़ने वाले हो न?"

"तुम पर बिगड़ने वाला हूँ?"

"हाँ, जरूर, जैसे तुम हमेशा बिगड़ते आये हो। जैसे तुम खीज कर कहा करते हो यदि तुम न होते तो मैं अपने पचास डालर लेकर..."

"हे भगवान! लैनी, तुम्हें और कुछ भी याद नहीं रहता; पर मेरा कहा हुआ एक एक अक्षर तुम्हें याद रहता है।"

"पर क्या तुम वह सब नहीं कहोगे?"

जार्ज ने अपने को झकझोरा। उसने काठ की सी निर्जीवता से कहा, "यदि मैं अकेला होता तो मैं बड़ी मौज से रहता।" उसका स्वर एकदम एकसा था। कहीं चढ़ाव था न उतार। उसने किसी बात पर ज़ोर न दिया। बस साधारण स्वर से कहता गया, "मैं एक नौकरी ढूँढ़ लेता और कोई झमेला न होता।" वह रुक गया।

"कहे जाओ", लैनी ने कहा, "और जब महीना खतम होता..."

"और जब महीना खतम होता तो मैं अपने पचास डालर लेकर जेब में डालता...और किसी रंडी के घर में...।" वह फिर रुक गया।

लैनी ने बड़ी व्यग्रता से उसकी ओर देखा। "कहे जाओ, जार्ज! क्या अब तुम मुझ पर नहीं बिगड़ोगे?"

"नहीं", जार्ज ने कहा ।

"अच्छी बात है, तो फिर मैं चला जाऊँगा।" लैनी ने कहा। "यदि तुम्हें मेरी जरूरत नहीं, तो मैं सीधा पहाड़ों पर चला जाऊँगा और एक गुफा ढूँढ़ लूँगा।"

जार्ज ने फिर अपने आपको झकझोरा। "नहीं", उसने कहा। "मैं चाहता हूँ कि तुम यहीं रहो मेरे साथ।"

लैनी ने चालाकी से कहा "मुझसे वैसे ही कहो जैसे पहले कहते थे।"

"क्या कहूँ ?"

"दूसरे लोगों के बारे में और अपने बारे में।"

जार्ज ने कहा, "धरती विहीन मजदूरों का घर बार नहीं होता वे लोग जरा कुछ कमाते हैं और उसे फूँक देते हैं। उनका दुनिया में कोई नहीं होता जो उनके लिए जरा सी भी चिन्ता करे....."

पर हम ऐसे नहीं हैं", लैनी खुशी से चीख पड़ा। "अब हम लोगों के बारे में बतलाओ।"

जार्ज क्षण भर के लिए चुप रह गया। "पर हम ऐसे नहीं हैं", उसने कहा।

"क्योंकि.."

"क्योंकि मेरी देख भाल के लिए तुम हो और—"

"और मेरी देख भाल के लिए तुम! हम एक दूसरे की देख भाल करने को हैं। यही कारण है कि हम अकेले नहीं हैं।" लैनी ने विजय के से भाव से कहा।

साँझ की हलकी सी बयार बह निकली और पत्तियां खड़खड़ायीं

और हरे पानी पर गोल गोल लहरियां बन बन कर फैलने लगीं और कुछ लोगों के चिल्लाने की आवाजें फिर सुनायी दीं। इस बार वे पहले से बहुत पास थीं।

जार्ज ने अपना टोप उतार दिया। उसने कुछ बेचैनी से कहा, "अपना टोप उतार लो, लैनी। हवा कितनी अच्छी है।"

लैनी ने बड़ी आज्ञाकारिता के साथ अपना टोप उतार कर सामने ज़मीन पर रख लिया। घाटी में छाया और भी अधिक नीली पड़ चली थी और साँझ तेज़ी से घिर रही थी। हवा के साथ ही जैसे दूर झाड़ी में किसी के भारी क़दमों से शाखाओं के टूटने की आवाज़ आयी।

लैनी ने कहा, "बताओ कि हमारे इकट्ठे रहने से क्या होगा।"

जार्ज दूर की आवाज़ों को सुन रहा था। पल भर के लिए वह एक दम कारोबारी सा हो गया। "नदी के पार देखो, लैनी। मैं तुम्हें इस तरह सारी बात सुनाऊँगा कि तुम्हारी आँखों के सामने हमारे अगले जीवन का सारा चित्र खिंच आयेगा।"

लैनी सिर घुमा कर नदी के पार गैबीलिन पहाड़ों पर घिरते अँधियारे की ओर देखने लगा। "हम लोग थोड़ी सी ज़मीन ख़रीदेंगे," जार्ज ने कहना शुरू किया। उसने अपनी जेब में हाथ डाल कर कार्लसन वाली पिस्तौल निकाल ली। उसने पिस्तौल के घोड़े की रोक को अलग कर दिया। उसका हाथ और पिस्तौल लैनी के पीठ पीछे ज़मीन पर पड़े थे। उसने लैनी के सिर के पीछे वाले हिस्से को देखा ठीक उस जगह जहाँ रीढ़ की हड्डी और खोपड़ी जुड़ती है।

ऊपर नदी की ओर किसी ने किसी को पुकारा और फिर किसी ने चिल्ला कर उत्तर दिया।

"अब कहे जाओ," लैनी ने कहा।

जार्ज ने पिस्तौल उठायी। पर उसका हाथ काँप गया और उसने फिर अपना हाथ ज़मीन पर रख दिया।

"कहे जाओ न," लैनी ने कहा। "कैसे होगा वह सब। हम लोग ज़मीन खरीदेंगे।"

"हमारे पास एक गाय होगी," जार्ज ने कहा। "और शायद हमारे पास सूअर और मुर्ग़ियाँ भी हों.....और मैदान में एक जगह....दूब के लिए—।"

"ख़रगोशों लिए," लैनी चिल्ला पड़ा।

"ख़रगोशों के लिए," जार्ज ने दोहराया।

"और मैं खरगोशों की देख भाल किया करूँगा।"

"और तुम खरगोशों की देख भाल किया करोगे।"

लैनी प्रसन्नता से अनायास हँस उठा, "और वहाँ मौज से रहेंगे।"

"हाँ।"

लैनी ने अपना सिर घुमाया।

"नहीं लैनी। तुम नदी के उस पार देखते रहो जैसे वह जगह तुम्हें सामने ही दीख रही हो।"

लैनी ने उसकी आज्ञा का पालन किया। जार्ज ने फिर नीचे पड़ी पिस्तौल की ओर देखा।

अब झाड़ियों में से जल्दी-जल्दी आते हुए क़दमों की आहट आ रही थी। जार्ज ने सिर घुमा कर उसी ओर देखा।

"कहे जाओ, जार्ज। कब करेंगे यह सब हम लोग?"

"बहुत जल्दी ही करेंगे।"

"मैं और तुम।"

"तुम......और मैं। सब लोग तुमसे अच्छा वर्ताव करेंगे। अब और कोई कष्ट न होगा। कोई किसी को कष्ट न देगा और न किसी के डर से कोई छिपा छिपा फिरेगा।"

लैनी बोला, "मैं सोचता था कि तुम मुझसे बहुत नाराज़ हो, जार्ज।"

"नहीं," जार्ज ने कहा। "नहीं लैनी, मैं नाराज़ नहीं हूँ। मैं तुम से कभी नाराज़ नहीं हुआ और न अब हूँ। इस बात को तुम अच्छी तरह जान लो।"

आवाज़ें अब अत्यन्त निकट आ गयी थीं। जार्ज ने पिस्तौल उठायी और आवाजों को सुनने लगा।

लैनी ने प्रार्थना की "चलो हम अभी यह सब कर डालें। वह ज़मीन ले डालें!"

"ज़रूर, अभी-अभी। जाना ही पड़ेगा, मुझे...हमें"

और जार्ज ने पिस्तौल उठा कर दृढ़ता से हाथ में पकड़ा। उसकी नली को लैनी के सिर के बहुत समीप ले आया। उसका हाथ एक बार फिर बड़े ज़ोर से काँपा, पर उसका चेहरा दृढ़ था और हाथ भी धीरे-धीरे स्थिर हो गया। और उसने घोड़ा दबा दिया। और गोली की आवाज़ मानो पहाड़ियों के ऊपर लुढ़कती हुई चढ़ गयी और फिर लुढ़कती हुई ही नीचे चली आयी। लैनी एक बार चीख़ा और फिर वह आगे बालू पर लुढ़क रहा, और बिना हिले-डुले वहाँ ढेर हो गया।

जार्ज कांप उठा। उसने पिस्तौल की ओर देखा, फिर उसने

उसे किनारे से दूर पुरानी राख के ढेर के पास फेंक दिया।

कुछ क्षण के लिए झाड़ियाँ बे पनाह चिल्लाहट और दौड़ते हुए पैरों की आवाज़ों से भर गयीं। तब स्लिम ने चिल्ला कर कहा, "जार्ज कहाँ हो तुम, जार्ज !"

पर जार्ज मिट्टी के बुत की भांति निश्चल बैठा रहा और अपने दायें हाथ को देखता रहा जिससे उसने पिस्तौल दूर फेंकी थी। उसके साथी वहाँ आ गये। कर्ली सबसे आगे था। उसने लैनी को बालू पर पड़े देखा। "कर दिया खतम, वाह!" उसने आगे बढ़ कर नीचे पड़े हुए लैनी की ओर देखा और तब जार्ज की ओर। "ठीक खोपड़ी के पीछे," उसने धीमे से कहा।

स्लिम सीधा जार्ज के पास आया और उसकी बगल में बैठ गया। "कुछ सोच मत करो", उस ने कहा। "कभी कभी इंसान को यह भी करना पड़ जाता है।"

पर कार्लसन जार्ज के सिर पर आ सवार हुआ। "कैसे किया तुमने ?" उसने पूछा।

"बस कर डाला", जार्ज ने थकी हुई आवाज़ में कहा।

"उसके पास मेरी पिस्तौल थी न ?"

"हां"

"और तुमने वह उससे छीन ली, और उसी से उसे चित्त कर दिया ?"

"हां।" जार्ज की आवाज बहुत ही धीमी थी। वह अपने दायें हाथ की ओर निर्निमेष तक रहा था, जिससे उसने पिस्तौल का घोड़ा दबाया था।

स्लिम ने जार्ज की कोहनी में चुटकी भरी। "चलो उठो जार्ज! आओ चलो, हम तुम चल कर कुछ पियें"

जार्ज ने उठने में स्लिम की सहायता को अस्वीकार नहीं किया। "हां कुछ पियें।" उसने जैसे किसी दूसरी दुनिया से बोलते हुए कहा।

स्लिम बोला, "तुम्हें यह सब करना था। भगवान कसम, कोई चारा न था तुम्हारे लिए। आओ चलो मेरे साथ" वह हाथ पकड़ कर जार्ज को रास्ते की ओर ले चला।

कर्ली और कार्लसन उन्हें जाते देखते रहे। तब कार्लसन ने कहा, "उन दोनो का साली क्या बात खाये जा रही है। और वह निरर्थक हँस दिया।